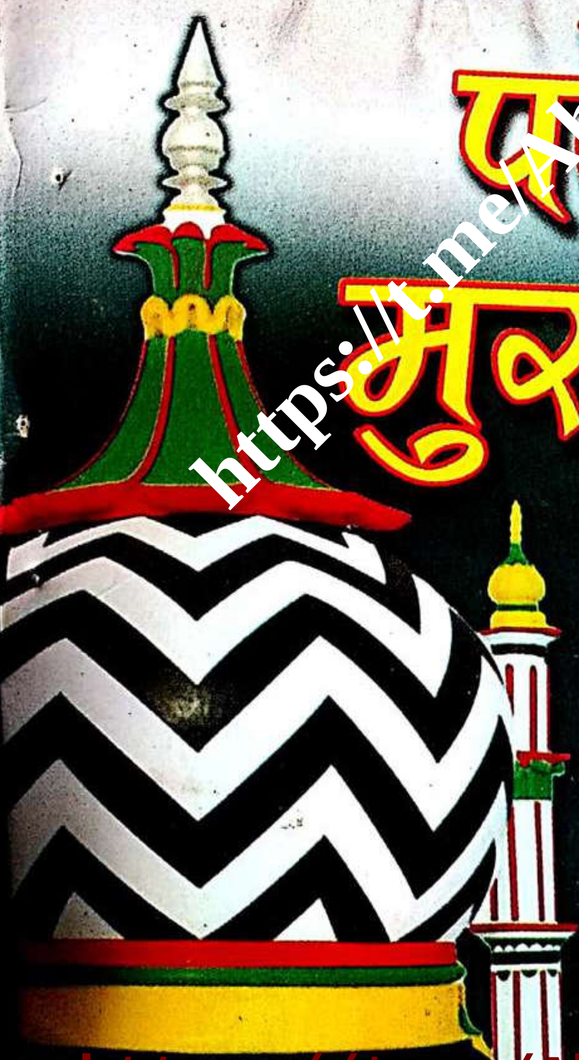
परेशान मुसलमान

मुरत्तिबा
जनाब मुहम्मद अहमद साहब



आलाहज़रत दारुल कुतुब
इस्लामिया मार्किट, बरेली शरीफ
नाशिर
जीलानी बुक डिपो
1229, चूड़ी वालान, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006

नाम किताब — **परेशान मुसलमान**

मुसन्निफ़ — **मुहम्मद अहमद नूरी**

तसहीह कर्दा — मुफ़्ती मुहम्मद अफ़ज़ाल रज़वी
मर्कज़ी दारुल इफ़्ता, बरेली शरीफ़

मिलने का पता

जीलानी बुक डिपो, देहली
523, वहीद कुतुब मार्कीट, मटिया महल,
जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फोन: 32715295, 9350046577, 9212346577

मोहम्मदी बुक डिपो
523, वहीद कुतुब मार्कीट, मटिया महल,
जामा मस्जिद, दिल्ली-6

आला हज़रत दारुल कुतुब
28, इस्लामिया मार्केट, बरेली

इस किताब की ज़रूरत क्यूँ

अल्हम्दुलिल्लाह आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और मेरे बुज़ुर्गों के सदक़ए तुफ़ैल में रद्दे वहाबिया पर यह किताब नए तर्ज़ के साथ आ गई जिसमें "अब्दुल्लाह" को एक करैक्टर बना कर मुफ़्ती साहब से उन सवाल जवाब का सिलसिला शुरू किया जो अब्दुल्लाह जैसे करोड़ों कम इल्म लोगों को तक़रीबन रोज़ परेशान कर रहा है और हज़ारों लोग अपने ईमान को गंवा रहे हैं। अब इस किताब में हिन्दीदाँ तबक़े को सैकड़ों उन सवालों के जवाब आसान ज़बान में मिल गए जो उसको बहुत परेशान करते हैं और वह बहुत से सवालों के जवाब जानते हुए भी दे नहीं पाता। हो सकता है कि अब वहाबी से छोटी मोटी मुटभेड़ के वक़्त यह किताब एक आम आदमी के बहुत काम आये। फिर भी बहुत से सवाल रह जायेंगे और कुछ नए नए फ़ितने बाद में आयेंगे तो इसी अन्दाज़ से एडीशन को रिवाइज़्ड करके ख़िदमत की कोशिश की जाएगी। पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि आगे आने वाली समस्याओं से हमें आगाह करायें और इस किताब को आराम से ठंडे दिल से पढ़ें। हमने इस किताब में वहाबियों की तरफ़ से हो रहे तक़रीबन सभी ऐतराज़ात का जवाब देने की कोशिश की है।

मैं जानता हूँ मेरी इस किताब से कुछ लोगों को बड़ी तकलीफ़ होगी उनसे यह कहना है कि अभी भी वक़्त है आराम से बात को समझ लें तौबा का दरवाज़ा अभी बन्द नहीं हुआ अगर तअस्सुब की आग में जलते जलते दुनिया से बेईमान गए तो हमेशा के लिए जहन्नम है. बेईमान के अमल किसी काम न आयेंगे।

और जिनको इस किताब से फ़ायदा पहुँचे मेरे लिए दुआ और मेरे लिए ईसाले सवाब करें। हर मुसलमान के लिए पैदा होने से पहले या मौजूद होने पर या दुनिया से जाने के बाद भी ईसाले सवाब से बढ़िया तोहफ़ा नहीं। ऐ अल्लाह हमें अपने हर नेक अमल का सवाब तमाम मुसलमानों को ईसाल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मुहम्मद अहमद

10. मुहर्रमुल हराम हिजरी 1431

फ़ेहरिस्त

उनवान सफ़ा न.

इस किताब की ज़रूरत क्यूँ
परेशान मुसलमान (अब्दुल्लाह) 3
अब्दुल्लाह का मुफ़्ती साहब के पास जाना 12
बक़द्रे ज़रूरत इल्मे दीन की अहमियत और फ़र्ज़ियत 12
अहले सुन्नत व जमाअत के अलावा सब फ़िरक़े बदमज़हब 13
काफ़िर को काफ़िर ही कहना चाहिए 14
किसी ख़ास शख़्स को काफ़िर कहने में एहतियात चाहिए 14
बदमज़हब की बुराई ग़ीबत नहीं बल्कि सवाब का काम है 14
ईमान की अहमियत 14
ईमान वाला ही अशरफ़ुल मख़लूक़ात है बेईमान बदतरीन मख़लूक़ 15
इन्सान मुसलमान है या काफ़िर बीच का कुछ नहीं 15
सब कुछ जाए पर ईमान किसी क़ीमत पर न जाए 16
अगर कुफ़्र हो जाए तो फ़ौरन तौबा करके कलिमा पढ़े 16
यह उम्मत 73 फ़िरक़े हो जाएगी 16
वहाबी फ़िरक़े की शुरूआत कहाँ से है 16
मुख़्तसर तारीख़े वहाबियत 17
क्या यह मौलवियों की लड़ाई है 17
आख़िर झगड़ा किस बात का है 18
देवबन्दियों की चन्द कुफ़्री इबारतें 19
क़ियामत की कुछ निशानियाँ 20
वहाबियों नजदियों के बारे में हदीसें 21
22

इल्मे ग़ैब

इल्मे ग़ैब किसे कहते हैं 25
इल्मे ग़ैब के बारे में अहले सुन्नत का अक़ीदा 26
हर नबी को इल्मे ग़ैब होता है 26
ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है इसका मतलब क्या है 26
इल्मे ग़ैब ज़ाती और इल्मे ग़ैब अताई 26
वहाबी नबी के लिए इल्मे ग़ैब को शिर्क कहते हैं 27
मौ. अशरफ़ अली का हुज़ूर के इल्मे ग़ैब को बच्चों व पागलों की तरह बताना 27
देवबन्दियों को शैतान के इल्म को मानना 27
अल्लाह व मख़लूक़ के इल्म का फ़र्क़ 27
क्या सिर्फ़ जिब्रील के बताए का इल्म ही हुज़ूर को था 28
हुज़ूर का इल्म जिब्रील व लौहे महफ़ूज़ से भी ज़्यादा है 28
सबसे बड़ा ग़ैब ख़ुद अल्लाह है जिसे सिर्फ़ हुज़ूर ने देखा 28

कुर्आन में सारे उलूम है 28
अल्लाह ने अपने महबूब को कुर्आन सिखाया 28
हुज़ूर के इल्म के सुबूत में हदीसें 29
इल्मे ग़ैब के लिए अक़्ली दलाइल 29
सिद्दीक़े अकबर का अपनी बीवी के पेट का हाल बताना 30
हुज़ूर का जंग से पहले काफ़िरों के मरने की ख़बर बताना 30
बल्कि मरने की जगह तक बताना 30
हुज़ूर जानते हैं कि क़ियामत कब आएगी 30
तमाम मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा इल्म हुज़ूर ही को है 31
क्या ज़रूरी है कि सवाल पूछने वाले को इल्म नहीं 31
इल्मे ग़ैब के लिए हदीसों की किताबों के हवाले 31
हुज़ूर को हज़रते आईशा की पाकी का इल्म था 31
हुज़ूर को फ़िरिश्तों की तादाद का इल्म है 32
हुज़ूर को पेश किए गए गोश्त के ज़हर का इल्म था 32
हुज़ूर को मुनाफ़ेक़ीन के मक्र व फ़रेब का इल्म है 32

हाज़िर व नाज़िर

हाज़िर व नाज़िर के मअना 33
हाज़िर व नाज़िर के सुबूत में क़ुर्आनी आयात 34
हाज़िर व नाज़िर के सुबूत में हदीसें 34
वहाबियों के यहाँ हुज़ूर को हाज़िर व नाज़िर मानना शिर्क है 35
अल्लाह पाक के लिए हाज़िर व नाज़िर बोलना क्यूँ मना है 35
हर नबी ज़िन्दा है 35
नमाज़ में हुज़ूर का ख़्याल और उन पर सलाम है 36
हाज़िर व नाज़िर किस किस को कह सकते हैं 36
शैतान को हाज़िर व नाज़िर कहना जाइज़ नहीं 37
अगर हुज़ूर हाज़िर व नाज़िर हैं तो दिखाई क्यूँ नहीं देते 37
हाज़िर व नाज़िर के सुबूत में अक़्ली दलाइल 37

बशरियत

वहाबी कहते हैं हुज़ूर हम जैसे बशर हैं 39
अहले सुन्नत कहते हैं बशर ज़रूर हैं मगर हम जैसे नहीं 39
हुज़ूर की चन्द ख़ुसूसियात 39
हुज़ूर के फ़ज़ाइल व कमालात 43
फिर हुज़ूर से बश-रुम्मिस्लुकूम क्यूँ कहा 46

वसीला और ग़ैरुल्लाह से मदद

इय्याका नअ़बुदु व इय्याका नस्तईन 47
या रसूलल्लाह मदद या ग़ौस अल मदद कहना कैसा है 47
अल्लाह के होते किसी और से मदद क्यूँ 47

ग़ैरुल्लाह से मांगना कब शिर्क होगा
क़ुआर्न ने मदद मांगने का हुक्म दिया है 48
अल्लाह की अता से नबी के देने का क़ुआर्न से सुबूत 48
अल्लाह की अता से नबी के देने का हदीस से सुबूत 48
हज़रते फ़ातिमा को नसीहत का मतलब 50
दुनिया से जाने के बाद मदद फ़रमाने का सुबूत 51
नबी, वली और शहीद ज़िन्दा हैं 51
बाज़ आलिम बाज़ शहीदों से अफ़ज़ल हैं 52
विलायत बेइल्म को नहीं मिलती 54
नबी की हयात वली से अफ़ज़ल है 54
मौत जिस्म पर है रूह पर नहीं 54
मौत के बाद रूह कहाँ रहती है 55
जब बेजान मोबाइल, कम्पयूटर से आवाज़ सुनी जा सके 55 तो
वली क्यूँ न सुनें
रूह के लिए दूर व पास बराबर 55
औलिया को पुकारने से हर बार हाजत पूरी नहीं होती क्यूँ 56
फ़र्क़ के साथ अल्लाह की सिफ़तों को मख़लूक़ के लिए मानना 56
अल्लाह व मख़लूक़ की सिफ़तों में फ़र्क़ 57
वसीले का हुक्म क़ुआर्न में 57
सबसे बड़ा वसीला हुज़ूर ही हैं 58
गुनाहों की मग़फ़िरत के लिए हज़ूर को वसीला बनाना 58
हदीसों में वसीले का हुक्म 58
नबी के नाइब होने के मअना 58
वसीले का सुबूत हदीस से 58
क्या दूसरी उम्मतें भी वसीले को मानती थीं 59
क्या नेक अमल वसीला हैं दूसरा कोई नहीं 60
मक़बूल चीज़ अल्लाह की बारगाह में वसीला हो सकती है 60

ताज़ीमें नबी

क्या कोई नबी की ताज़ीम अल्लाह के बराबर कर सकता है 61
क़ुआन में नबी की ताज़ीम का हुक्म 61
सहाबा का हुज़ूर की ताज़ीम करना 62
ताज़ीम के लिए हज़रते अबूबक्र का सांप से कटवा कर जान की परवाह न करना 62
ताज़ीम के लिए हज़रते अली का नमाज़े अस्र क़ज़ा करना 63
ताज़ीम के लिए खड़े होना कब मना है 64
लाखों करोड़ों सलाम पढ़ना कैसा 64
लाउडस्पीकर पर सलाम से क्या ख़लल होता है 64

इख़्तेयारात मुस्तफ़ा

इख़्तेयाराते मुस्तफ़ा का सुबूत क़ुर्आन से 64
इख़्तेयाराते मुस्तफ़ा का सुबूत हदीस से 65
हुज़ूर को शरीअत में तबदीली का इख़्तेयार है का सुबूत 65
अगर इख़्तेयार है तो मुसलमानों की हुकूमत क्यूँ नहीं 66
हुज़ूर के आख़िरत के इख़्तेयार 66

शफ़ाअत

शफ़ाअत पर एतराज़ का जवाब 66
हुज़ूर की उम्मत सबसे पहले जन्नत में जाएगी 66
शफ़ाअत की बहुत मशहूर ईमान अफ़रोज़ हदीस कि रोज़े क़ियामत सब उनके मुहताज होंगे 68
चन्द और गुनहगारों को रुला देने वाली हदीसें 69

बिदअत के बारे में

बिदअत किसे कहते हैं 71
बिदअते हसना 71
बिदअते सहियह 71
राइज बिदअतों की मिसालें 72

मज़ारात पर हाज़री

मज़ारात पर हाज़री देने के आदाब 73
मज़ारात पर ख़ुराफ़ात से सुन्नियों के नुक़सान 73
कब मज़ार पर जाने वाला कुफ़्र करता है 74
मज़ारात पर औरतों का जाना कैसा 74
मुजाविरों की बदआमालियों पर तबसरा 75
रबिउल अव्वल में रोशनी व चन्दे लंगर जुलूस का हुक्म 75
उर्स में ग़ैर शरई बातों से बचना चाहिए 76
ताक़ पर फूल चढ़ाना वाहियात बात है 76
नमाज़ छोड़ कर नियाज़ के नुक़सान 77

ईसाले सवाब

ईसाले सवाब का मतलब 76
ईसाले सवाब का क़ुर्आन से सुबूत 76
हदीस से साबित कि ईसाले सवाब सुन्नत है 77
ईसाले सवाब सुन्नत है 78
बख़्शने से सवाब में कमी नहीं होती हैं 78
ईसाले सवाब गुज़रे हुए और आने वाले सभी को कर सकते हैं 78
ईसाले सवाब सिर्फ़ मुसलमान को हैं काफ़िर को नहीं 78
ईसाले सवाब से गुनाह माफ़ होते हैं 78

ईसाले सवाब की बरकत का तबरानी से सुबूत
ईसाले सवाब की तक़सीम 78
ईसाले सवाब के लिए वक़्त मख़सूस करना 78
ईसाले सवाब को न मानने वाला ख़ुद बिदअती 79
ईसाले सवाब सब फ़िरक़ों के नज़दीक जाइज़ है 79
हुज़ूर के वसीले से बख़्शना सुन्नियों का तरीक़ा है 79
ईसाले सवाब भी दुआ है लिहाज़ा हाथ उठा कर करना जाइज़ 80
खाना सामने रख कर पढ़ना हुज़ूर से साबित है 80
ग़रीब की नियत से फ़ातिहा की तो सिर्फ़ ग़रीब ही खाए अमीर को खाना जाइज़ नहीं 80
अगर अमीर ग़रीब सब ही की नियत से खाना पकाया और फ़ातिहा की तो सब खा सकते हैं 81
कुछ नियत न की तो सब खा सकते हैं 81
नियाज़ में रिया व दिखावा बहुत बुरा है 81
नमाज़ छोड़ कर नियाज़ में लगे रहना बहुत बुरा है 81
नफ़्ल तब ही क़बूल हैं जब फ़र्ज़ क़बूल हों 81
लेकिन फ़र्ज़ छोड़ कर नफ़्ल करने वाले को रोका न जाए 82
वहाबी से फ़ातिहा दिलाना जाइज़ नहीं 82
खाने की बेअदबी के डर से फ़ातिहा न देना बेकार की बात है 82
सवाब बख़्शने का तरीक़ा 82
क्या उन मुसलमानों को बख़्श सकते हैं जो अभी पैदा भी नहीं हुए 83
ईसाले सवाब करने में ग़लत क़ुर्आन पढ़ने का हुक्म 83
तीजा चालीसवाँ बर्सी करना कैसा है 83
क्या दिल ही दिल में सवाब ईसाल कर सकते हैं 83
क्या औरतें फ़ातिहा दे सकती है 84
ईसाले सवाब करना क्या ही बेहतरीन सिलसिला हैं 84
नेक औलाद सदक़ए जारिया है 84
वहाबी के लिए ईसाल सवाब नही किया जाएगा बख़्शने वाले पर कुफ़्र लाज़िम आएगा 85
फ़क़ीर को क़र्ज़ लेकर तीजा चालीसवाँ करना जाइज़ नहीं 85
ग़लत रस्में बिदअत हैं 85
सिर्फ़ एक दिन का खाना पका कर भेजा जाए 86
तीजे के चने खाना जाइज़ है 86
देवबन्दियों के यहाँ नियाज़ का खाना हराम है 86
देवबन्दियों के यहाँ कव्वे का खाना जाइज़ है 86

रूहों के बारे में

रूहों का आना 86
जुमे की रात ईद व अशूरे के दिन रूहो कों घर आना 86

घर के अलावा कहाँ कहाँ जाती हैं 86

निदाए या रसूलल्लाह

निदाए या रसूलल्लाह का क़ुर्आन से सुबूत 87
उन किताबों के नाम जहाँ निदाए या रसूलल्लाह कहने का सुबूत मिलता है 87
क्या नमाज़ में निदाए या रसूलल्लाह है 87
मशहूर बुज़ुर्गों के नाम जिन्होंने निदाए या रसूलल्लाह की 88

ताज़ियादारी

ताज़ियादारी के मुताल्लिक़ क्या सही है 88
ताज़ियादारी के मुताल्लिक़ क्या ग़लत है 88
मुहर्रम में क्या जाइज़ 89
मुहर्रम में क्या नाजाइज़ 89
राफ़िज़ियों की महफ़िल में जाना और मरसिये सुनना कैसा 90
ताज़ियों से मन्नत मानना बिदअत है 90
राफ़ज़ियों के जुलूस को चाय वग़ैरह पिलवाना कैसा है 90

ताज़ीमी सजदा

सजदे दो क़िस्म के हैं सजदए इबादत और ताज़ीमी सजदा 90
ताज़ीमी सजदा पहले जाइज़ था अब हराम है 90
ताज़ीमी सजदे का हदीस से सुबूत 90
ताज़ीमी सजदा से काफ़िर न होगा 91
हुज़ूर के रौज़े को जालियों से ढकने में यही हिकमत है कि कोई ताज़ीमी सजदा न करे 91
सजदे के बारे में कुछ और बातें 91
मज़ारात के ताज़ीमी सजदा से अल्लाह रसूल और साहिबे मज़ार सब नाराज़ होते हैं 92

अंगूठे चूमना

हुज़ूर का नाम सुनकर अंगूठे चूमने का हुक्म इसके सुबूत के लिए हवाले 92
तिलावते क़ुर्आन और ख़ुतबे की अज़ान में अंगूठे चूमना नहीं 93

अज़ाने क़ब्र

अज़ाने क़ब्र का हुक्म और इसके फ़ायदे 93
क़ब्र के तीनों सवालों के जवाब अज़ाने क़ब्र में किस तरह 93
अज़ाने क़ब्र अच्छी बिदअत है 94
नमाज़ के अलावा कहाँ कहाँ अज़ान की जा सकती है 94
नमाज़ के अलावा अज़ान की नमाज़ कब है 94
अज़ाने क़ब्र न दें तो हरज नहीं 94

अज़ाने क़ब्र के फ़ायदे 94
अज़ाने क़ब्र में क़ब्र के तीनों सवालों के जवाब 94
नमाज़ के अलावा अज़ाने क़ब्र और कहाँ कहाँ 94
अज़ाने क़ब्र की नमाज़ कहाँ 95

मीलाद

मीलाद जाइज़ है 95
हदीस से मीलाद के सुबूत 95
ख़ुद हुज़ूर का मीलाद सुनने का सुबूत 95

विभिन्न

सलात का हुक्म 96
ग्यारहवीं का हुक्म 96
शबेबरात का हलवा आतिशबाज़ी और ज़्यारते क़ब्र का हुक्म 99
कूंडों की नियाज़ का हुक्म 99
क्या राफ़ज़ियों से मुशाबहत की बिना पर कूंडों की नियाज़ न की जाए 99
मज़ारात पर चादर का हुक्म 100
क़ब्र पर फूल अगरबत्ती व ख़ुशबू का हुक्म 100
पेड़ पर शहीद मर्द 100
क़ुर्आनख़्वानी पर उजरत 101
पुख़्ता क़ब्र का हुक्म 101
क़ब्र का बोसा व सजदे का हुक्म 101
फ़र्ज़ी क़ब्र का हुक्म 101
औरतों के मज़ारात पर जाने का हुक्म 101
क़व्वाली का हुक्म 102
फ़िल्मी गानों की तरज़ पर नात का हुक्म 102
रौज़ए रसूल की हाज़िरी 102

मुरतद और मुरतद के अहकाम

काफ़िर की क़िस्में 104
मुरतद के बारे में हदीसों से हुक्म 105
मुरतद से मेलजोल का हुक्म 105
मुरतद के अहकाम में सख़्ती क्यूँ 106
क्या वहाबियों के यहाँ भी मुरतद का वही हुक्म है जो सुन्नियों के यहाँ है 107
बदमज़हब के पीछे नमाज़ का हुक्म 108
बदमज़हब अगर इमामे हरम भी हो तो उसके पीछे नमाज़ बातिल होगी 109
क्या अरब में काफ़िर नहीं हो सकते 109

मुरतद की नमाज़े जनाज़ा का हुक्म 110
मुरतद के जानवर ज़िबाह का हुक्म 110
बक़रीद के गोश्त का हुक्म 110
मुरतद से निकाह का हुक्म 110
तौबा करने वाले से निकाह का हुक्म 111
वहाबी से नफ़रत रखना कैसा 111
जब काफ़िर से मेलजोल का हुक्म है तो इनसे क्यूँ नहीं 112
अच्छे अख़लाक़ का हुक्म किससे है 113
हुज़ूर से महब्बत का तक़ाज़ा उनके दुश्मन से नफ़रत है 114
इत्तेहाद क्या है 115
मख़लूक़ का एहसान ज़्यादा या अल्लाह पाक का 116
बाज़ पीरों के यहाँ सख़्ती क्यूँ नहीं 119
पढ़ने लाएक़ कुछ किताबों का तअर्रुफ़ 120
वहाबियों देवबन्दियों की कुफ़्री इबारात की फ़ोटो कापियाँ 121

परेशान मुसलमान

अब्दुल्लाह आज बहुत परेशान है और वह परेशानी यह है कि मुसलमानों में बहुत से फ़िरक़े हो गए हैं और हर फ़िरक़ा अपने आपको हक़ पर बताता है और एक दूसरे को बुरा भला कहता है। आख़िर यह माजरा क्या है। अब्दुल्लाह सोच रहा है कि क्या सब हक़ पर हैं, क्या यह मौलवियों के आपस के झगड़े हैं क्या हमें इसमें नहीं पड़ना चाहिए या सब खाने चाटने के धंधे हैं, आख़िर जायें तो कहाँ जायें। यही सब सोचते सोचते उसे ख़्याल आया कि क्यूँ न मुफ़्ती साहब से इस बारे में दरयाफ़्त किया जाए --- और यही सोचते हुए वह मुफ़्ती साहब के घर की तरफ़ चल दिया।

मुफ़्ती साहब बहुत नेक आदमी हैं। लोगों को मसाइल बताना फ़तवे देना उनका शौक़ है, बड़ी दूर दूर से लोग उनके पास फ़तवा लेने आते हैं, लोग उनसे दुआयें कराने भी आते हैं और उनकी दुआओं में असर भी देखा गया है।

जब अब्दुल्लाह मुफ़्ती साहब के घर पहुँचा तो कई लोग अपने अपने काम से आए बैठे थे। मुफ़्ती साहब उनसे दीनी गुफ़्तगू कर रहे थे। अब्दुल्लाह भी सलाम व मुसाफ़ा करके बैठ गया। मुफ़्ती साहब ने बड़े प्यार से पूछा कि कैसे आना हुआ। तो उसने कहा आप फ़ारिग़ हो जायें तो बातचीत करें। लोग आते रहे जाते रहे। कुछ देर बाद मुफ़्ती साहब अब्दुल्लाह की तरफ़ मुख़ातिब हुए और कहा साहबज़ादे फ़रमाइये। उसने कहा मैंने सोचा कि कुछ फ़ुरसत हो जाए तो पूछूँ तो ज़्यादा बेहतर है मगर उन्होंने ज़ोर दिया कि नहीं सबके सामने ही पूछूँ। --- और साथ ही एक ख़ादिम को चाय वग़ैरह लाने को कहा। अब्दुल्लाह जो सोच रहा था वही बात मुफ़्ती साहब के सामने दोहराना शुरू किया। मुफ़्ती साहब जैसे सब समझ गए फ़रमाने लगे आज इल्म की कमी ने हमें यहाँ लाकर खड़ा कर दिया है कि हमें हक़ को पहचानना मुश्किल हो गया है। आज हम दुनियावी तालीम पर तो हज़ारों रूपये ख़र्च करते हैं मगर दीनी तालीम जो ज़रूरी है और मुफ़्त मिलती है उसे हासिल नहीं करना चाहते।

अब्दुल्लाह : जी हाँ आप बिल्कुल ठीक फ़रमा रहे हैं, हज़ारों नहीं बल्कि लाखों रूपये तो कुछ लोग सिर्फ़ दाख़िले के लिए रिशवत देते हैं और दीनी तालीम मुफ़्त मिले तो दूर भाग रहे हैं।

मुफ़्ती साहब : अल्लाह व रसूल ने दुनियावी तालीम को मना नहीं फ़रमाया मगर वह इल्मे दीन जो तुम पर फ़र्ज़ है उसे छोड़

कर सालों मेहनत करके ज़रूरत से ज़्यादा डिग्री इकट्ठी करना जो कि सब डिग्रीयाँ हमारे काम भी न आयें, कुछ दिनों बाद भूल जायें कि क्या पढ़ा उन्हें इकट्ठा करना अक़्लमन्दी नहीं।

अब्दुल्लाह : नहीं साहब पढ़ाई बहुत ज़रूरी है आजकल बेपढ़े की कहीं गुज़र नहीं। हम देखते हैं कि अंगूठाटेक बेचारे कितना परेशान रहते हैं।

मुफ़्ती साहब : आप ग़लत समझ रहे हैं मैं दुनियावी तालीम का मुख़ालिफ़ (विरोधी) नहीं बल्कि मैं तो कहता हूँ कि मौलवीयों को भी इलाक़ाई ज़बान और इन्टरनेशनल ज़बान शायद इंगलिश ज़रूर सीखना चाहिए लेकिन पहले वह सीखें जो हम पर फ़र्ज़ है।

अब्दुल्लाह : क्या मौलवी बनना फ़र्ज़ है।

मुफ़्ती साहब : मेरा मतलब यह नहीं है बल्कि मैं यह कहना चाहता हूँ कि ज़रूरत के मुताबिक़ इल्मे दीन सीखना हम पर फ़र्ज़ है।

अब्दुल्लाह : मैं समझ नहीं पर रहा ज़रा वज़ाहत करें।

मुफ़्ती साहब : बहुत तफ़सील में न जाकर मेरा कहने का मतलब यह है कि हम पर अल्लाह व रसूल के बारे में बुनियादी अक़ाइद जानना, क़ब्र का अज़ाब सवाब, जन्नत दोज़ख़ क़ियामत के बारे में जानना, वुज़ू, ग़ुस्ल, पाकी नापाकी, नमाज़, रोज़ा के मसाइल सीखना फ़र्ज़ है। जब हम पर हज व ज़कात फ़र्ज़ हो तो उसके मसाइल सीखना हम पर फ़र्ज़ है। मुख़्तसर यूँ समझें कि शरीअत पर चलने के लिए जिन जिन मसाइल की ज़रूरत पड़ती जाए उन मसाइल का सीखना हम पर फ़र्ज़ है।

अब्दुल्लाह : जैसे।

मुफ़्ती साहब : जैसे सलाम करना, खाने पीने लिबास के मसाइल। कारोबार करने चलें तो कारोबार के मसाइल। निकाह करने के चलें तो निकाह व तलाक़ के ज़रूरी मसाइल वग़ैरह वग़ैरह।

अब्दुल्लाह : फ़िरक़ों के बारे में जानना क्या फ़र्ज़ है।

मुफ़्ती साहब : इस दौर में यह बहुत ज़रूरी है, हाँ बल्कि फ़र्ज़ ही कहिए वह इस लिए कि अगर इस बारे में न जानेगा और अपनी कमइल्मी की वजह से किसी बदमज़हब फ़िरक़े को मानने लगा तो एक वक़्त ऐसा आएगा कि ईमान से हाथ धो बैठेगा और अगर ईमान चला गया तो सब अमल बेकार हैं। यह जानना फ़र्ज़ है कि अहले सुन्नत के अलावा बाक़ी सभी फ़िरक़े झूटे बातिल गुमराह जहन्नमी हैं।

अब्दुल्लाह : हज़रत जो सब कलिमा 'लाइलाहा इल्लल्लाह

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" के पढ़ने वाले हैं मेरी समझ में नहीं आ रहा कि सब जहन्नमी कैसे हैं।

मुफ्ती साहब : हिन्दुस्तान पाकिस्तान के आस पास तीन बदमज़हब फ़िरक़े ज़्यादा पाए जाते हैं। 1.राफ़ज़ी 2. क़ादयानी 3. वहाबी (देवबन्दी और तबलीग़ी जमाअत वाले, अहले हदीस, जमाते इसलामी यानी मौदूदी जमात सब वहाबियों की शाख़ें हैं) ---- राफ़ज़ी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सहाबा की तौहीन करके काफ़िर हुए --- मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी को नबी मानकर क़ादयानी काफ़िर व मुरतद हुए --- वहाबी अल्लाह व रसूल की तौहीन करके और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बारे में बुनियादी अक़ाइद जैसे इल्मे ग़ैब व हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इख़्तेयारात को न मान कर काफ़िर व मुरतद हो गए।

अब्दुल्लाह : मुरतद किसे कहते हैं?

मुफ्ती साहब : जो सब कुछ जान कर कुफ़्र करे और दावा मुसलमान होने का करे मुरतद कहलाता है।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग कहते हैं कि किसी को काफ़िर नहीं कहना चाहिए कि क्या मालूम वह कब ईमान ले आए।

मुफ्ती साहब : क़ुर्आन ने काफ़िर को काफ़िर बुरे को बुरा कहा है। चोर को चोर, डाकू को डाकू और शैतान को शैतान ही कहा जाता है। यूँ तो मुसलामान को मुसलमान भी न कहो कि क्या पता कब काफ़िर हो जाए। --- मुसलमान को मुसलमान काफ़िर को काफ़िर जानना जरूरयाते दीन में से है। यानी किसी मुसलमान को काफ़िर या काफ़िर को मुसलमान जानना खुद कुफ़्र है। किसी मुसलमान को काफ़िर कहा और वह वाक़ई मुसलमान है तो कहने वाले पर कुफ़्र का हुक्म लगाया जाएगा। इसी तरह किसी काफ़िर को मुसलमान कहा और वह काफ़िर है तो कहने वाले पर कुफ़्र का हुक्म लगेगा। इसलिए किसी ख़ास शख़्स का नाम लेकर काफ़िर कहने से बचना चाहिए चूँकि अगर वह काफ़िर नहीं तो यह फ़तवा कहने वाले पर उल्टा पड़ता है अगर किसी ख़ास शख़्स को काफ़िर कहे तो सुबूत पेश करना पड़ेगा। हाँ अगर किसी के बारे में शक है तो ख़ामोश रहना बेहतर है। ग़र्ज़ यह कि इस मसअले में बहुत एहतियात की ज़रूरत है मगर वो सारे फ़िरक़े जो अल्लाह व रसूल की शान में तौहीन करते हैं वो सारे के सारे मुरतद व काफ़िर हैं ----- साथ ही सब कुछ जानने के बाद भी जो उन्हें मुसलमान समझे काफ़िर न समझे वह भी काफ़िर है।

अब्दुल्लाह : कहीं यह ग़ीबत तो नहीं?
मुफ़्ती साहब : हरगिज़ नहीं यह ग़ीबत नहीं बल्कि ऐसी ग़ीबत भी जाइज़ बल्कि सवाब है। उसकी ग़ीबत करना सही है जिससे किसी मुसलमान को नुक़सान का अन्देशा हो और यहाँ मुसलमान के ईमान जाने का अन्देशा है। ऐसे लोगों से मुसलमानों को होशयार करना बड़े सवाब का काम है।
अब्दुल्लाह : शायद मैं बीच बीच में सवाल करके मौज़ू से हट जाता हूँ मैं जिस बात को लेकर परेशान हूँ उसका जवाब दें।
मुफ़्ती साहब : देखिए सहबज़ादे सबसे पहले तो यह बात दिमाग़ में बैठा लीजिए कि ईमान से बढ़ कर कोई चीज़ नहीं, ईमान गया तो समझिए कि सब कुछ लुट गया बरबाद हो गया हमेशा के लिए जहन्नमी हो गया आग में जलेगा थूहड़, ख़ून व पीप और खौलता पानी उसकी ख़ुराक।

तुम्हारा रब फ़रमाता है : बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका फिर काफ़िर ही मर गए तो अल्लाह हर्गिज़ उन्हें न बख़्शेगा। (सूरए मुहम्मद)

अल्लाह और उसके हबीब सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के रहम–ओ–करम से जिसे ईमान की दौलत नसीब हुई वह दुनिया के उन ख़ुश नसीबों में से है जिसे अशरफ़ुल मख़लूक़ात यानी अल्लाह तआ़ला की मख़लूक़ में सबसे अफ़ज़ल कहा गया है और यह सदक़ा है मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का। ईमान शर्त है नेक आमाल के क़बूल होने की, ईमान शर्त है नमाज़ों के क़बूल होने की, रोज़े के मक़बूल होने की हज व ज़कात क़बूल होने की। जिनके पास ईमान नहीं उनके नेक अमल बेकार हैं वह सारी ज़िन्दगी भी सजदे में रहें तो उनके कुछ काम न आएगा। ईमान वाला गुनाहगार भी सय्यदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम) की शफ़ाअत और करम से और उनके सदक़े में एक न एक दिन जन्नत में ज़ुरूर जाएगा। ईमान वालों के लिए ही हमेशगी है जन्नत में। ईमान वालों के लिए क़ुरआन है ईमान वालों को अल्लाह पाक ने क़ुरआन में जगह–2 "ऐ ईमान वालो" कहकर नेक अमल करने के लिये इर्शाद फ़रमाया है। ईमान वालों ही के लिये जन्नत की ख़ुशख़बरी है दोज़ख़ से नजात है बिना ईमान के नेक अमल मक़बूल नहीं हैं।

ईमान वाला अशरफ़ुल्मख़लूक़ात है तो बेईमान सबसे बदतरीन मख़लूक़ है, बेईमान जानवरों से भी बदतर है। बेईमान हमेशा जहन्नम में रहेंगे ख़्वाह कैसे भी नेक अमल किये हों। ईमान जन्नत में जाने की पहली और ज़ुरूरी सीढ़ी है। बेईमान जन्नत की ख़ुशबू भी न पा सकेगा। ईमान वालों के लिये सबसे

बड़ी नेमत अपने प्यारे रब का दीदार है। यहाँ एक बात बहुत ज़्यादा ध्यान देने की है कि अगर इन्सान से एक बात भी कुफ़्र की हो जाती है तो उसके हाथ से ईमान निकल जाता है ऐसी हालत में फ़ौरन उस बात से तोबा करके कलिमा-ए-तय्यबा "लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" कहकर फिर ईमान में दाख़िल हो जाना चाहिये।

आम मुसलमान यह जानता है, नहीं जानता तो जान ले कि अल्लाह तआला ने इन्सान को अपनी इबादत के लिये पैदा फ़रमाया है और वह उसका इम्तहान भी लेगा और इम्तहान में बड़े से बड़े गुनाह को अगर चाहेगा तो माफ़ फ़रमा देगा मगर कुफ़्र व शिर्क को न बख़्शेगा और काफ़िर हमेशा जहन्नम में रहेंगे। लिहाज़ा ईमान पर रहना उसे बचाये रखना सारी ज़रूरतों में सबसे अहम है। इबादतें ईमान वालों ही की क़ुबूल हैं नाकि बेईमान की।

याद रखिये दुनिया में दो क़िस्म के लोग हैं मुसलमान (यानी ईमान वाले) और काफ़िर, बीच वाले कोई नहीं --- सिर्फ़ एक कुफ़्र इन्सान को काफ़िर बना देता है ---- अगर कोई शख़्स हज़ारों काम नेकी के करता है और किसी एक कुफ़्र पर क़ायम रहता है और यूहीं बिना तौबा के मर जाता है तो वह क़यामत में काफ़िर उठेगा और हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ में रहेगा।

यहाँ कहना यह है कि सब कुछ चला जाय मगर किसी भी क़ीमत पर ईमान हर्गिज़-हर्गिज़ न जाय, कोई भी बात ऐसी न हो कि आदमी इसलाम के दायरे से बाहर हो जाए, अगर कोई भी बात ऐसी मुँह से निकल जाए या हो जाय तो फ़ौरन जल्द से जल्द तौबा करके कलिमा पढ़कर फिर से दायरए इसलाम में दाख़िल हो जाना चाहिए।

अब्दुल्लाह : आपने बहुत ही अच्छी तरह समझा दिया कि ईमान नहीं तो कुछ नहीं हमे अपने अमल से ज़्यादा ईमान की फ़िक्र रखना चाहिए। अब तो मेरी फ़िक्र और ज़्यादा बढ़ गई कि कहीं ऐसी बातें करके मेरा ईमान तो नहीं चला गया।

मुफ़्ती साहब : नहीं, यह फ़िक्र आपके ईमान की दलील है अब आप पर यह सब जानना और ज़्यादा ज़रूरी हो गया।

अब्दुल्लाह : राफ़ज़ी क़ादयानी तो नहीं हाँ वहाबी फ़िरक़े के बारे में बताइये।

मुफ़्ती साहब : बहुत सी हदीसों में इस फ़िरक़े के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लमल ने पहले ही बता दिया था और यह भी बताया था कि मेरी उम्मत 73 फ़िरक़ों में बट जाएगी जिसमें एक फ़िरक़ा हक़ पर होगा।

अब्दुल्लाह : क्या यह हदीस में है कि 73 फ़िरक़े हो जायेंगे।
मुफ़्ती साहब : इस हदीस को सभी फ़िरक़े मानते हैं।
अब्दुल्लाह : अच्छा अब यह बताइये कि इस वहाबी फ़िरक़े की शुरूआत कहाँ से है।
मुफ़्ती साहब : इस बेदीन वहाबी फ़िरक़े की इब्तिदा इबलीस लईन से है कि अल्लाह तआला ने सय्येदिना आदम अ़लैहिस्सलाम की ताज़ीम का हुक्म दिया और मलऊन ने न माना और ज़मानए इसलाम में इसका हादी ज़ुलख़वेसरा तमीमी हुआ जिसने हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शान में तौहीनी कलमा कहा और उसके बाद पूरा गिरोह ख़वारिज का उस तरीक़े पर चला जिनको अमीरुल मोमनीन मौला अली ने क़त्ल फ़रमाया। लोगों ने कहा ह़म्द अल्लाह को जिसने उन की नजासतों से ज़मीन को पाक किया। अमीरुल मोमनीन ने फ़रमाया यह मुनक़ता नहीं हुए अभी उनमें के माओं के पेटों में हैं, बापों की पीठों में हैं जब इनमें की एक संगत काट दी जाएगी दूसरी सर उठाएगी, यहाँ तक कि इनका पिछला गिरोह दज्जाल के साथ निकलेगा। बारहवीं सदी के आख़िर में इब्ने अब्दुल वहाब नजदी इस गिरोह का सरग़ना हुआ।

यह फ़ितना बारह सौ नौ हिजरी (1209) में शुरु हुआ इस मज़हब का गुरु घंटाल अब्दुल वहाब नजदी का बेटा मोहम्मद था। उसने तमाम अरब और ख़ास कर हरमैन शरीफ़ैन में बहुत ज़्यादा फ़ितने फैलाए। आलिमों को क़त्ल किया। सहाबा, इमामों, आलिमों और शहीदों की क़ब्रें खोद डालीं। हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के रौज़े का नाम सनमे अकबर (बड़ा बुत) रखा था। अल्लामा शामी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने उसे ख़ारजी बताया।

उस अबदुल वहाब के बेटे ने एक किताब लिखी जिसका नाम "किताबुत्तौहीद" रखा उसका तर्जमा हिन्दुस्तान, में मौ. इसमाईल देहलवी ने किया जिसका नाम "तक़्वीयतुल ईमान" रखा और हिन्दुस्तान में वहाबियत इसी ने फैलाई। इन वहाबीयों का एक बहुत बड़ा अक़ीदा यह है कि जो उनके मज़हब पर न हो वह काफ़िर है, मुशरिक है। यही वजह है कि बात-2 पर बिला वजह मुसलमानों पर कुफ़्र और शिर्क का हुक्म लगाते और तमाम दुनिया को मुशरिक बताते हैं। आजकल तरह तरह के नाम से वहाबियों की शाख़ें पैदा हो चुकी हैं जैसे तबलीगी जमात, मौदूदी जमाम (जमाते इसलामी), अहले हदीस और देवबन्दी वग़ैरह।

अब्दुल्लाह : क्या वाक़ई इन्होने कुफ़्री बातें लिखी हैं।
मुफ़्ती साहब : नामालूम इन लोगों ने क्या क्या लिखा है मैं

इनकी चन्द इबारतें आपको दिखाता हूँ और चैलेन्ज के साथ कहता हूँ कि यह किताबें देवबन्द से आज भी छपती हैं आप यहाँ पर सिर्फ़ देख लीजिए और देवबन्द जाकर या डाक से मंगा कर इसकी तसदीक़ कीजिए --- हालांकि सुनने में आया है कि इनमें से कुछ इबारतें अब नए एडीशन में निकाल दी गई हैं मगर इनके अक़ाइद वही हैं। बात बात पर शिर्क लगाना, वसीले का इन्कार करना, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब को न मानना, अल्लाह ने उन्हें जो इख़्तेयार दिए उनका इन्कार करना, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत का इन्कार करना, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को माज़ल्लाह मुर्दा जानना, उनसे मदद मांगने को शिर्क बताना वग़ैरह वग़ैरह आज भी इनके मदरसों में पढ़ाया जाता है।

अब्दुल्लाह : हमने तो सुना है कि सुन्नी वहाबी झगड़ा न्याज़ नज़र, फ़ातिहा, तीजा, चालीसवाँ, उर्स, मज़ारात पर जाना, ताज़ियादारी वग़ैरह का है आप तो कुछ और ही बता रहे हैं।

मुफ़्ती साहब : हाँ इन फ़ुरूई मसाइल में हमारा उनसे इख़्तेलाफ़ है मगर हमारा अस्ल झगड़ा इसी बात का है कि यह अपनी किताबों में अल्लाह व रसूल की तौहीन करके काफ़िर व मुरतद हैं और इसका सुबूत मैं आपको दिखा चुका।

अब्दुल्लाह : सुबूत तो है मगर जब उनकी बातें सुनों तो लगता है कि हम सुन्नी ग़लत है और कहीं कहीं शिर्क में मुबतला हैं और शिर्क कभी न बख़्शा जाएगा।

मुफ़्ती साहब : बेशक कुफ़्र व शिर्क कभी न बख़्श जाएगा। काफ़िर व मुशरिक हमेशा जहन्नम में रहेंगे --- वो हमें ज़बरदस्ती मुशरिक बनाने पर उतारू हैं जो बातें वह शिर्क बताते हैं उनमें से सभी शिर्क नहीं और जो वाक़ई शिर्क हैं वह हम कभी नहीं करते न करेंगे हमारे ऊपर झूटा इलज़ाम है।

अब्दुल्लाह : नज़र तो यही आता है जैसे हम शिर्क कर रहे हैं। कुछ लोग यह कहते हैं कि यह मौलवियों की लड़ाई है इन चक्करों में नहीं पड़ना चाहिए?

मुफ़्ती साहब : हाँ कुछ लोग आपको ऐसे मिलेंगे जो कहेगें कि मियाँ क्यूँ इन झगड़ों में पड़ते हो यह सब तो मौलवियों की लड़ाई है। बाज़ कहेंगे चार इमामों के इख़्तेलाफ़ात हैं। याद रखिए ऐसा हरगिज़ हरगिज़ नहीं है चारों इमाम (हज़रत इमामे आज़म इमाम अबू हनीफ़ा, हज़रत इमाम शाफ़ई, हज़रत इमाम हम्बल और हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम) हक़ पर हैं और इनके आपसी इख़्तिलाफ़ अक़ाइद पर हरगिज़ नहीं इन चारों की नज़र में अल्लाह रसूल की तौहीन करने वाला

काफ़िर व मुरतद है यह लोग बेवजह किसी पर कुफ़्र और शिर्क नहीं लगाते। इन्होंने हमेशा हक़ फ़रमाया। यह चारों अहले सुन्नत व जमात के इमाम हैं।

कुछ लोग यह कहते हैं कि मियाँ अपनी दुकानें चमकाने को मौलवियों ने यह झगड़े पैदा कर दिए हैं इनमें मत पड़ा करो। कुछ लोग आपको इस तरह बहकायेंगे कि देखो मज़ारात पर चन्दा शीरीनी वग़ैरा या नियाज़ के हलवे मांडे का झगड़ा है या यह कहेंगे कि मौलवियों ने आपस में लड़वाने को ये तरह तरह की बातें पैदा कर दी हैं।

अब्दुल्लाह : आख़िर झगड़ा है किस बात का?

मुफ़्ती साहब : याद रखिए अस्ल इख़्तेलाफ है मुसलमान और मुरतद में फ़र्क़ का। अहले सुन्नत वल जमाअत ही सही रास्ते पर यानी अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के रास्ते पर है। हम कहते हैं कि वहाबी देवबन्दीयों ने अल्लाह और उसके रसूल की शान में गुस्ताख़ियाँ कीं और कर रहे हैं जिसका सुबूत उनकी किताबें हैं। वह शख़्स मुसलमान है जो अल्लाह और रसूल की शान में गुस्ताख़ी को कुफ़्र और गुस्ताख़ी करने वाले को काफ़िर जानता है। बहुत से लोग ऐसे मिलेंगे जो कहेगें कि हम ऐसा नहीं करते और हमारे ऊपर इलज़ाम है तो उनको आप इनकी किताबें या हवालों की फ़ोटोस्टेट कापी दिखा सकते हैं और फिर उनसे पूछिए कि अब क्या कहते हो। अब अगर वह हीले बहाने बनाए तो समझ लीजिए कि उसके दिल में ख़लिश है और फिर भी वह इन इबारतों को कुफ़्र न बताए या ऐसा लिखने वाले को काफ़िर न जाने तो वह मुरतद है और वही है जिसके बारे में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पहले ही फ़रमा चुके हैं।

यहाँ एक बात मैं और कहना चाहूँगा उन लोगों से जो यह कहते हैं कि यह सब झूठ है और ऐसा कुछ भी नहीं लिखा गया, वह बात यह है कि दो बातें हो सकतीं है या तो यह सच है या झूट है यानी या तो ऐसा लिखा गया या नहीं। अगर सच है तो इन बातों से तौबा करो कि यह हुज़ूर की शान में खुली तौहीन हैं और अगर यह बातें झूट हैं यानी सुन्नियों ने अपनी तरफ़ से यह बातें गढ़ दीं है और देवबन्दियों का नाम लेकर छाप दीं हैं तो फिर तो यह बहुत ही ज़लील काम किया जिसने भी किया लेकिन अफ़सोस तो यह है कि आज भी ये किताबें छप रहीं हैं और बिक रहीं हैं और बिल फ़र्ज़ ऐसा है भी तो सुन्नी मुसलमान कहाँ रहे ऐसा करने से तो फिर देवबन्दी वहाबी लोग हम सुन्नियों के पीछे नमाज़ क्यूँ पढ़ते हैं उनसे निकाह वग़ैरा क्यूँ करते हैं। मैं आपको वह किताबें दिखाता हूँ

जहाँ इन्होंने बकवास की है। मैं आपको सुबूत के लिए सिर्फ़ चन्द ही किताबें दिखऊँगा अगर आपको शक लगे तो ख़ुद बाज़ार से ख़रीद कर देखिएगा कि मैं झूट तो नहीं कह रहा।

देखिए यह इनकी किताब 'यक रोज़ा' जो मौ इस्माईल देहलवी की है इसमे अल्लाह तआला के झूट बोलने को मुमकिन कहा जा रहा है।

दूसरी किताब 'बराहीने क़ातेआ' है जिसमें शैतान के इल्म को तो नस्स से माना जा रहा है और हुज़ूर के इल्म को शिर्क कहा गया है।

तीसरी किताब सिराते मुस्तक़ीम है जो उर्दू और फ़ारसी में अलग अलग है जिसमें यह कहा गया है कि नमाज़ में हुज़ूर का ख़्याल आ जाए तो नमाज़ न होगी भले ही गधे घोड़े और बीवी से हमबिस्तरी का ख़्याल हो जाए तो नमाज़ हो जाएगी।

चौथी किताब हिफ़ज़ुल ईमान है जिसमें हुज़ूर के इल्म को पागलो बच्चों और मजनूनों का सा बताया गया है

पांचवी किताब तहज़ीरुन्नास है इसमें हुज़ूर के आख़री नबी होने का इन्कार है

छठी किताब तक़वीयतुल ईमान है इसमें नीचे लिखी बातें हैं :-

1. हर मख़लूक़ अल्लाह के आगे चमार से ज़्यादा ज़लील।
2. जिसका नाम मुहम्मद या अली हो वह किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं
3. हुज़ूर गंवार की बात सुनकर मारे दहशत के बदहवास हो गए।
4. बुज़ुर्गों की ताज़ीम ऐसी करो जैसे बड़े भाई की।
5. हुज़ूर के लिए मर कर मिट्टी में मिलना लिखा गया है।

सातवीं किताब फ़तावा रशीदिया में है कि होली दिवाली की पूरियाँ खाना और हिन्दू के प्याऊ से पानी पीना जाइज़ और नियाज़ नज़र का खाना हराम और सबील का पानी और दूध पीना हराम।---- और यह भी लिखा है कि उस उर्स तक में जाना हराम है जिसमें क़ुर्आनख़्वानी हो और मिठाई बटे।

किताबें तो बहुत हैं मगर और यह आठवीं और आख़री देख लें जिसमें मो अशरफ़ अली थानवी अपने एक मुरीद से अपने लिए कलिमा पढ़वा रहे हैं। अस्ल लड़ाई हमारी यह है।

नोट : इन कुफ़्री इबारतों की फ़ोटोकापी किताब के आख़िर में देखें।

अब्दुल्लाह : क़ियामत के क़रीब जो निशानियाँ ज़ाहिर होंगी उसके बारे में बताये और क्या हुज़ूर ने हमें इन फ़िरक़ों की भी कुछ निशानदेही की है?

मुफ़्ती साहब : हाँ! बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़ और

मिशकात शरीफ़ की कुछ हदीसों का ख़ुलासा इस तरह है कि क़ुर्बे क़ियामत तीस दज्जाल पैदा होगें जो नुबुव्वत का दावा करेंगे --- दीन में फ़ितने बरपा होगें मेरी उम्मत तेहत्तर (73) फ़िरक़ों में बट जाएगी --- क़ुरआन व हदीस की मनमानी तफ़सीरें होंगी --- लोग अच्छों को बुरा कहेंगे पिछलों पर लानत करेंगे --- सुन्नत को बिदअत समझा जाएगा --- हलाल को हराम कहा जाएगा --- अच्छे बुरे की हलाल व हराम की तमीज़ ख़त्म हो जाएगी --- लोग सुबह इसलाम पर करेंगे और कुफ़्र पर शाम --- चटाई के तिनके और तस्बीह के दोनों की तरह पै दर पै फ़ितनों की बारिश होगी, कोई इसमें नहाएगा कोई भीगेगा किसी को सीलन पहुँचेगी ग़र्ज़ कोई भी इन फ़ितनों से न बचेगा। --- लोग नमाज़ को ज़ाए करने लग जायेंगे --- नफ़सानी ख़्वाहिशात ग़ालिब होंगी --- मालदारों की ताज़ीम उनके माल की वजह से की जाएगी --- झूटे को सच्चा और सच्चे को झूटा समझा जाएगा --- ख़ाएन अमीन मशहूर होंगे अमीन को ख़ाएन समझा जाएगा --- जिनको बोलने का सलीक़ा न होगा वह वाज़ कहेंगे --- इस्लाम नाम का रह जाएगा --- क़ुर्आन के सिर्फ़ हरूफ़ रह जायेंगे क़ुर्आन को सुनहरी जुज़दान में सजाया जाएगा हालांकि वह अमल करने के लिए आया है न कि सजाने के लिए --- मिम्बरों पर कम उम्र लड़के ख़ुतबा देंगे --- मस्जिदें ख़ूबसूरत बनाई जायेंगी और गिरजों की तरह सजाई जायेंगी उनके मीनार बलन्द किए जायेंगे नमाज़ियों की सफ़ें ज़्यादा होंगी लेकिन उनके दिल और ज़बानें अलग अलग होंगी --- मोमिन उस वक़्त लौंडियों की तरह समझे जायेंगे मोमिन बुराईयाँ और नाफ़रमानियाँ देख कर कुढ़ेगा क्यूँकि वह लोगों की इस्लाह पर क़ादिर न होगा --- मर्द मर्द के साथ औरत औरत के साथ मशग़ूल होंगे --- फ़ासिक़ इमाम बन बैठेंगे --- हुकमराँ के वज़ीर बदकिरदार होंगे --- नमाज़ दुनिया के धंधों में फंस कर बरबाद की जाएगी ---- ऐसा वक़्त आएगा कि लोग मशरिक़ व मग़रिब से तुम्हें गुमराह करने के लिए तुम्हारे पास आयेंगे उनकी शक्लें इन्सानों की सी होंगी मगर दिल में शैतानयत भरी होगी ---- हज तो उस वक़्त भी होगा मगर बादशाहों का हज सैर व तफ़रीह के लिए होगा --- कुछ लोग तिजारत के लि हज करेंगे --- मिस्कीन सवाल करने के लिए हज को जायेंगे ---- आलिमों का हज रियाकारी और दिखावे के लिए होगा --- झूट दुनिया पर छा जाएगा --- दुमदार सितारा नज़र आयेगा ---- औरतें मर्दों के साथ तिजारत और मुलाज़मत में शरीक होंगी --- बाज़ार बहुत होंगे और करीब करीब होंगे --- ऐसी आंधी चलेगी जिसमें सांप होगें वह

सांप उस वक़्त सरदार उल्मा को चिमट जायेगे जिन्होंने बुराईया देखीं और उनसे मना न किया।

अब कुछ ख़ास इन नजदियों के बारे में हदीस व पेशगोई सुने।

__हदीस__ : हज़रत अबदुल्लाह इब्ने उमर रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से हज़रत इमाम बुख़ारी ने यह हदीस नक़ल की है कि एक दिन हुजूरे अनवर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने शाम और यमन के लिए दुआ फ़रमाई जिसके अलफ़ाज़ यह हैं :- "ख़ुदावन्दा हमारे शाम और यमन में बरकत नाज़िल फ़रमा" ---- (दुआ करते वक्त नज्द के कुछ लोग बैठे हुये थे) उन्होने अर्ज़ किया और हमारे नज्द में या रसूलल्लाह!

इस पर हुज़ूर ने इर्शाद फ़रमाया "ख़ुदावन्दा हमारे शाम और यमन में बरकत नाज़िल फ़रमा" --- फिर दुबारा नज्द के लोगों ने अर्ज़ किया और हमारे नज्द में या रसूलल्लाह! रावी (रिवायत बयान करने वाला) का बयान है कि तीसरी मरतबा में हुजूर ने फ़रमाया वह ज़लज़लों और फ़ितनों की जगह है और वहाँ से शैतान की सींध निकलेगी।" (बुख़ारी शरीफ़)

__हदीस__ : अल्लामा दहलान रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह अपनी किताब अद्दुररुस्सुन्नीय्या में फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अनवर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्ल्म ने इरशाद फ़रमाया :-

"कुछ लोग मशरिक़ की सम्त से ज़ाहिर होंगे जो क़ुरआन पढ़ेंगे, लेकिन क़ुरआन उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। जब उनका एक गिरोह ख़त्म हो जाएगा तो वहीं से दूसरा जन्म लेगा यहाँ तक कि उनका आख़री दस्ता दज्जाल के साथ उठेगा।"

__हदीस__ : मिशकात शरीफ़ में हज़रते अबू सईद ख़ुदरी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मनकूल है वह कहते हैं कि हम लोग हुज़ूरे अनवर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे और हुज़ूर माले ग़नीमत तक़सीम फ़रमा रहे थे कि "ज़ुल्ख़वेसिरा" नाम का एक शख़्स जो क़बीला बनी तमीम का रहने वाला था आया और कहा ऐ अल्लाह के रसूल इन्साफ़ से काम लो। हुज़ूर ने फ़रमाया "अफ़सोस तेरी जसारत (जुर्रत, हिम्मत) पर मैं ही इन्साफ़ नहीं करूँगा तो और कौन इन्साफ़ करने वाला है। अगर मैं इन्साफ़ नहीं करता तो तू ख़ाएब व ख़ासिर (तहस-नहस) हो चुका होता।" हज़रते उमर से जब नहीं रहा गया तो उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मुझे इजाज़त दीजिए मैं इसकी गर्दन मार दूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया इसे छोड़ दो यह अकेला नहीं है इसके बहुत से साथी हैं जिनकी नमाज़ों और रोज़ों को देखकर तुम अपनी नमाज़ों और रोज़ों को हक़ीर समझोगे, वह क़ुरआन पढ़ेंगें लेकिन क़ुरआन उनके हलक़ से

नीचे नहीं उतरेगा। यानी इन सारी ज़ाहिरी ख़ूबियों के बावजूद वह दीन से ऐसे निकल जाएगें जैसे तीर से शिकार निकल जाता है। (मिशकात शरीफ़ व बुख़ारी शरीफ़)

<u>हदीस</u> : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अनस इब्ने मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से मिशकात शरीफ़ में यह हदीस नक़ल है हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत में इख़्तेलाफ़ व तफ़रीक़ का वाक़ेए होना मुक़द्दर हो चुका है पस इस सिलसिले में एक गिरोह निकलेगा जिसकी बातें बज़ाहिर दिलफ़रेब ख़ुशनुमा होगीं लेकिन किरदार गुमराहकुन और ख़राब होगा वह क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन क़ुरआन उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा वह दीन से ऐसे निकल जाएगें जैसे तीर शिकार से निकल जाता है फिर दीन की तरफ़ लौटना उन्हें नसीब न होगा यहाँ तक कि तीर अपने कमान की तरफ़ लौट आए। हदीस की मुराद यह है कि उनका दीन की तरफ़ लौटना मुहाल है जैसे तीर का लौटना मुहाल है वह अपनी तबीयत व सरिश्त के लिहाज़ से बदतरीन मख़लूक़ होगें। वह लोगों को .क़ुरआन और दीन की तरफ़ बुलाएगें हांलाकि दीन से उनका कोई तअल्लुक़ न होगा जो उनसे जंग करेगा वह ख़ुदा का मुक़र्रबतरीन बन्दा होगा। सहाबा ने फ़रमाया उनकी ख़ास पहचान क्या होगी या रसूलल्लाह! फ़रमाया सर मुंडाना।

<u>हदीस</u> : इस हदीस की ख़ुसूसियत यह है कि अस्ल हदीस बयान करने से पहले हदीस के रावी हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि क़सम ख़ुदा की आसमान से ज़मीन पर गिर पड़ना मेरे लिए आसान है लेकिन हुज़ूर की तरफ़ कोई झूठी बात मनसूब करना बहुत मुश्किल है। इसके बाद अस्ल हदीस का सिलसिला यूँ शुरु होता है फ़रमाते हैं :-

“मैंने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना कि आख़िर ज़माने में नौ उम्र और कम समझ लोगों की एक जमाअत निकलेगी, बातें वह बज़ाहिर अच्छी करेगें लेकिन ईमान उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा वह दीन से ऐसे निकल जाऐगें जैसे तीर से शिकार निकल जाता है।”

इस हदीस में उम्मत से उम्मते दावत मुराद है यानी वो लोग मुराद हैं जिनको ईमान और अहकामे इस्लाम की दावत देने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को भेजा गया। इस मअना में काफ़िर भी दाख़िल हैं। दूसरा मअना उम्मते इजाबत यानी जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए और उनकी बात दिल से क़बूल की इसमें ग़ैर मुस्लिम दाख़िल नहीं।

हदीस : हज़रत अबू नुऐम ने हिलया में अबू उमामा बाहली रदियल्लाहु तआला अन्हु से नक्ल किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :-

"आख़िर ज़माने में कीड़े-मकोड़े की तरह हर तरफ़ 'मुल्लाने' फूट पड़ेंगे। बस तुममें से जो शख़्स वह ज़माना पाए तो उसे चाहिए कि वह उनसे ख़ुदा की पनाह मांगे।

ग़ैब की ख़बरें देने वाले हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इन मुबारक हदीसों से साफ़ तौर पर यह ख़बरें पहले ही दे दी गई कि इस उम्मत का 73 फ़िरक़ों में बंटना मुक़द्दर हो चुका है। (जिसमें सिर्फ़ एक फ़िरक़ा हक़ पर होगा) ----- सुन्नत को बिदअत कहा जाएगा ---- हलाल को हराम कहा जाएगा ----- लोग सुबह इसलाम पर कुफ्र पर शाम करेंगे ----- बे-पनाह फ़ितने बरसेंगे कोई फ़ितनों से बच न पाएगा ------ नज्द से फ़ितना उठेगा ------ ऐसे लोग ज़ाहिर होगें जो बज़ाहिर नमाज़ी, रोज़ा रखने वाले, क़ुरआन पढ़ने वाले, दीन की तरफ़ बुलाने वाले होगें मगर उनके पास ईमान न होगा और यह भी कि ऐसे लोगों की इबादत के आगे तुम अपनी इबादत को हक़ीर जानोगे ------- आख़िर ज़माने में मुल्लाने कीड़े-मकोड़े की तरह निकलेंगे और इनका आख़री दस्ता दज्जाल के साथ निकलेगा।

ख़ूब ग़ौर करके देखो इन हदीसों की रोशनी में कि वह जन्नती फ़िरक़ा कौन सा है जिस पर हमें और आपको क़ायम रहना है और वह 72 फ़िरक़े कौन हैं जिनसे दूर रहना है चूंकि ईमान की सलामती के लिये यह ज़ुरूरी और बहुत ज़्यादा ज़ुरूरी क्योंकि अगर तुम किसी ऐसे के बहकावे में आ गए जो बातिलों में से है तो तुम्हारा नमाज़, रोज़ा, हंज, ज़कात और तमाम नेक अमाल बेकार हो जाएगें चूंकि आमाल की मक़बूलियत ईमान पर मुनहसिर है। होशयार इन दिखावे की इबादत वालों के बहकावे में न आना यह ईमान के दुश्मन तुम्हारा ईमान लेने की फ़िक्र में हैं एक यही वह दौलत है जिस पर तुम जितना नाज़ करो कम है, तुम्हारा यह ख़ज़ाना ये फ़िरक़े बहरूपये बन कर छीनने आये हैं। ये तुम्हें अपना दोस्त ज़ाहिर करके नेकी की तरफ़ बुलायेंगे, इसलिए इनको पहचानना बहुत ज़ुरूरी है क्यूँकि तुम इनके बहकावे में आ सकते हो क्यूँकि भोले मुसलमान को हमेशा धोके और मक्कारी से हराया गया है।

जैसा कि सय्यदे आलम ग़ैब की ख़बर देने वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था उसके मुताबिक़ होता गया और होता रहा है और सब आगे

होगा क्यूँकि हमारा नबी सच्चा उसका फ़रमान सच्चा। इन बातिल फ़िरक़ों में कुछ हिन्दुस्तान से बाहर पैदा हुए और वहीं खत्म हो गए, कुछ हिन्दुस्तान और उसके बाहर पाए जाते हैं जैसे : राफ़ज़ी, वहाबी, गैर मुक़ल्लदीन (जो अपने आपको अहले हदीस कहते हैं) नैचरी, चिकड़ालवी, जमाअते इसलामी (मौदूदी जमात वाले), क़ादयानी वग़ैरह वग़ैरह।

और इन सब में सबसे ज़्यादा/ ख़तरनाक, ख़बीस, मक्कार और फ़रेबी फ़िरक़ा फ़ितना-ए-वहाबीयत है और ज़्यादातर फ़िरक़ों की शाख़ें इसी से जाकर मिलती है और इनकी सबसे बड़ी पहचान यह है कि ये अपनी किताबों में अल्लाह और उसके हबीब की शान में गालियाँ बकते हैं तौहीन करते हैं और पेश की गई हदीसों के मुताबिक़ एकदम फ़िट बैठते हैं। इस छोटी सी किताब के ज़रिए मैं आपको इसी फ़िरक़े से होशियार करना चाहता हूँ।

अब्दुल्लाह : मेरा तो दिमाग़ ख़राब हो रहा हैं

मुफ़्ती साहब : बेहतर यह होगा आप इन सारे टापिक पर सवाल करते जायें और मैं जवाब देता जाऊँ ताकि हमारी बात साफ़ हो जाए।

अब्दुल्लाह : मैं भी यही चाहता हूँ। यह तो आप बता ही चुके कि वहाबी फ़िरक़ा कहाँ से शुरू हुआ और हदीसों में भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पहले ही हमें बता दिया था कि ऐसे लोग ज़ाहिर होंगे और इनकी यह कुफ़्री इबारतों को देखकर तो एक देहाती भी यह बता देगा कि ऐसा बकने वाला मुसलमान नहीं ----- अब मैं आपसे बुनियादी अक़ाइद पर एक एक करके सवाब पूछूंगा और फिर फ़ुरूई मसाइल पर पूछूंगा मेहरबानी करके एक एक करके जवाब देते जायें। बताइये सबसे पहले कौन सा टापिक लें।

इल्मे ग़ैब

मुफ़्ती साहब : सबसे पहले इल्मे ग़ैब पर बात करते हैं।

अब्दुल्लाह : जी बेहतर सबसे पहले हमें यह बताइये कि अहले सुन्नत का इस बारे में क्या अक़ीदा है। आसान ज़बान में समझायें।

मुफ़्ती साहब : ग़ैब वह छुपी हुई चीज़ है जिसको इन्सान न तो आँख नाक कान वग़ैरह से महसूस कर सके और न बिला दलील बदाहतन (बग़ैर गौर व फ़िक्र के) अक़्ल में आ सके। मसलन :- मलाइका, जन्नत, दोज़ख़, क़ियामत का इल्म ग़ैब का इल्म है --- इन्सान कब मरेगा, औरत के पेट में क्या है और वह नेक है या बद ग़ैब का इल्म है --- रंग पहचाना ज़बान

व कान के लिए ग़ैब है, बू आँख के लिए ग़ैब है, अगर कोई बू व मज़े को आँख से शक्लों में देख ले तो ग़ैब है।

अब्दुल्लाह : यह तो इल्मे ग़ैब की तारीफ़ हुई। हमें यह बताइये कि हमारे आक़ा के इल्मे ग़ैब के बारे में या नबियों के इल्मे ग़ैब के बारे में अहले सुन्नत का अक़ीदा क्या है।

मुफ़्ती साहब : अहले सुन्नत का मसलक यह है कि अल्लाह तआला ने नबियों को अपने ग़ैबों पर इत्तिला दी। यहाँ तक कि ज़मीन और आसमान का हर ज़र्रा हर नबी के सामने है। और हमारे आक़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तमाम नबियों में सबसे अफ़ज़ल व सबके सरदार हैं लिहाज़ा सबसे ज़्यादा इल्म या इल्मे ग़ैब आप ही को है।

अहले सुन्नत का यह अक़ीदा है कि सारी कायनात का इल्म अल्लाह तआला के किसी भी नबी के इल्म के सामने ऐसा है जैसे समन्दर के सामने क़तरा होता है और तमाम नबियों का इल्म मिल कर हुज़ूर अलैहिस्सलाम के इल्म के सामने ऐसा ही जैसे समन्दर के सामने क़तरा हो और हुज़ूर अलैहिस्सलाम का इल्म ख़ुदा के इल्म के सामने ऐसा भी नहीं जैसे करोड़ों समन्दरो के सामने क़तरे के करोड़वें हिस्से का। वह इसलिए कि अल्लाह के इल्म की हद ही नहीं और हुज़ूर या किसी भी नबी या मख़लूक़ के इल्म की कोई न कोई हद ज़रूर है क्या है कितनी है अल्लाह ही जाने।

अब्दुल्लाह : क़ुर्आन में जो आया कि ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को है तो इसका क्या मतलब है। क़ुर्आन पहले है हदीस बाद में।

मुफ़्ती साहब : बेशक क़ुर्आन पहले हैं और क़ुर्आन में ही है कि अल्लाह जिसे चाहता है ग़ैब का इल्म अता फ़रमाता है। और जो यह आया कि ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को हैं तो इससे मुराद ज़ाती इल्म है जो सिर्फ़ अल्लाह के लिए है जो कोई ज़ाती इल्म किसी और के लिए माने वह काफ़िर है।

अब्दुल्लाह : ज़रा और साफ़ साफ़ बतायें।

मुफ़्ती साहब : इल्मे ग़ैब दो तरह का है एक इल्मे ग़ैब ज़ाती और दूसरा इल्मे ग़ैब अताई। इल्मे ग़ैब ज़ाती सिर्फ़ अल्लाह ही को है और इल्मे ग़ैब अताई नबियों और वलियों को अल्लाह तआला के देने से हासिल होता। मख़लूक़ का इल्म हर हाल में अताई चाहे आम इल्म हो या इल्मे ग़ैब।

अब्दुल्लाह : ज़ाहिर है अल्लाह का इल्म अताई तो हो ही नहीं सकता और ऐसा मानना तो कुफ़्र हुआ। अच्छा जिस इल्म को अल्लाह ने सिर्फ़ अपने लिए बताया वह ज़ाती है और जो अपने ख़ास बन्दों के लिए बताया वह अल्लाह की अता से

है। --- वहाबियों का अक़ीदा भी बयान करें ताकि फ़र्क़ मालूम हो।

मुफ़्ती साहब : बेहतर तो यही होता कि उनका अक़ीदा उन्हीं से पूछते फिर भी मैं बताता हूँ। ---वैसे इनके यहाँ नबियों के लिए इल्मे ग़ैब मानना शिर्क है --- इनका तो यह हिसाब है कि क़ुर्आन में आया कि क़ुर्आन की कुछ बातें मानते हैं कुछ का इन्कार करते हैं। अगर आप इनसे पूछें कि तो यही कहेंगे कि क़ुर्आन में आया कि अल्लाह अपने ग़ैब पर किसी को इत्तेला नहीं देता और इस आयत को नहीं सुनायेंगे अल्लाह तआ़ला अपने मुक़र्रब बन्दों से जिसे चाहता है चुन लेता है और ग़ैब का इल्म अता फ़रमाता है। जबकि दोनों बातें हक़ हैं जहाँ इल्म को अल्लाह ने सिर्फ़ अपने लिए कहा वहाँ अपने ज़ाती इल्म के लिए कहा और जहाँ इल्मे ग़ैब के देने के लिए बात की वह अताई इल्म के लिए कही।

अब्दुल्लाह : क्या वहाबी अताई इल्म को नहीं मानते।

मुफ़्ती साहब : इन्होंने अपनी किताबों में नबी के लिए अताई इल्म को शिर्क लिखा है हवाला मैं आपको दिखा चुका। बल्कि मैंने आपको मौ. अशरफ़ अली थानवी की वह कुफ़्री इबारत दिखाई जिसमें नबी के इल्म को पागल और मजनून जैसा बताया ---- दूसरी इबारत वह भी दिखाई कि इन्होंने शैतान के इल्म के सुबूत को तो क़ुर्आन व हदीस से माना और हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इल्म का सुबूत मांगा जबकि क़ुर्आन में भी आया और कितनी ही हदीसों से साबित कि हुज़ूर को इल्मे ग़ैब अता हुआ बल्कि तमाम मख़लूक़ से ज़्यादा अता हुआ। जब आप हर ख़ूबी में सबसे अफ़ज़ल हैं तो इल्म या इल्मे ग़ैब में क्यूँ न अफ़ज़ल होंगे बहुत मोटी सी बात है।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग कहते हैं कि अल्लाह व रसूल दोनों के लिए इल्मे ग़ैब मानने से हमने दोनों को बराबर माना और अल्लाह कि बराबर तो कोई हो नहीं सकता न ज़ात में न सिफ़ात में न इल्म में। ज़रा अल्लाह व रसूल के इल्म के फ़र्क़ को समझाइये।

मुफ़्ती साहब : अल्लाह तआ़ला के इल्म से हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इल्म की तुलना मोटे तौर पर इस तरह की जा सकती है।

1. अल्लाह तआ़ला का इल्म ज़ाती है हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का इल्म अल्लाह की अता से है।
2. अल्लाह तआ़ला का इल्म क़दीम है हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का इल्म हादिस यानी अल्लाह का पैदा किया हुआ

3. अल्लाह तआ़ला का इल्म लामुतनाही (जिसकी हद न हो) हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का इल्म मुतनाही (जिसकी कोई हद ज़रूर हो) है।

4. अल्लाह तआ़ला के लिए अताई इल्म मानना कुफ़्र व शिर्क है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के लिए अताई इल्म मानना ऐन ईमान है।

5. अल्लाह तआ़ला के इल्म को मख़लूक़ के इल्म से वह निसबत भी नहीं जो करोड़ों समन्दरों को पानी की एक बूंद के करोड़वें हिस्से से है।

यह हैं अहले सुन्नत के अक़ाइद।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग यह कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम को वही इल्म होता था जो जिब्रील अ़लैहिस्सलाम बताते थे यानी अल्लाह पाक जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से कहलवाता।

मुफ़्ती साहब : देखिए एक तो इसी बात से वसीला साबित हो रहा है और हम आपको बता चुके कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह ने सबसे ज़्यादा इल्म अता किया। देखिए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का इल्म जिब्रील अ़लैहिस्सलाम, लौहे महफ़ूज़ (वह तख़्ती जिस पर सब की तक़दीरें लिखी हैं), अर्शे आज़म और तमाम नबियों से ज़्यादा है। अल्लाह पाक कैसा है यह सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ही को पता है। सारे ग़ैबों से बड़ा ग़ैब तो अल्लाह तआ़ला ही और जब सबसे बड़ा ग़ैब अल्लाह पाक ने अपने सबसे ख़ास महबूब बन्दे से न छुपाया तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से और क्या छुपा होगा।

अब्दुल्लाह : वाह वाह सुब्हानल्लाह क्या बात कह दी जब अल्लाह पाक ने अपने आप को आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से न छुपाया तो और क्या छुपा होगा।

मुफ़्ती साहब : हमारा आपका अक़ीदा है कि क़ुर्आन पाक मे हर चीज़ का बयान है और क़ुर्आन को सबसे ज़्यादा कौन समझता है जिब्रील अ़लैहिस्सलाम या हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम।

अब्दुल्लाह : बेशक हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से ज़्यादा क़ुर्आन को कौन जाने इसमें क्या शुबा।

मुफ़्ती साहब : सूरह रहमान की पहली आयत का तर्जमा है कि रहमान ने अपने महबूब को क़ुर्आन सिखाया ---- अब यह सिखाना हम जैसों सा तो नहीं होगा कि कभी कुछ तिलावत पढ़ सीख ली कभी कुछ तर्जमा व तफ़सीर ---- अरे सिखाने वाले और सीखने वाले पर नज़र रखो सब समझ आ जाएगा

और बेकार की अड़ लगा लो कि वह हम जैसे ही बशर थे तो क्या ईमान बचा पाओगे अभी वक़्त है उनके इल्म का इन्कार करके उनकी तौहीन न करो।
अब्दुल्लाह : हज़रत बोलते रहिए ईमान ताज़ा हो रहा है।
मुफ़्ती साहब : डाक्टर से दवा लो फ़ायदा भी हो और उससे कहो कि तुम्हें इल्म नहीं है यह कहाँ की शराफ़त है। ज़रा एक मामूली पुलिस वाले से कहो कि तुम्हारा इल्म ज़ाती तो हो नहीं सकता अताई है और ऐसा अताई इल्म तो पागलों और बच्चों को भी होता है तो शायद ज़बान से नहीं अपने बेंत से समझाएगा।
अब्दुल्लाह : और हदीसों से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का कितना इल्म साबित है।
मुफ़्ती साहब : हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को तमाम अव्वलीन व आख़रीन का इल्म अता फ़रमाया गया ----- मशरिक़ से मग़रिब तक, अर्श से फ़र्श तक सब उन्हें दिखाया, आसमानों व ज़मीन का गवाह बनाया ------ रोज़े अव्वल से रोज़े आख़िर तक सब माकान व मायाकून (जो कुछ हो चुका और जो होने वाला है) सब उन्हें बताया।
अब्दुल्लाह : कुछ मरदूद कहते हैं कि उन्हें दीवार पीछे का इल्म नहीं।
मुफ़्ती साहब : ऐसा मानने वाले वाक़ई मरदूद व काफ़िर व मुरतद हैं।
अब्दुल्लाह : इल्मे ग़ैब के बारे में बहुत कुछ मालूम हो गया अब किसी दूसरे टापिक पर आते हैं लेकिन एक बात और बतायें यह जो क़ुर्आन में आया कि पानी कब बरसेगा, माँ के पेट में क्या है, कल क्या होगा, कौन कब मरेगा, क़ियामत कब आएगी इसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को है।
मुफ़्ती साहब : वही जवाब है कि जब अल्लाह पाक ऐसा फ़रमाए तो समझो कि यह ज़ाती इल्म की बात है।
अब्दुल्लाह : मौसम विभाग तो पहले ही बता देता है कि पानी कब बरसेगा तूफ़ान कब आएगा, माँ के पेट में लड़का है या लड़की यह अल्ट्रासाउन्ड से पता चल जाता है क्या यह शिर्क होगा।
मुफ़्ती साहब : हांलाकि मौसम विभाग का अनुमान ग़लत भी हो सकता है मगर मौसम विभाग जो पेशीनगोई करता है वह किसी उपकरण के वसीले होता है और यह अताई इल्म से है और अल्लाह ही की अता है जो इसे अल्लाह की अता न मान कर सिर्फ़ साइंसी ईजाद माने वह अपने लिए ख़ुद ही समझ ले कि क्या हुक्म है। अरे जिनकी मुबारक उंगलियों से पानी

के चश्मे जारी हो जायें जिनकी दुआ से लगातार हफ़्ते भर पानी बरसे उनसे पानी बरसने जैसा इल्म छुपाया जाएगा हाँ छुपाने का हुक्म दिया जा सकता है और ऐसा ही। बिल्कुल यही बात अल्ट्रासाउन्डा से माँ के पेट या पेट के दूसरे हाल बताना सब अल्लाह की अता से है।

अब्दुल्लाह : क्या कभी हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने पेट का हाल बताया।

मुफ़्ती साहब : हाँ बल्कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ख़ास यार हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपनी बेटी हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से फ़रमाया ऐ बेटी जो बाग़ तेरे पास है उसमें तेरी बहनों का भी हिस्सा है जबकि वह बहन अभी माँ के पेट में थीं। यहाँ तो कोई अल्ट्रासाउन्ड भी नहीं अल्लाह के अता किए हुए इल्म से ही था।

अब्दुल्लाह : मरने के बारे में।

मुफ़्ती साहब : हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने जंगे बदर में एक दिन पहले ही बता दिया था कि कौन कहाँ मरेगा और वह वहीं मरा। --- इसके अलावा आप तो यह भी जानते हैं कि कौन जन्नत में जाएगा कौन जहन्नम में।

अब्दुल्लाह : क़ियामत के इल्म के बारे में वज़ाहत करें।

मुफ़्ती साहब : हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को क़ियामत का इल्म भी है मगर उसे छुपाने का हुक्म था।

अब्दुल्लाह : मश्हूर है कि क़ियामत तो अशरे को जुमा के दिन आयेगी।

मुफ़्ती साहब : हाँ बेशक इसी बात से साबित कि हमारे हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को क़ियामत का इल्म है तभी तो उन्होंने दिन व महीना व तारीख़ बता और सन् छुपा कर बात भी छुपा दी यानी अल्लाह ने उन्हें यही हुक्म दिया कि बस इतना ही बताना है। अब अगर हम उसी बात पर अड़े रहें कि तो ख़ुद ही फंस गए कि कहाँ जायें और ज़ाती व अताई का फ़र्क़ समझ लें तो सब बात हल अक़ीदा दुरुस्त।

अब्दुल्लाह : काश हम इतनी सी बात को साफ़ कर लें कि ज़ाती व अताई का फ़र्क़ समझ ले।

मुफ़्ती साहब : अरे उन्हें तो यह भी मालूम है कि क़ियामत में क्या क्या होगा, कौन जन्नत में जाएगा और कौन जहन्नम में और कब किस किस को आप जहन्नम से निकाल कर लायेंगे। लोग किस किस के पास मदद को जायेंगे। अब ज़रा अक़्ल से सोचो कि क्या अल्लाह ने उनसे सन् छुपाई या छुपाने का हुक्म दिया और बिलफ़र्ज़ यह मान भी लिया जाए कि उन्हें

सन् नहीं मालूम तो हमने कब यह दावा किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म अल्लाह के बराबर है या कुल इल्म आपको है कुल इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह ही को है। --- मख़लूक़ में जितना भी इल्म किसी को मिलता है तो क्या वह सबका सब दूसरों को बता देता कुछ बताता है कुछ भूलता है कुछ जानबूझ कर नहीं बताता। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भूले नहीं जहाँ दिन तारीख़ महीना बताया वहाँ सन् भी बता सकते थे बल्कि छुपाने का हुक्म था।

अब्दुल्लाह : एक बात और यह बतायें कि जहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ख़ुद यह कहा कि मुझे नहीं मालूम यानी इससे ज़ाहिर हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को नहीं मालूम ----- आपने किसी से पूछा कि यह क्या है या वह क्या है तो इससे भी यही मालूम होता है कि उन्हें मालूम नहीं या इल्म नहीं।

मुफ़्ती साहब : अब जो ऐब ही निकालना चाहे और उसके नफ़्स की शामत जब अबू जहल जैसे के हाथ में कंकरियों ने कलिमा पढ़ा और वह न माना। --- फिर भी इसका वही जवाब कि हमारा दावा कुल इल्म का नहीं दूसरे हुज़ूर के ऐसा फ़रमाने का मतलब अपने लिए ज़ाती इल्म का इन्कार है ------ रहा सवाल पूछने की बात तो पूछने से हर बार यह साबित नहीं होता कि इल्म नहीं। क़ुर्आन में आया कि अल्लाह पाक ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम से पूछा कि ऐ मूसा तुम्हारे हाथ में क्या है तो आपने जवाब दिया कि मेरे हाथ में असा है मैं इससे टेक लगाता हूँ दरख़्त से पत्ते तोड़ लेता हूँ जानवर को भगा देता हूँ। अब ज़रा सोचिए कि क्या अल्लाह तआला को नहीं मालूम कि हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम के हाथ में क्या है। हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम ने यह क्यूँ न कहा कि ऐ अल्लाह तू जानता है फिर क्यूँ पूछ रहा है बल्कि असा के काम गिना दिए जबकि अल्लाह तो सब जानता है। ------ अल्लाह ने शैतान से पूछा कि तूने सजदा क्यूँ नहीं किया क्या अल्लाह को नहीं मालूम था। मतलब यह कि हर बार ऐसा नहीं है कि पूछने वाला अन्जान हो।

अब्दुल्लाह : एक एतराज़ कुछ लोग करते हैं कि मुनाफ़क़ीन ने जब हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा पर तोहमत लगाई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम परेशान रहे अगर आपको इल्मे ग़ैब होता तो क्यूँ कई दिन तक अपनी बीवी के बारे में ख़ामोश रहते?

मुफ़्ती साहब : बुख़ारी शरीफ़ में है हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हा के हक़ में आपकी पाकी की आयत

नाज़िल होने से पहले आपने इरशाद फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम मैं अपनी बीवी के मुताल्लिक़ सिवाए अच्छाई और पाक दामनी के और कुछ नहीं जानता। --- परेशान होने की वजह यह घिनौना झूटा इल्ज़ाम था और जब इल्ज़ाम झूटा हो तो कौन न परेशान होगा। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ख़ामोशी में राज़ यह भी था कि गवाही अल्लाह की आना थी और मुनाफ़ेक़ीन का निफ़ाक़ खुलना था। अगर आपको इल्म न होता तो आप क़सम न खाते।

अब्दुल्लाह : फ़िरिश्ते अल्लाह तआ़ला का लश्कर हैं और अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला के सिवा उनके लश्कर को कोई नहीं जानता।

मुफ़्ती साहब : तमाम फ़िरिश्ते नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर दुरूद भेजते हैं और नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम सुनते हैं तो क्या उनको तादाद न मालूम होगी। और मशहूर हदीस है कि 70000 फ़िरिश्ते रोज़ अल्लाह तआ़ला पैदा फ़रमाता है जो आपकी बारगाह में हाज़री देते और दुरूद पढ़ते हैं और दोबारा नहीं आते। काश ज़ाती व अताई का फ़र्क़ समझ लेते तो यह न कहते।

अब्दुल्लाह : जंगे ख़ैबर की फ़तह के बाद यहूदियों ने एक औरत को ज़हर आलूदा गोश्त लेकर नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के पास भेजा और आपने उसे खाया अगर आपको इल्मे ग़ैब होता तो क्यूँ खाते?

मुफ़्ती साहब : काश बुख़ारी शरीफ़ की पूरी हदीस पढ़ी होती कि इसमें यह भी है कि उन यहूदियों के बापों के नाम आपने सही बता दिए जो कि वो छुपा रहे थे। और आपने उस औरत को बता दिया कि इस गोश्त ने मुझे बताया है कि तूने ज़हर मिलाया है। वह औरत आपके नबी होने का इम्तहान लेने आई थी कि अगर आप नबी होंगे तो गोश्त नुक़सान न करेगा। लिहाज़ा आपने खाया और नुक़सान न हुआ और आप सच्चे साबित हुए। इस हदीस से तो आपका सच्चा होना और इल्मे ग़ैब दोनों साबित होते हैं।

अब्दुल्लाह : एक एतराज़ यह भी है कि मिश्कात शरीफ़ में है कि नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने एक मरतबा फ़रमाया कि क़ियामत के दिन कुछ लोग मेरे सहाबा में पकड़े जायेंगे और फ़िरिश्ते उनको पकड़ कर जहन्नम की तरफ़ ले जा रहे होंगे तो मैं कहूंगा कि ऐ मेरे रब ये तो मेरे सहाबी हैं तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि ऐ मेरे महबूब आप नहीं जानते कि आपके बाद ये लोग क्या करते रहे? इस हदीस से साबित हुआ कि हुज़ूर को मुनाफ़ेक़ीन का इल्म नहीं था।

मुफ़्ती साहब : काश ऐसे एतराज़ करने से पहले ज़रा ग़ौर कर लेते कि यह होगा अभी हुआ नहीं और हुज़ूर ने पहले ही ख़बर दे दी तो यह ग़ैब नहीं तो और क्या है। तफ़सीर ख़ाज़िन जिल्द अव्वल में है कि अल्लाह ने आपको मुनाफ़ेक़ीन के मक्र व फ़रेब का भी इल्म दिया था। रहा बख़्शिश का सवाल तो यह सभी मानते हैं कि मुनाफ़ेक़ीन और बेईमान न बख़्शे जायेंगे।

अब्दुल्लाह : मेरे ख़्याल से काफ़ी हो गया अब टापिक चेंज करा जाए। बात साफ़ हो चुकी। और फिर जिस पर क़ुर्आन उतरा उसे क्या क्या न अता होगा।

मुफ़्ती साहब : जी बिल्कुल सही फ़रमाया। आख़िर में यह भी सुन लीजिए कि कुछ हदीसों का मफ़हूम है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने क़ियामत तक जो होने वाला है, जन्नितयों के जन्नत में जाने और दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में जाने तक की बातें बताईं जिसे जो याद रहा उसने याद रखा। हवाले भी सुन लीजिए 1. सहीहैन बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रते हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है। 2. अहमद ने मुसनद में, बुख़ारी ने तारीख़ में, तबरानी नें कबीर में हज़रते मुग़ीरा इब्ने शैबा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया 3. सही बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रते उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। ------ मेरे ख़्याल से क़ुर्आन हदीस अक़्ली दलाइल से साबित हो गया हमारे आक़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम को अल्लाह ने इल्मे ग़ैब तमाम मख़लूक़ से ज़्यादा अता फ़रमाया। नबी के मअना ही ग़ैब की ख़बर देने वाला है और फिर जिसके ज़रिए इतना बड़ा काम होना है तो क्यूँ न उसे इल्म ताक़त और इख़्तेयार दिया जाएगा।

हाज़िर ओ नाज़िर

अब्दुल्लाह : हाज़िर ओ नाज़िर के शरई माअना क्या हैं?

मुफ़्ती साहब : आसान लफ़्ज़ों में हाज़िर को यूँ कहें कि हाज़िर वह है जो एक जगह बैठे हुए ही उस जगह पहुँच सके या मौजूद हो और उस जगह पर तसर्रुफ़ कर सके (यानी काम या मदद कर सके) जहाँ के लिए उसे हाज़िर कहा गया और नाज़िर वह जो अपनी आँख से उसे वह देख रहा हो जहाँ के लिए उसे नाज़िर कहा गया है।

अब्दुल्लाह : एक जगह से बैठे हुए देखे वह कैसे?

मुफ़्ती साहब : बल्कि एक जगह से बैठे हुए तमाम आलम को ऐसे देखे जैसे अपने हाथ की हथेली को देखता है।

अब्दुल्लाह : अच्छा! देखे भी और पहुँच भी जाए और कोई काम या मदद भी कर सके।

मुफ़्ती साहब : जी हाँ! देखे ही नहीं बल्कि एक ही आन (चन्द सेकेण्ड) में तमाम आलम की सैर करे और मीलों दूर के हाजतमन्दों की हाजत पूरी करे और रफ़्तार सिर्फ़ रूहानी हो या जिस्मे मिसाली के साथ हो या उसी जिस्म से जो क़ब्र में दफ़्न है या किसी जगह मौजूद हो।

अब्दुल्लाह : क्या यह ऐसा बुनियादी अक़ीदा है कि इसका इन्कार करने वाला काफ़िर हो जाएगा?

मुफ़्ती साहब : नहीं हाज़िर ओ नाज़िर के अक़ीदे का इन्कार करने वाले को काफ़िर नहीं कहा जएगा।

अब्दुल्लाह : क्या क़ुर्आन से हाज़िर ओ नाज़िर के अक़ीदे का सुबूत मिलता है?

मुफ़्ती साहब : हाज़िर ओ नाज़िर के सुबूत में कुछ आयते क़ुर्आनी का तर्जमा पेश है :-

1. ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले बेशक हमने तुमको भेजा हाज़िर नाज़िर और ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता और अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़ताब।

2. और अगर जब वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों फिर अल्लाह से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअत फ़रमा दें तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पायें।

3. और हमने तुमको न भेजा मगर रहमत सारे जहाँ के लिए --- और दूसरी जगह फ़रमाया मेरी रहमत हर चीज़ को घेरे हुए है।

4. नबी मुसलमानों से उनकी जानों से ज़्यादा क़रीब हैं।

इन आयात से साबित हुआ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ग़ैब की ख़बर देने वाले, हमें अल्लाह का डर सुनाने वाले, अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले, शफ़ाअत करने वाले, हमारी जान से ज़्यादा क़रीब, हमें हर आन देखने वाले, हमारी हर आन बातें सुनने वाले, हमारी मदद करने वाले जब चाहें, हमारे लिए ही नहीं तमाम आलम के लिए रहमत और हाज़िर ओ नाज़िर हैं।

अब्दुल्लाह : कुछ हदीसें जिनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब और हाज़िर ओ नाज़िर का सुबूत मिलता है सुनाईये

मुफ़्ती साहब : चन्द हदीसें हाज़िरे ख़िदमत हैं :-

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं तमाम आलम को अपनी हथेली की तरह देख रहा हूँ। हम पर हमारी उम्मत अपनी सूरतों में पेश हुई और हम उनके नाम

उनके बाप दादाओं के नाम उनके घोड़ों के रंग जानते हैं वग़ैरह वग़ैरह।

2. क़ब्र में फ़िरिश्ते पूछते हैं कि तुम उनके बारे (मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) में क्या कहते थे।

3. एक शब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम घबराए हुए बेदार हुए फ़रमाते थे कि सुब्हानल्लाह इस रात में किस क़द्र ख़ज़ाने और किस क़द्र फ़ितने उतारे गए हैं।

4. हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारी मुलाक़ात की जगह हौज़े कौसर है उसको इसी जगह से देख रहा हूँ।

5. हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मदीने पाक की एक पहाड़ी पर खड़े हो कर सहाबए किराम से पूछा कि जो मैं देख रहा हूँ क्या तुम भी देखते हो? अर्ज़ किया कि नहीं। फ़रमाया मैं तुम्हारे घरों में बारिश की तरह फ़ितने गिरते हुए देखता हूँ।

अब्दुल्लाह : वहाबी लोग इस बारे में क्या कहते हैं?

मुफ़्ती साहब : उनके यहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हाज़िर ओ नाज़िर मानना कुफ़्र व शिर्क है।

अब्दुल्लाह : हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हाज़िर ओ नाज़िर कहने से अल्लाह तआला से बराबरी नहीं हो रही है क्या?

मुफ़्ती साहब : नहीं। वह इस लिए कि अल्लाह तआला को हाज़िर ओ नाज़िर कहना जाइज़ नहीं। वह इसलिए कि अल्लाह तआला जगह व मकान से पाक है और अल्लाह नाज़िर है मगर अल्लाह आँख से नहीं देखता लिहाज़ा अल्लाह के लिए आँख से देखना नहीं। (अल्लाह की शान इससे कहीं ज़्यादा अरफ़ा व आला है यह हमारी समझ से बाहर है अल्लाह व रसूल ही जानें)

अब्दुल्लाह : कुछ लोग घर में जाते हैं तो नबी पर सलाम अर्ज़ करते हैं क्या इसी लिए कि आप हाज़िर ओ नाज़िर हैं?

मुफ़्ती साहब : शिफ़ा शरीफ़ में है जब घर में कोई न हो तो तुम कहो कि ऐ नबी तुम पर सलाम और अल्लाह की रहमतें और बरकतें हों।

अब्दुल्लाह : क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ज़िन्दा हैं और हमें देख रहे हैं?

मुफ़्ती साहब : हर नबी ज़िन्दा हैं उन्हें सिर्फ़ एक आन के लिए मौत आती है। इमाम क़ुस्तलानी मवाहिब में फ़रमाते हैं हमारे उलमा ने फ़रमाया हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी और वफ़ात में कोई फ़र्क़ नहीं अपनी उम्मत को देखते हैं और उनके

हालात नियतों, इरादों और दिल की बातों को जानते हैं यह आपको बिल्कुल ज़ाहिर हैं इसमें पोशीदगी नहीं।

अब्दुल्लाह : क्या मस्जिद में जाने पर भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सलाम करना चाहिए और दुरूद भी पढ़ना चाहिए?

मुफ़्ती साहब : इमाम ग़ज़ाली रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब तुम मस्जिदों में जाओ तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम को सलाम अर्ज़ करो क्यूँकि आप मस्जिदों में मौजूद हैं।

अब्दुल्लाह : आपने बताया था कि नमाज़ में हुज़ूर के ख़्याल आने को वहाबी बुरा जानते हैं। मैंने सुना है कि नमाज़ चूंकि अल्लाह ही के लिए ख़ास इबादत है इसलिए वहाबियों का कहना है कि किसी और का ख़्याल लाना शिर्क होता है ---- हमारे बुज़ुर्गों नें भी इस बारे में कुछ लिखा है

मुफ़्ती साहब : नमाज़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ख़्याल आने के कुछ क़ौल ये हैं जिनसे हुज़ूर के हाज़िर ओ नाज़िर होने का सुबूत भी मिलता है।

1. मदारिजुन्नुबुव्वत में है बाज़ आरफ़ीन ने कहा है कि अत्तहिय्यात में यह ख़िताब इसलिए है कि हक़ीक़ते मुहम्मदिया मौजूदात के ज़र्रा ज़र्रा में और मुमकिनात के हर फ़र्द में सरायत किए हुए है पस हुज़ूर अलैहिस्सलाम नमाज़ियों की ज़ात में मौजूद और हाज़िर हैं नमाज़ी को चाहिए कि इस माना से आगाह रहे और इस से ग़ाफ़िल न रहे ताकि क़ुर्ब के नूर और मारिफ़त के भेदों से कामयाब हो जाए।

2. इहयाउल उलूम में इमाम ग़ज़ाली फ़रमाते हैं नमाज़ के क़ादा में 'अत्तहिइयात' में जब नबी को सलाम करने का वक़्त आए तो अपने दिल में नबी अलैहिस्सलम को और आपकी ज़ाते पाक को हाज़िर जानो और कहो "अस्सलामुअलैका अय्युहन्नबीय्यु व रहमतुल्लाहि व बराकातुह"

3. हुज़ूर अलैहिस्सलाम को नमाज़ में ख़िताब किया गया गोया कि यह इस तरफ़ इशारा है कि अल्लाह तआला आपकी उम्मत में नमाज़ियों का हाल आप पर ज़ाहिर फ़रमा देता है हत्ताकि आप मिस्ल हाज़िर के होते हैं उसके आमाल को समझने में और इसलिए कि आप की हाज़री का ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ की ज़्यादती का सबब हो जाए।

अब्दुल्लाह : हुज़ूर सल्लल्लाहु तअेला अलैहि वसल्लम के अलावा भी किसी और को हाज़िर ओ नाज़िर कह सकते हैं?

मुफ़्ती साहब : हाज़िर ओ नाज़िर की परिभाषा के तहत अगर देखें तो मख़लूक़ में कुछ और भी हस्तियाँ हाज़िर ओ नाज़िर है तीन मिसाल पेश करता हूँ समझने के लिए काफ़ी हैं जैसे :-

1. मलिकुल मौत के लिए सारी ज़मीन तश्त की तरह कर दी गई है कि जहाँ से चाहें लें ---- उन्हें रूहें कब्ज़ करने में कोई दुश्वारी नहीं अगरचे रूहें ज़्यादा हों और अलग अलग जगहों पर हों।
2. जब हम सोते हैं तो हमारी रूह जिस्म से निकल कर आलम में सैर करती है, अचानक जब कोई हिलाता है तो एक आन में रूह वापस आ जाती है।
3. हज़रते जिब्रील का एक आन में हाज़िर व नाज़िर होना।
अब्दुल्लाह : इस तरह क्या शैतान को भी हाज़िर व नाज़िर कह सकते हैं?
मुफ़्ती साहब : शैतान मख़लूक़ को बहकाने के लिए सबको देख रहा है और हर जगह पहुँच जाता है यहाँ तक कि दिलों में वसवसे डालता है

और अल्लाह ने उसे बहुत ताक़त दी है मगर इसको हाज़िर व नाज़िर कहना मना है।
अब्दुल्लाह : हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और नबियों के ज़िन्दा होने के सुबूत में कोई ऐसा हवाला दें जिन्हें वहाबी भी मानतें हों?
मुफ़्ती साहब : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत पर शाह मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी की लिखी किताब मदारिजुन्नुबुव्वत के हिस्सा अव्वल के सफ़ा 576 पर लिखा है "अल्लाह के नबी दुनियावी ज़िन्दगी की हयात के साथ ज़िन्दा हैं"
अब्दुल्लाह : अगर कोई यह कहे कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ज़िन्दा हैं हाजिर ओ नाज़िर है तो दिखाई क्यूँ नहीं देते।
मुफ़्ती साहब : जिस तरह जिन्न व फ़िरिश्ते और कुछ और अल्लाह की मख़लूक़ जैसे हवा, ख़ुशबू, बदबू, मज़ा, सोचना, महसूस-करना, आवाज़, बिजली का करन्ट, तस्वीरों का आना जाना, इन्टरनेट वग़ैरह हमें दिखाई नहीं देते। इसी तरह अम्बिया व औलिया भी मरने के बाद ज़िन्दा हो जाते हैं और हमें दिखाई नहीं देते और अल्लाह की दी हुई ताक़त व अपने मरतबे के मुताबिक़ हाज़िर वा नाज़िर हैं।
अब्दुल्लाह : हाज़िर व नाज़िर के सुबूत में कुछ और अक़्ली दलाइल पेश करें
मुफ़्ती साहब : लिजिए बहुत से दलाइल सुनिये :-
1. हदीस में है कि दुनिया काफ़िर के लिए जन्नत है और मोमिन के लिए क़ैदख़ाना। मरने के बाद मोमिन बे रोक टोक जहाँ तक अल्लाह चाहे जाता आता है सैर करता है यानी अपनी हदों में हाज़िर व नाज़िर है।

2. अल्लाह की राह में जो लोग शहीद होते हैं उनका मरने के बाद ज़िन्दा रहना कुर्आन से साबित है।

3. अल्लाह की राह शहीद को मरने के बाद एक बहुत बड़ी जगह में हाज़िर व नाज़िर कहा जा सकता है।

4. हदीस में नफ़्स से जिहाद करने को शहीदे अकबर बताया गया है क्या इस बड़े जिहाद में कामयाब होने वाले भी ज़िन्दा हैं मसलन औलिया अल्लाह।

5. जब शहीदे असग़र व शहीदे अकबर ज़िन्दा हैं तो क्या अम्बिया भी ज़िन्दा और उनसे भी ज़्यादा दूर जाने आने वाले और सैर करने वाले है।

6. कसरत से दुरूद पढ़ने वाले को मिट्टी नहीं खाती यानी वह ज़िन्दा रहता है और उसकी रूह फिर जिस्म में लौट आती है और घूमता फिरता आता जाता सैर करता है जैसा अल्लाह चाहे लिहाज़ा वह अपनी हदों में हाज़िर वा नाज़िर है।

7. किसी ने हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा और अपना कोई पेचीदा मसअला उनसे पूछा और उन्होंने उसे जवाब दिया ज़ाहिर है जवाब सही है और एक ही वक़्त में हज़ारों लोगों के साथ ऐसा हुआ क्या इससे साबित होता है कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम हाज़िर व नाज़िर हैं।

8. मरने के बाद नई ज़िन्दगी आलमे बरज़ख़ में शुरू होती है जहाँ अज़ाब व सवाब होता है यह बात सभी के लिए कुर्आन व हदीस से साबित है और हर ख़ास व आम के लिए है और अज़ाब व सवाब जिस्म व रूह दोनों पर होता है। मरने के बाद शहीद आम लोगों से अफ़ज़ल हैं और तमाम नबी शहीदों से अफ़ज़ल हैं।

9. शिफ़ा शरीफ़ में है कि जब तुम किसी ख़ाली मकान में दाख़िल हो नबी (स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम) पर सलाम अर्ज़ करो क्यूँकि नबी की मुबारक रूह मकान के अन्दर तशरीफ़ फ़रमा है। क्या यह सही है।

10. जब मुसलमानों के घरों में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की रूह तशरीफ़ फ़रमा है तो क्या महफ़िले मीलाद में आप (स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम) की रूह नहीं आ सकती? बेशक आ सकती है और मुसलमानों के करोड़ों घर है लिहाज़ा आप हाज़िर व नाज़िर हैं।

11. हदीस में है कि जो मेरा ज़िक्र करता है मैं उसका हमनशीन होता हूँ --- और उनका ज़िक्र अज़ान में नमाज़ में तिलावते कुर्आन में हर जगह हो रहा है और इससे साबित होता है कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम हर ज़िक्र करने वाले

के पास हाज़िर वा नाज़िर हैं।

12. शबे मेराज तमाम नबियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की इमामत में नमाज़ पढ़ी। क्या इससे साबित होता है कि तमाम नबी अपने जिस्म के साथ ज़िन्दा हैं।

बशरियत

अब्दुल्लाह : कुछ लोग कहते हैं कि हम भी इन्सान हैं हुज़ूर भी इन्सान लिहाज़ा वह हम जेसे बशर हुए। हालांकि मैं समझता हूँ कि यह बेअदबी है वह तो सरापा नूर हैं, सबसे आला बशर अल्लाह के नूर हैं। उनकी बेमिस्ल बशरियत पर जो बशर तो हैं मगर हम जैसे बशर नहीं ऐसी रोशनी डालें कि ईमान ताज़ा हो जाए।

मुफ़्ती साहब : हालांकि आपके सवाल में ही आपका जवाब है मगर आपका तक़ाज़ा कुछ और है। --- जिस तरह अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी ज़ात में अकेला है उसका कोई शरीक और साझी नहीं एक ही उसने अपने महबूब को भी बेमिस्ल बनाया है। अल्लाह ने आपको अपने नूर से पैदा फ़रमाया और आपके नूर से तमाम मख़लूक़ को पैदा फ़रमाया। मख़लूक़ में अपकी मिस्ल आपकी तरह और आप के बराबर कोई न है न हुआ है और न होगा। आप सारे औसाफ़ में सबसे जुदा हैं आपकी शान निराली है आपकी ज़ात अनोखी है आपकी हर अदा बेमिसाल है आपको अपने जैसा बशर कहना या समझना कुफ़्र है क्यूँकि यह क़ुर्आन हदीस की मुख़लिफ़त है। अब मैं आपको सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की चन्द ख़ुसूसियात बताता हूँ जो कि क़ुर्आन और हदीसों से साबित हैं जिसमे जवाब भी हो जाए और ईमान को ताज़गी भी मिले।

*** अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि ऐ महबूब अगर आपको पैदा न करना होता तो कुछ पैदा न करता यहाँ तक कि अपना रब व इलाह (माबूद, पूजा के क़ाबिल) होना भी ज़ाहिर न करता।

*** आप पैदाइश के एतबार से 'अव्वलुल अम्बिया' यानी सबसे पहले नबी हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को उस वक़्त नुबुव्वत मिल चुकी थी जबकि हज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम जिस्म व रूह की मन्ज़िलों से गुज़र रहे थे।

*** अल्लाह तआ़ला ने सबसे पहले आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के नूर को पैदा फ़रमाया और आपके नूर से तमाम मख़लूक़ात को पैदा फ़रमाया।

*** जिसको भी जो मिलता है हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के वसीले से ही मिलता है। हर नबी व वली आप ही से फ़ैज़ पाकर किसी मरतबे पर पहुँचता है।
*** आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं अल्लाह देने वाला है और मैं क़ासिम (बांटने वाला) हूँ।
*** अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का हक़ीक़ी मालिक है और हुज़ूर अल्लाह की अता से हर चीज़ के मालिक व मुख़्तार हैं बल्कि मुख़्तारे कुल हैं। अल्लाह तआ़ला ने अपनी शरीअत का आपको मुख़्तार बना दिया है। आप जिसके लिए जो चाहें हलाल फ़रमा दें और जिसके लिए जो चाहें हराम फ़रमा दें। मसलन हज़रते सुराक़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के लिए आपने सोने के कंगन पहनना हलाल कर दिए, एक आराबी के लिए तीन ही वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ फ़रमा दी, मौला अ़ली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के लिए हज़रते फ़ातिमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के होते दूसरा निकाह हराम फ़रमा दिया।
*** आप बादे विसाल भी ज़िन्दा हैं, नबियों को वादए इलाही के मुताबिक़ एक आन को मौत आती है। आप मदद फ़रमाते हैं, बलाओं व वबाओं को दूर फ़रमाते हैं। हुज़ूर से डाइरेक्ट मांगना भी जाइज़ है। आप जिसे जो चाहें अल्लाह के हुक्म से अता फ़रमाते हैं। आप मुर्दों तक को ज़िन्दा फ़रमाते हैं।
*** नबी के मअ़ना ही हैं ग़ैब की ख़बर देने वाला। तमाम नबियों को ग़ैब का इल्म दिया जाता है जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है कि अल्लाह किसी को ग़ैब का इल्म नहीं अता करता मगर चुन लेता है जिसे चाहे और उन्हें ग़ैब दिया जाता है। और बेशक चुनने में सबसे ज़्यादा हक़दार अम्बिया ही होते हैं और हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तो तमाम नबियों के इमाम हैं। आपको तमाम मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा इल्म और इल्मे ग़ैब अता हुआ यहाँ तक कि ख़ुद अल्लाह पाक ने अपने आपको भी आपसे नहीं छुपाया। आप क़ियामत तक की हर छुपी हुई बात जानते हैं बल्कि आपने क़ियामत, जन्नत व दोज़ख़ तक की बातें आने से पहले ही हमें बता दीं। यह सब कुछ अल्लाह की अता ही से है।
*** हमारे हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हाज़िर व नाज़िर है। इसका मतलब यह है कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब चाहें अपने जिस्म के साथ हर जगह हाज़िर हो सकते हैं और आप अपनी आंखों से सब कुछ देख रहे हैं यानी नाज़िर है। अर्श से फ़र्श तक आप हर जगह हाज़िर व नाज़िर हैं।
*** हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शफ़ाअत क़ुर्आन व हदीस से पूरी तरह साबित है। शफ़ाअत सिर्फ़ उनके

लिए नहीं जो शफ़ाअत का इन्कार करें।
*** आप आख़िरी नबी हैं।
*** आपका मुक़द्दस नाम अर्श और जन्नत की पेशानियों पर तहरीर किया गया।
*** तमाम आसमानी किताबों में आपकी बशारत दी गई।
*** आपकी विलादत के वक़्त तमाम बुत औंधे होकर गिर पड़े।
*** आपका शक़्क़े सदर हुआ यानी जिब्रीले अमीन ने आपका सीनए मुबारक चीर दिया और दिल निकाल कर उसको ज़मज़म शरीफ़ से धोकर फिर दुरुस्त कर दिया।
*** आपको मेराज का शरफ़ अता किया गया और आपकी सवारी के लिए बुराक़ पैदा किया गया।
*** आप पर नाज़िल होने वाली किताब तब्दील व तहरीफ़ से महफ़ूज़ कर दी गई यानी क़ुर्आने पाक में कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। क़ियामत तक क़ुर्आन की बक़ा व हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआ़ला ने अपने ज़िम्मे करम पर ली।
*** अपको आयतुल कुर्सी अता की गई।
*** आपको तमाम ज़मीनी ख़ज़ानों की कुंजियाँ अता कर के अल्लाह तआ़ला ने आपको मालिक बना दिया।
*** आपको जामेउल कलिम के मोजिज़े से सरफ़राज़ किया गया यानी आप छोटे जुमलों में वह बात कह देते जो कोई दूसरा नहीं कह सकता और अक़्ल की समझ से यह बात बाहर होती कि ऐसी बात कैसे कह दी।
*** आपको रिसालते आम्मा के शरफ़ से मुमताज़ किया गया यानी आप नबियों, फ़िरिश्तों, इन्सानों और जिन्नों सभी के रसूल हैं।
*** आपकी सच्चाई को साबित करने के लिए, आपको चाँद के दो टुकड़े करने का मोजिज़ा अल्लाह तआ़ला ने अता फ़रमाया।
*** आपके लिए माले ग़नीमत को अल्लाह तआ़ला ने हलाल कर दिया।
*** आपके लिए अल्लाह तआ़ला ने तमाम ज़मीन को मस्जिद बना दिया यानी हर पाक जगह पर आदमी नमाज़ पढ़ सकता है और उससे पाकी हासिल कर सकता है यानी तयम्मुम करना मिट्टी से जाइज़ किया गया।
*** आपके बाज़ मोजिज़ात मसलन क़ुर्आन मजीद क़ियामत तक बाक़ी रहेंगे।
*** अल्लाह पाक ने तमाम अम्बिया को उनका नाम लेकर पुकारा मगर आपको अच्छे 2 अल्क़ाब से पुकारा।

*** अल्लाह तआ़ला ने आपका सर 'हबीबुल्लाह' के लक़ब से बलन्द फ़रमाया।
*** अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने पाक में आपकी रिसालत, आपकी हयात, आपके शहर आपके ज़माने की क़सम याद फ़रमाई।
*** आप तमाम औलादे आदम के सरदार हैं।
*** आप अल्लाह पाक के दरबार में अकरमुल-ख़ल्क़ हैं यानी तमाम मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाले हैं।
*** क़ब्र में आपकी ज़ात के बारे में मुन्कर नकीर सवाल करेंगे।
*** आपके बाद आपकी बीवियों के साथ निकाह करना हराम ठहराया गया।
*** हर नमाज़ी पर वाजिब कर दिया गया कि नमाज़ की हालत में "अस्सलामुअ़लैका या अय्युहन्नबिय्यु" कह कर आपको सलाम करे।
*** अगर किसी नमाज़ी को नमाज़ की हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पुकारें तो वह नमाज़ छोड़ कर आपकी पुकार पर दौड़ पड़े। यह उस पर वाजिब है और ऐसा करने से उसकी नमाज़ टूटेगी भी नहीं यानी जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बात कर ले तो फिर वहीं से नमाज़ पढ़े जहाँ से छोड़ी थी।
*** आपके मिम्बर और क़ब्रे अनवर के दरमियान की ज़मीन जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।
*** सूर फूंकने पर सबसे पहले आप अपनी क़ब्रे मुनव्वर से बाहर तशरीफ़ लायेंगे।
*** आपको मक़ामे महमूद अता किया गया।
*** आपको शफ़ाअते कुबरा जैसी इज़्ज़त से नवाज़ा गया।
*** आपको क़ियामत के दिन लिवाउल ह़म्द अता किया गया। लिवाउल ह़म्द एक झंडा है जो रोज़े क़ियामत आपको अता होगा।
*** आप सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होंगे।
*** आपको हौज़े कौसर अता किया गया।
*** क़ियामत के दिन हर शख़्स का नसब व तअल्लुक़ मुन्क़ता हो जाएगा मगर आपका नसब व तअल्लुक़ मुन्क़ता न होगा।
*** आपके सिवा किसी नबी के पास हज़रते इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम नहीं उतरे।
*** आपके दरबार में बलन्द आवाज़ से बोलने वाले के नेक आमाल बरबाद कर दिए जाते हैं।
*** आपको हुजरों के बाहर से पुकारना हराम कर दिया गया।
*** आपकी अदना सी गुस्ताख़ी करने वाले की सज़ा क़त्ल है।

*** आपको तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम से ज़्यादा मोजिज़ात अता किए गए।

*** आख़िर में बस यही कहना है :

ज़मीन ो ज़माँ तुम्हारे लिये मकीन ो मकाँ तुम्हारे लिए
चुनीन ो चुनाँ तुम्हारे लिए बने दो जहाँ तुम्हारे लिए

अब्दुल्लाह : आपके फ़ज़्ल व कमाल के बारे में अगर बात की जाए तो अपनी तरह बशर कहने वालों के मुँह में ताले लग जायेंगे। ज़रा कुछ बयान करें।

मुफ़्ती साहब : हज़रते शाह अब्दुल अज़ीज़ अलैहिर्रहमह ने अपनी किताब तफ़सीर फ़तहुल अज़ीज़ में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फ़ज़्लो कमाल के बयान में 44 ख़ुसूसियात इस तरह ज़िक्र की हैं :-

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपनी पुश्त मुबारक से भी वैसे ही देखते थे जैसा कि अपनेसामने से देखते थे।

2. आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रात को और अंधेरे में भी वैसा ही देखते थे जैसा दिन में देखते थे।

3. आपके मुँह मुबारक का लुआब कड़वे पानी को मीठा कर देता।

4. दूध पीते बच्चे के मुँह में आप अपने दहन मुबारक से एक क़तरा टपकाते वह बच्चे सारा दिन दूध न मांगते और उनका पेट भरा रहता जैसा कि आशूरा के दिन अहले बैत के बच्चों पर तज्बा हुआ।

5. आपके बग़ल मुबारक निहायत सफ़ेद साफ़ शफ़्फ़ाफ़ थे उनमें बाल मुतलक़ न थे।

6. आपकी आवाज़ मुबारक इतनी दूर पहुँचती कि दूसरे लोगो की उससे सौवें हिस्से तक भी न पहुँचती इसी तरह आप इतनी दूरी से सुनते कि दूसरा कोई न सुन सकता।

7. आपकी आंखें मुबारक सो जातीं लेकिन दिल बेदार रहता।

8. सारी उम्र आपको बलग़म नहीं आया।

9. आपको कभी एहतिलाम न हुआ।

10. आपका पसीना मुबारक कस्तूरी से भी ज़्यादा ख़ुशबूदार था और वह भी इस हद तक कि अगर आप किसी गली में से गुज़र जाते तो लोग आपकी ख़ुशबू से आप तक पहुँच जाते थे।

11. किसी ने आपका फ़ुज़ला ज़मीन पर न देखा क्यूँकि ज़मीन उसे निगल लेती और वहाँ से कस्तूरी की तरह ख़ुशबू आती।

12. आप ख़तना किए हुए पैदा हुए।

13. आप नाफ़ कटे हुए पैदा हुए निहायत साफ़ किसी किस्म

की नजासत आपके जिस्म पर न थी।

14. विलादत के वक्त जब आप ज़मीन पर तशरीफ़ लाए उसी वक्त सजदा फ़रमाया और अपनी उंगली को आसमान की तरफ़ उठाया।

15. आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की विलादत के वक्त ऐसा नूर मुजल्ला हुआ कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की वालिदा मुहतरमा ने उसकी रोशनी में शाम के शहर देखे।

16. आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का झूला फ़िरिश्ते झुलाते थे।

17. चांद आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से झूले में बातें करता था।

18. गर्मी के मौसम में आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर बादल साया करता।

19. अगर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम किसी दरख़्त के पास तशरीफ़ लाते तो दरख़्त साये के लिए आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर झुक जाता।

20. आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का साया ज़मीन पर नहीं पड़ता।

21. आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को जूंए कभी नहीं पड़तीं।

22. आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के कपड़ों और जिस्मे अतहर पर कभी मक्खी नहीं बैठती थी।

23. अगर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम किसी जानवर पर सवारी फ़रमाते तो वह जानवर सवारी की मुद्दत पेशाब पाख़ाना नहीं करता।

24. आलमे अरवाह में आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही सबसे पहले पैदा हुए।

25. अल्लाह तआला ने जब फ़रमाया अलस्तु बिरब्बिकुम (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं) तो इसके जवाब में सबसे पहले आपने ही फ़रमाया 'बला' यानी बेशक तू ही हमारा रब है

26. मेराज की सैर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ ही मख़सूस है।

27. बुराक़ आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही की सवारी है।

28. आसमानों पर जाना और क़ाबा क़ौसैन तक पहुँचना और अल्लाह का दीदार करना सिर्फ़ आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ही लिए था।

29. आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ फ़िरिश्तों

का जंग में शरीक होना आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए ख़ास था।

30. चांद के दो टुकड़े कर देना और दूसरे कई ऐसे मोजिज़ात आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए ख़ास थे।

31. कियामत के दिन जो कुछ आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को दिया जाएगा और किसी को अता नहीं होगा।

32. सबसे पहले आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही क़ब्र से बाहर तशरीफ़ लायेंगे।

33. मैदाने हश्र में आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही बुराक़ सवार होंगे।

34. सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही के गिर्द परवानावार घूमते होंगे।

35. अर्शे आज़म की दाईं जानिब कुर्सी पर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही को जगह दी जाएगी।

36. मक़ामे महमूद आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ही अता होगा।

37. लिवाउल हम्द (अल्लाह तआला की हम्द व सना का झंडा) आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही के मुबारक हाथ में दिया जाएगा कि हज़रते आदम अलैहिस्सलाम और आपकी तमाम ईमानदार औलाद उसके नीचे होगी।

38. तमाम नबी अपनी उम्मत के साथ आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही के पीछे होंगे।

39. अल्लाह पाक का दीदार आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से ही शुरू होगा।

40. शफ़ाअत का सेहरा आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही के मुबारक सर पर होगा।

41. सबसे पहले पुलसिरात पर से आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही गुज़रेंगे और तमाम ख़लक़त को हुक्म होगा कि अपनी निगाहें नीची कर लें ताकि आपकी साहबज़ादी हज़रते फ़ातिमा रदियल्लाहु तआला अन्हा पुलसिरात से गुज़रें।

42. आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही जन्नत का दरवाज़ा खोलेंगे।

43. क़ियामत के रोज़ आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को वसीले के मरतबे पर मुशर्रफ़ किया जाएगा जो एक मरतबा है निहायत बलन्द कि मख़लूक़ में किसी और को मयस्सर नहीं।

44. और हक़ीक़त उसकी यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस दिन ख़ुदा वन्द तआला के हुज़ूर में बमन्ज़िला वज़ीर के होंगे। ------ आख़िर में लिखा कि और भी बहुत सी ख़ुसूसियात हैं जिनका गिनना बहुत

मुश्किल अल्लाह ही जाने उनके मर्तबे को।

मेरे ख़्याल से पिछले दो सवालों के जवाब में जो कुछ कहा गया तो अब शायद ही इसके सुनने के बाद आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बशर तो कहे मगर अपने जैसा बशर न कहे। फिर भी अगर कोई सवाल या वसवसा बाक़ी हो तो बतायें।

अब्दुल्लाह : फिर अल्लाह तआला ने उन्हें बश-रुम्मिस्लुकुम क्यूँ फ़रमाया?

मुफ़्ती साहब : क्यूँकि हुस्ने यूसुफ़ को देख कर औरतों ने उनकी बशरयित का इन्कार कर दिया और तू तो यूसुफ़ का भी इमाम है और तेरा नाम सुन कर अरब के मर्द गर्दनें कटायेंगे फिर कहीं तुझे कुछ और ही कहना न शुरू कर दें लिहाज़ा कह दे अना बश-रुम्मिस्लुकुम ------- हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम ने मुर्दे ज़िन्दा किए तो ईसाइयों ने ख़ुदा कहना शुरू कर दिया ऐ हबीब तू तो पत्थरों और दरख़्तों में जान डाल देगा कहीं तेरे बारे में भी लोग ऐसा न कहना शुरू कर दें लिहाज़ा फ़रमा दिया बश-रुम्मिस्लुकुम। ------ हज़रते इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने नमरूद से मुनाज़रा किया तो फ़रमाया अगर तू ख़ुदा है तो सूरज मग़रिब से निकाल। लोगों के ज़हन में यह बात आई कि शायद जो सूरज मग़रिब से निकाले उसे ख़ुदा कहा जा सकता है तो फ़रमाया ऐ महबूब तू तो सूरज को पल्टा देगा चांद के टुकड़े कर देगा तो कहीं लोग शक में न पड़ जायें लिहाज़ा कहलवा दिया बश-रुम्मिस्लुकुम ----- सहाबा ने आपसे आपको सजदा करने की इजाज़त मांगी तो सरकार ने फ़रमा दिया बश-रुम्मिस्लुकुम।

अब्दुल्लाह : वाह क्या नुकता बयान किया है वह न ख़ुदा हैं न ख़ुदा से जुदा हैं?

मुफ़्ती साहब : शैतान ने उन्हें बशर कहा और मरदूद हुआ। आज शैतान का कहना मानने वाले कुछ लोग उन्हें अपने जैसा बशर कह कर ईमान से हाथ धो बैठे हैं।

अब्दुल्लाह : बशर ज़रूर हैं मगर उन जैसा बशर कोई नहीं है कि जिसके शहर कलाम और बक़ा की क़सम अल्लाह ने कलामे मजीद में खाई।

मुफ़्ती साहब : सूरह बलद में है 'ऐ महबूब मैं इस शहरे मक्का की क़सम सिर्फ़ तेरी वजह से फ़रमाता हूँ। काश हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की सीरत को ग़ौर से पढ़ा होता इसलिए तो मैं कहता हूँ कि उनसे दीन सीखो सब मसअला हल है।

वसीला और ग़ैरुल्लाह से मदद

अब्दुल्लाह : सूरह फ़ातिहा में है "इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईन (तर्जमा : हम तुझी को पूजें तुझी से मदद चाहें)" --- इस आयत से तो यह साबित होता है कि किसी और से मदद मांगना ग़लत हमें सिर्फ़ अल्लाह से मांगना चाहिए और अल्लाह के सिवा किसी भी ज़िन्दा या मुर्दा से मांगना शिर्क है।

मुफ़्ती साहब : अगर यह अक़ीदा रखे कि कोई ज़िन्दा या साहिबे मज़ार अल्लाह की दी ताक़त से मदद करते हैं तो ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना सही है -----और अगर यह अक़ीदा रखे कि कोई ज़िन्दा या साहिबे मज़ार अपनी ताक़त से मदद करते हैं अल्लाह से माज़ल्लाह कोई मतलब नहीं तो शिर्क व कुफ़्र है।

अब्दुल्लाह : अल्लाह के अलावा किसी और से मदद मांगना शिर्क है मगर लोग ग़ैरुल्लाह से मदद मांगते हैं मसलन या रसूलल्लाह मदद कीजिए, या ग़ौस अलमदद वग़ैरह

मुफ़्ती साहब : सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और आपकी उम्मत के दूसरे वलियों से अपनी हाजत के हल के लिए मदद मांगना और उसके जवाब में उनकी तरफ़ से मदद होने का क़ाइल होना बिल्कुल जाइज़ है। तक़रीबन हर दौर में अल्लाह पाक ने ऐसे लोग पैदा फ़रमाए हैं जो बन्दों की मदद करते हैं और अल्लाह को यह पसन्द है कि मेरे महबूब बन्दों के पास मदद के वास्ते आओ।

अब्दुल्लाह : क्या अल्लाह तआला की ज़ात पाक के होते हुए किसी और से मदद मांगने की ज़रूरत है क्या अल्लाह तआला को छोड़ कर किसी और की तरफ़ आथ फैलाना दुरुस्त है क्या यह शिर्क नहीं है?

मुफ़्ती साहब : अल्लाह तआला के क़ादिरे मुतलक़ होने का कोई भी इन्कार नहीं कर सकता यक़ीनन वह हर चीज़ पर क़ादिर है ---- वह चाहे तो तमाम कायनात का कारोबार बग़ैर किसी वसीले के चला सकता है लेकिन उसको यूँही मन्ज़ूर है कि हर काम किसी न किसी वसीले से हो। जैसे नबियों से अपनी बात कहने के लिए उन पर फ़िरिश्तों के ज़रिए वही उतारी, बल्कि रोज़ी पहुँचाने, बारिश बरसाने, हवा चलाने, माँ के पेट में बच्चे की सूरत बनाने, मुर्दों से सवाल जवाब, रूह क़ब्ज़ करना, नामए आमाल लिखना, अज़ाब देना और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में सलाम पहुँचाना वग़ैरह के लिए फ़िरिश्ते वसीला हैं। अल्लाह चाहता तो सारे काम ख़ुद अकेले कर सकता है मगर उसकी मर्ज़ी यही है कि यह काम

और दूसरे काम किसी न किसी वसीले से हों। ----- तब्लीग़ करना, लोगों को ईमान की दावत देना और अल्लाह के पैग़ाम व अहकाम नबियों के वसीले से होते हैं अल्लाह चाहता तो ख़ुद सब काम अन्जाम देता।

दुनिया में मुल्क चलाने के लिए लीडर, बीमारी के इलाज के लिए डाक्टर हकीम, बीमारी ठीक करने को दवाइयाँ, हाजत पूरी करने के लिए माल व दौलत, सर्दी गर्मी से बचने के लिए कपड़े, ज़िन्दा रहने को खाना पीना (अल्लाह चाहे तो बग़ैर खाए पिए भी आदमी व जानवर ज़िन्दा रह सकता है) इल्म हासिल करने के लिए किताबें व टीचर, लड़ने को हथियार, दूर जाने को सवारियाँ वग़ैरह वग़ैरह।

अब्दुल्लाह : मेरा मतलब वसीले से नहीं मांगने से है?

मुफ़्ती साहब : अगर किसी फ़ैक्ट्री का मालिक अपने सुपरवाइज़र से हर महीने तन्ख़्वाह बटवाता है तो हक़ीक़त में तो यह मालिक ही का देना है सुपरवाइज़र तो बाटने वाला है हक़ीक़ी मालिक तो फ़ैक्ट्री वाला ही है।

अब्दुल्लाह : हाँ ठीक है तो शिर्क किस सूरत में है?

मुफ़्ती साहब : जब कोई यह समझे कि ग़ैरुल्लाह से मांगने में अल्लाह से कोई मतलब नहीं यह अपने पास से देता है जैसे कुफ़्फ़ार करते हैं तो यह शिर्क होगा। ---- और अगर यह अक़ीदा रखे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम या दूसरे वली अल्लाह की अता से देते है या मदद फ़रमाते हैं तो हरगिज शिर्क नहीं।

अब्दुल्लाह : इसका सुबूत क़ुर्आन में भी है?

मुफ़्ती साहब : सूरह माइदह में है नेकी और परहेज़गारी में एक दूसरे की मदद करो गुनाहों में मदद न करो। क्या अल्लाह तआला इस आयत में बन्दों को एक नाजाइज़ काम का हुक्म दे रहा है ---- और सूरह बक़रह में है कि सब्र और नमाज़ से मदद चाहो। नमाज़ को तो कोई यह कह सकता है कि यह तो अल्लाह से मदद मांगना है और सब्र तो ग़ैरुल्लाह ही है क्या अल्लाह बन्दों को नाजाइज़ बात का हुक्म देगा। हरगिज़ नहीं बल्कि यह नाजाइज़ है ही नहीं। ---- सूरह ताहा में है कि मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह पाक ने फ़िरऔन की तरफ़ तबलीग़ को भेजा तो आपने अल्लाह तआला से अर्ज़ की मेरे लिए मेरे घर वालों में एक वज़ीर कर दे, वह कौन मेरा भाई हारून, उससे मेरी कमर मज़बूत कर दे। ---- क्या मूसा अलैहिस्सलाम ने शिर्क कह दिया और अल्लाह पाक ने जवाब में यह नहीं कहा कि ऐ मूसा मेरे होते तुम यह शिर्क की बात क्यूं कह रहे हो और अल्लाह पाक ने ऐसा कहने पर मूसा

अलैहिस्सलाम पर कोई ग़ज़ब क्यूँ न फ़रमाया। मतलब यह है यह शिर्क था ही नहीं और न है।

अब्दुल्लाह : थोड़ा और क़ुर्आन ही से?

मुफ़्ती साहब : सूरह मुहम्मद में है अगर तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा। क्या अल्लाह तआला तबलीग़े दीने के लिए ग़ैरुल्लाह की मदद का मुहताज है ------- सूरह आले इमरान में कौन मेरे मददगार होते हैं अल्लाह की तरफ़। हवारियों ने कहा हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं। क्या हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम पर मदद मांगने और हवारियों पर मदद करने पर शिर्क का फ़तवा लगेगा। ------- सूरह अनफ़ाल में है वही है जिसने तुम्हें ज़ोर दिया अपनी मदद का और मुसलमानों का। ----- क्या जिन मुसलमानों की मदद देना अल्लाह ने पसन्द फ़रमाया वो ग़ैरुल्लाह नहीं ---- इसी सूरह में अल्लाह ने फ़रमाया ऐ ग़ैब की ख़बरें देने वाले नबी अल्लाह तुम्हें काफ़ी है और जितने मुसलमान तुम्हारे पैरू हुए ------ क्या अल्लाह ख़ुद काफ़ी नहीं था, अब क्या क़ुर्आन पर फ़तवा कोई लगा सकता है और इस क़िस्म की बेजा बातें क़ुर्आन के ख़िलाफ़ नहीं। ----- सूरह आले इमरान में मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिन्द की सी मूरत बनाता हूँ फिर उसमें फूंक मारता हूँ तो वह फ़ौरन परिन्द हो जाती है अल्लाह के हुक्म से और मैं शिफ़ा देता हूँ मादरज़ाद अंधे और सफ़ेद दाग़ वाले को और मैं मुर्दे जिलाता हूँ अल्लाह के हुक्म से। ---- अब अगर इस आयत की रोशनी में कोई मुसलमान यह अक़ीदा रखे कि नबियों के करम से शिफ़ा हासिल होती और मुर्दे ज़िन्दगी पाते हैं तो क्या यह शिर्क होगा। अगर हाँ (माज़ल्लाह) तो क्या अल्लाह ने एक शिर्क अक़ीदे की तरफ़ माइल किया। अगर नहीं तो फिर भोले मुसलमानों को बहकाना कैसा अल्लाह हमें ऐसी बातें करने से बाज़ रखे। -------- सुलैमान अलैहिस्सलाम का बिलक़ीस के तख़्त को अपने वज़ीर से मंगाना अल्लाह से दरख़्वास्त न करना क्या शिर्क है और फिर वज़ीर का पल भर में तख़्त का ने आना यानी मदद हो भी जाना क्या यह शिर्क है। ------ सूरह मरयम में है बोला मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूँ कि तुझे एक सुथरा बेटा दूँ। ------ बेटा देना अल्लाह का काम है या फ़िरिश्ते का हाँ हुक्म और अता हर जगह अल्लाह ही की है। इसी तरह अगर कोई यह कहे कि मेरे पीर ने या ख़्वाजा ने या ग़ौसे पाक ने बेटा दिया तो यह शिर्क न होगा हाँ अगर माज़ल्लाह कोई यह अक़ीदा रखे कि बग़ैर अल्लाह की अता से है तो ज़रूर शिर्क है मगर जाहिल से जाहिल देहाती गंवार भी यह अक़ीदा नहीं

रखता। ---- सूरह निसा में और अगर जब वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअत फ़रमाये तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पायें (और यह हुक्म क़ियामत तक के मुसलमानों के लिए है) --- क्या अल्लाह तआला ख़ुद गुनाह न बख़्श सकता है बल्कि वही बख़्शेगा फिर क्यूँ नबी की बारगाह में बुलाया जा रहा है उनसे मदद क्यूँ मंगवाई जारी है अल्लाह को यही पसन्द है।

अब्दुल्लाह : मैं समझता हूँ क़ुर्आन के बहुत हवाले हो गए अब कुछ हदीस से इरशाद फ़रमायें?

मुफ़्ती साहब : हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक बार हज़रते रबिआ इब्ने कअब रदियल्लाहु तआला अन्हुम से फ़रमाया आज कुछ मांग ले। उन्होंने अर्ज़ की मैं आपसे जन्नत में आपका पड़ोस मांगता हूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसके अलावा कुछ और भी। अर्ज़ की बस यही। फ़रमाया तू अपनी ज़ात पर कसरते सुजूद से मेरी मदद कर। ----- जंगे ख़न्दक़ के मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते जाबिर रदियल्लाहु तआला अन्हु को अपना हवारी (यानी मददगार) फ़रमाया। ------- हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बेशुमार मोजिज़ात हैं जिसमें सहाबाए किराम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास मदद मांगने आए और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कभी भी यह न फ़रमाया कि अल्लाह से कहो मुझसे मदद मांगना शिर्क होगा। जैसे दम करके, लुआबे दहन लगा के, दुआ करके, अपना मुबारक हाथ लगा के आपने अल्लाह की अता से सहाबियों की मदद फ़रमाई। शायद ही कोई सहाबी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मदद लेने से बचा होगा बल्कि सबसे बड़ी दौलत हमें और तमाम मुसलमानों को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वसीले से उनकी मदद से ईमान मिला सब अल्लाह ही की अता से है। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं ही हूँ जो जन्नत का दरवाज़ा खोलूंगा। ------ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा नाम अहीद इस लिए हुआ कि मैं अपनी उम्मत से दोज़ख़ की आग को दूर फ़रमाता हूँ। ईमान मिलना, जन्नत में ले जाना, दोज़ख़ से आज़ाद कराना यह सब आपकी मदद व वसीला नहीं तो और क्या है। बात वही है अल्लाह ने अपने महबूब को इख़्तेयार दिया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और तमाम नबी तमाम

औलिया सब अल्लाह की देन व अता से ही मदद फ़रमाते हैं।

अब्दुल्लाह : मैंने सुना है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ फ़ातिमा यह न समझना कि तुम मेरी बेटी हो तुमसे भी आमाल की पुरसिश होगी।

मुफ़्ती साहब : हज़रते फ़ातिमा रदियल्लाहु तआला अन्हा जन्नत की औरतों की सरदार हैं ऐसा भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया और आपके फ़ज़ाइल में हदीसें भरी पड़ी हैं तमाम सहाबा के गुनाह हमारी नेकियों से अफ़ज़ल हैं तो क्या इनसे सवाल होने का मतलब यह निकालना कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम किसी की मदद नहीं फ़रमायेंगे कि वह तो अपनी बेटी की भी मदद न फ़रमायेंगे। कुछ मरदूद बस ऐब ही ढूंढने की कोशिश करते हैं और वह हदीस भूल जाते हैं कि जब तमाम मख़लूक़ रोज़े क़ियामत तमाम नबियों के पास जाने के बाद आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास आकर ही नजात पायेंगे। अब शायद आप यह पूछेंगे कि तो फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ऐसा क्यूँ फ़रमाया। हक़ीक़त में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ऐसा फ़रमाना उम्मत को समझाने के लिए है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत का यह मतलब न निकाल लें कि अब गुनाह करने की छूट और नेकियाँ करने की कोई ज़रूरत ही नहीं। रही।

अब्दुल्लाह : हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बात तो ठीक है अब ज़रा इस बात पर रौशनी डालें कि वफ़ात के बाद भी आप मदद फ़रमाते हैं और ऐसा करना भी जाइज़ और अल्लाह के वली से मदद मांगना भी सही है और वह मदद करते हैं यह शिर्क नहीं है या कब यह शिर्क होगा।

मुफ़्ती साहब : औलियाए किराम (बहुत से वली) के बारे में बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस सुनिए हज़रते अबू हुरैरह रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फ़रमाने आलीशान है कि अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया जो मेरे किसी वली से दुश्मनी रखे तो मैं उसके ख़िलाफ़ ऐलाने जंग करता हूँ और मेरा बन्दा मेरी फ़र्ज़ की हुई महबूब चीज़ों से ज़्यादा किसी चीज़ से मेरा क़ुर्ब हासिल नहीं करता और वह नवाफ़िल के ज़रिए मेरा क़ुर्ब हासिल करता है हत्ताकि मैं उसे अपना महबूब बना लेता हूँ और जब उसे अपना महबूब बना लेता हूँ तो उसकी समाअत (सुनना) बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है उसकी बसारत बन जाता हूँ जिससे वह देखता है, उसका हाथ बन

जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है और उसका पैर बन जाता हूँ जिससे वह चलता है और अगर वह मुझसे सवाल करे तो मैं उसे ज़रूर ज़रूर अता करता हूँ और अगर वह मेरी पनाह तलब करे तो मैं ज़रूर ज़रूर उसे अपनी पनाह अता करता हूँ।

अब्दुल्लाह : समाअत, बसारत, हाथ और पांव बन जाना ज़रा वज़ाहत करें कुछ समझ नहीं आ रहा।

मुफ़्ती साहब : इस हदीस शरीफ़ में अल्लाह तआला के समाअत, बसारत, हाथ और पांव बन जाने से इसके ज़ाहिरी मअना मुराद नहीं हैं बल्कि इसकी शरह में बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि मतलब यह है कि अब उसके सारे काम बनते चले जाते हैं उसके ज़बान से निकली बात पूरी होती है वह अपनी आंखों से वह देखता है जो दूसरे इन्सान नहीं देखते वह अपने कानों से वह सुनता है जो दूसरे नहीं सुन सकते वह अपने पैरों से एक क़दम में न जाने कहाँ कहाँ जाता है वग़ैरह वग़ैरह ----- इस हदीस पाक में इन अलफ़ाज़ों की बड़ी अहमियत है कि अगर वह मुझसे सवाल करता है तो मैं उसे ज़रूर ज़रूर अता करता हूँ और अगर वह मेरी पनाह तलब करे तो मैं ज़रूर ज़रूर उसे अपनी पनाह अता करता हूँ। ------ लिहाज़ा इस हदीसे पाक से यह बात साफ़ हो गई कि अगर आम लोग इन अल्लाह के वलियों के पास हाजत को जायें तो जाइज़ और अगर वह दुआ कर दें या अल्लाह से सवाल करें तो अल्लाह तआला अता फ़रमाता है मतलब यह है कि अपने जाइज़ काम कराने का अल्लाह के वली बहुत ही बढ़िया वसीला हैं। ----- बुज़ुर्गों की करामत का शायद हर फ़िरक़ा क़ाइल है और करामत इसी का नाम है कि वली अल्लाह की अता से कुछ ऐसा कर दिखाए जो दूसरा आम इन्सान न कर सके। सुन्नी हो या वहाबी तक़रीबन हर शख़्स ने बुज़ुर्गों की हज़ारहा करामात सुनी होंगी। हाँ अगर इसमें भी शक है तो आप अहले सुन्नत और दूसरे फ़िरक़ों की किताबों में करामात पढ़ सकते हैं।

अब्दुल्लाह : मेरी इस बात का जवाब अभी भी नहीं आया कि वली या नबी से दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद भी मांगना और उनका मदद फ़रमाना सही है या नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि हज़ारों मन मिट्टी के नीचे दबे कोई हमारी क्या मदद कर सकता है।

मुफ़्ती साहब : मैं इधर ही आ रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि पहले यह समझाया जाए कि तमाम नबी और वली ज़िन्दा हैं और फिर यह समझाया जाए कि बादे वफ़ात भी ये लोगों की मदद करने की ताक़त अल्लाह से पाते हैं और मदद करते हैं

लिहाज़ा जब मदद करते हैं तो मदद मांगना जाइज़ है शिर्क नहीं।
अब्दुल्लाह : नबी के बारे में तो आया है कि इनकी लाश मिट्टी नहीं खाती। फिर भी नबी व वली दोनों के बारे में बतायें।
मुफ़्ती साहब : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सारे नबी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं नमाज़ अदा फ़रमाते हैं उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है। ---- मेराज की रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम को उनकी क़ब्र में नमाज़ पढ़ते देखा। ------ अब ज़रा ग़ौर फ़रमायें कि ज़िन्दा होने का यह मतलब नहीं कि अपने जिस्म व रूह के साथ सिर्फ़ वहीं लेटे रहें अल्लाह के हुक्म से जहाँ चाहते हैं आते जाते हैं बल्कि इन्सानों व जिन्नों से कहीं ज़्यादा तेज़।
अब्दुल्लाह : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खुद अपने आपको ज़िन्दा फ़रमाया।
मुफ़्ती साहब : जी हाँ तबरानी हज़रते मुजाहिद इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जिसने हज किया और मेरी वफ़ात के बाद मेरी क़ब्र की ज़ियारत की वह ऐसा है जैसे उसने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की। ----- हवला याद नहीं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया जो क़सदन मेरी ज़ियारत को अया वह क़ियामत के दिन मेरा पड़ोसी होगा।
अब्दुल्लाह : औलियाए किराम के बारे में बतायें?
मुफ़्ती साहब : इसे समझने से पहले एक उसूल को समझना बहुत ज़रूरी है वह यह कि "क़ुर्आने पाक में जब कोई हुक्म बयान किया जाए तो जिस चीज़ के बारे में हुक्म फ़रमाया गया उसके बराबर और उससे आला चीज़ें उस हुक्म में बग़ैर ज़िक्र किए खुद-ब-खुद दाख़िल हो जाती हैं" ----- मिसाल के तौर पर अल्लाह तआला ने माँ बाप के बारे में इरशाद फ़रमाया कि तू उनसे 'हुंह' न कहना और उन्हें न झिड़कना। ------ अब इसका मतलब यह होगा कि माँ बाप हुंह से ऊपर जितनी बातें हैं वो सब नहीं करना हैं मतलब ज़बान चलाना, बुरा कहना, गाली देना, सताना, वग़ैरह सब की मुमानअत हो गई। अब यह उसूल समझने के बाद समझइये कि क़ुर्आन में शहीद ज़िन्दा हैं हमें उनका शऊर नहीं। अब वह लोग जो शहीद से अफ़ज़ल हैं वह अपने आप ही ज़िन्दा साबित हुए और नबी तो बिला शक व शुबा शहीद से अफ़ज़ल और औलिया शहीद

से अफ़ज़ल बल्कि बाज़ उल्मा भी शहीद से अफ़ज़ल तो या लोग ज़िन्दा हुए कि नहीं।

अब्दुल्लाह : उलमा कैसे अफ़ज़ल हैं?

मुफ़्ती साहब : हदीस में आया कि उल्मा के क़लम की सियाही शहीदों के ख़ून से अफ़ज़ल है तो उल्मा अफ़ज़ल हुए कि नहीं।

अब्दुल्लाह : बाज़ आलिमों के हाल तो बड़े ख़राब हैं?

मुफ़्ती साहब : हाँ उन आलिमों की बात नहीं हो रही जो नाम के आलिम कहलाते हैं और ईमान भी गवां बैठे हैं। उनकी सियाही की बात हो रही जो अल्लाह के नज़दीक आलिम हैं। उनकी बात नहीं हो रही जो इल्म सीख कर भी दोज़ख़ में जायेंगे जैसे कि हदीसों में वईदें आई हैं। ----- और फिर हर वली आलिम होता है हर आलिम वली नहीं।

अब्दुल्लाह : वह कैसे?

मुफ़्ती साहब : चूंकि विलायत बेइल्म को नहीं मिलती अब चाहे वह इल्म उस वली ने ज़ाहिरी तौर पर हासिल किया हो या उस मरतबे पर पहुँचने से पहले अल्लाह तआला ने किसी और ज़रिए से उसे इल्म अता किया हो। ----- और भी बहुत सी हदीसें वलियों की शान में आई हैं।

अब्दुल्लाह : बात तक़रीबन पूरी हो गई कि ज़िन्दा तो सभी हैं कोई जन्नत में कोई दोज़ख़ में और नेक लोग आज़ाद हैं और मदद भी फ़रमा रहे हैं।

मुफ़्ती साहब : जी ख़ुलासा यह है कि जब शहीद दुनिया से पर्दा फ़रमा जाने के बाद हैं तो उनसे अफ़ज़ल व आला यानी उल्मा व औलिया व तमाम नबी की ज़िन्दगी को तसलीम करना ही पड़ेगा। ----- आलाहज़रत इमामे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं तमाम वली मरने के बाद ज़िन्दा हैं मगर नबियों की तरह उनकी हयात नहीं कि नबियों की हयात रूहानी जिस्मानी व दुनियावी है बिल्कुल इसी तरह ज़िन्दा हैं जिस तरह दुनिया में थे और वलीयों की हयात उनसे कम है और शहीदों से ज्यादा है और शहीदों के बारे में दो मरतबा क़ुर्आन में आया कि उन्हें मुर्दा मत कहो वो ज़िन्दा हैं

अब्दुल्लाह : जी बिल्कुल अल्लाह के वली ज़िन्दा हैं।

मुफ़्ती साहब : कुछ हवाले और नोट कर लें तफ़सील वहां से देखें।

1. अशअतुल लमआत मुसन्निफ़ शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह।
2. मिरक़ात शरहे मिश्कात मुसन्निफ़ मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह।

3. रिसाला कुशैरिया मुसन्निफ़ आरिफ़बिल्लाह उस्ताज़ अबुल क़ासिम कुशैरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह।

4. शरहुस्सुदूर मुसन्निफ़ शैख़ अल्लामा जलालुद्दीन स्यूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह।

इसके अलावा बहुत सी मुस्तनद किताबों में इस बात का सुबूत मिलता है अल्लाह के वली मदद फ़रमा रहे हैं फ़रमाते हैं ------ मज़े की बात तो यह है कि वहाबियों की किताबों में वहाबी झूटे वलियों की मरने के बाद की झूटी करामात भी आप देख सकते हैं। वाह साहब वाह झूटों की झूटी करामात तो मानों सच्चों की सच्ची भी न मानो। क्यूँ अल्लाह के वली से दुश्मनी लेकर अल्लाह से दुश्मनी करते हो अल्लाह तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

कुछ प्वाइन्ट और नोट कर लें कि काम आयेंगे चूँकि वहाबी इन्हीं बातों को ज़्यादा छेड़ता है और हम अपनी कमइल्मी की वजह से जवाब नहीं दे पाते।

1. रूह इन्सानी मौत के बाद भी बाक़ी रहती है क्यूँकि मौत जिस्म पर तारी होती है रूह पर नहीं।

दलील के लिए हदीस याद रखिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मोमिन की रूह एक परिन्द की तरह है जिसे जन्नत के दरख़्तों में लटकाया जाता है यहाँ तक कि बरोज़े क़ियामत अल्लाह तआला उसे उसके जिस्म में लौटाएगा। (नसई)

2. सुनना, देखना, जानना पहचानना वग़ैरह ये सब रूह की
सिफ़ात हैं मौत के बाद इन तमाम सिफ़ात में इज़ाफ़ा हो जाता
है क्यूँकि पहले रूह बदन की क़ैद में थी जब कि अब वह
आज़ाद है यही वजह है ज़िन्दा इन्सान निगाह उठाए तो ज़्यादा
से ज़्यादा आसमान तक देख सकता है लेकिन जब यही शख़्स
मर कर क़ब्र में पहुँचता है तो उसकी निगाह सातों आसमानों
के पार जन्नत तक पहुँच जाती है और दोज़ख़ भी उसे दिखाई
जाती है यहाँ तक कि काफ़िर को भी दिखाई जाती है। यूंही
दुनिया में आदमी थोड़ी दूर तक की आवाज़ सुन सकता है
लेकिन जो शख़्स मर कर क़ब्र में पहुँचता है तो मनों मिट्टी
के नीचे से बाहर की आवाज़ सुनता है। ---- अज़ाब व सवाब
को एक ही जगह पड़े पड़े महसूस भी करता है।
3. अब आप ही अक़्ल से बतायें कि पावर बढ़ जाने के बाद
मदद करना ज़्यादा आसान और अच्छा होगा या पावर कम होने
पर।
4. सुनने और देखने के बारे में एक नई अक़्ली दलील भी
[illegible] लीजिए देखिए आजकल [illegible]प्यूटर व मोबाइल के ज़रिए

आप लाखों मील दूर की चीज़ को देख व सुन सकते हैं बल्कि चाँद पर गए आदमी को देख व सुन सकते हैं अपनी बात कह सकते हैं उसकी सुन सकते हैं और यह बेजानदार चीज़े हैं कि सैटेलाइट के वसीले से आप की बातचीत करा रहे हैं तो फिर अल्लाह के वलियों जोकि ज़िन्दा हैं वो क्यूँ नहीं ये सब कर सकते। बस बात यही है कि कर वही सकता है जिसे अल्लाह ने ताकत दी यानी अल्लाह की अता ही से सब कुछ है जिस तरह बेजान मोबाइल में अल्लाह ही की अता है उसी तरह अल्लाह के ज़िन्दा वलियों में अल्लाह की अता है।

अब्दुल्लाह : एक एतराज़ और किया गया था कि या गौस अथवा या रसूलल्लाह कह कर मदद मांगना कि यह तो हमसे हज़ारों मील दूर हैं फिर कैसे मदद करेंगे?

मुफ्ती साहब : ग़ालिबन यह एतराज़ आपसे किसी ने किया होगा और शायद अब तक की बातचीत में जवाब भी जान गए होंगे! यही सवाल जब आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाहि तआला अलैह से किया गया तो आपने फ़रमाया "शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब फ़रमाते हैं कि रूह के लिए जगह का दूर नज़दीक होना बराबर है"

अब्दुल्लाह : यूँ तो हर वक़्त हमारी हाजात फ़ौरन पूरी होना चाहिए? और देखा यह गया है कि कई मरतबा औलिया अल्लाह को पुकारा गया मगर हाजात पूरी न हुई?

मुफ्ती साहब : इसमें अल्लाह की हिकमत है। और अगर एतराज़ औलिया पर हो तो ऐसा एतराज़ तो अल्लाह तआला पर भी कोई कर सकता है कि हमारी मदद या हमारा काम अल्लाह तआल से मांगने पर क्यूँ फ़ौरन नहीं होता। ----- दुआ की क़बूलियत का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि हमने मांगा और फ़ौरन वैसे ही अता हो जाए बल्कि इसका मतलब यह होता है कि अल्लाह तआला उसकी दुआ को बेकार नहीं जाने देता चुनांचे कभी तो वही चीज़ जो मांगी है मिल जाती है और कभी उसके बदले में हमारी भलाई पर नज़र फ़रमाते हुए उससे भली चीज़ हमारी झोली में डाल दी जाती है। कभी दुआ के क़बूल न होने की वजह हम ख़ुद होते हैं और वह इस तरह कि हम अल्लाह तआला से ऐसी चीज़ों का सवाल करते हैं कि जिनका मिलना शरई लिहाज़ से जाइज़ नहीं होता और कभी यूं कि हमें बहुत जल्दी पड़ी होती है और हम इन्तज़ार न करके अल्लाह की बारगाह में शिकायत करने लगते हैं और अल्लाह का करम नहीं होता। इस हदीस को मद्देनज़र रखें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो बन्दा भी अपने रब से दुआ मांगता है इसकी दुआ क़बूल

होती है या तो उसी वक़्त दुनिया में ही दे दी जाती है या आख़िरत के लिए ज़ख़ीरा बना लिया जाता है या दुआ के मुताबिक़ उसके गुनाह मिटा दिए जाते हैं बशर्ते कि गुनाह या क़तए रहम की दुआ न हो और जल्दी न करे। अर्ज़ की गई या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) जल्दी कैसे करेगा। आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह कहना कि यह अल्लाह मैंने दुआ मांगी तूने क़बूल ही न की।

अब्दुल्लाह दुआ क़बूल करना, मदद या काम करना, करम फ़रमाना, रहम फ़रमाना, शिफ़ा देना, बलायें दूर फ़रमाना और भी बहुत सी सिफ़तें अल्लाह के लिए हैं तो बन्दों के लिए मानना शिर्क होना चाहिए?

मुफ़्ती साहब : मसअला यही है कि अल्लाह तआला की सिफ़तों को बिऐनिही (बिल्कुल वैसे ही) किसी मख़लूक़ के लिए साबित करना शिर्क है। लेकिन अगर अल्लाह तआला की सिफ़त की मिस्ल कोई सिफ़त किसी मख़लूक़ में कुछ फ़र्क़ के साथ मानी जाए तो उसमें किसी क़िस्म का कोई हरज नहीं क्यूँकि अगर सिफ़ात में फ़र्क़ के बावजूद शिर्क का फ़तवा जारी किया जाए तो दुनिया का कोई भी मुसलमान मुसलमान न रहे सब के सब मुश्रिक व बेदीन हो जायें। मिसाल के तौर पर देखना सुनना ख़ुश होना जलाल में आना यह सब अल्लाह की सिफ़ात हैं और यही सिफ़ात मख़लूक़ के लिए भी मानी जाती हैं। कहा जाता है मैं देखता हूँ सुनता हूँ फ़ुला ख़ुश हुआ उसे ग़ुस्सा आ गया वग़ैरह वग़ैरह। ---- कहने का मतलब यह है कि यह बात मानना ज़रूरी है कि अल्लाह तआला और मख़लूक़ की सिफ़तों में फ़र्क़ साबित कर दिया जाए तो शिर्क लगाना जहालत व गुमराही के सिवा कुछ भी नहीं। तो ऐसे फ़तवों को लगाकर मुसलमानों को मुश्रिक क़रार देना ज़ुल्म है।

अब्दुल्लाह : अल्लाह तआला और मख़लूक़ की सिफ़तों में ज़रा प्वाइन्ट वाइस फ़र्क़ और समझा दे।

मुफ़्ती साहब : तीन फ़र्क़ ज़हन में रखें बात साफ़ हो जाएगी जो इल्मे ग़ैब का फ़र्क़ करने में भी काम आती है :-

1. अल्लाह पाक की तमाम सिफ़तें ज़ाती हैं किसी की अता की हुई नहीं जबकि मख़लूक़ की तमाम सिफ़तें अताई हैं यानी अल्लाह तआला ने अपने करम से अता फ़रमाई हैं।
2. अल्लाह तअला की सिफतों को कभी फ़ना नहीं जबकि मख़लूक़ की सिफ़तों को फ़ना होना मुमकिन है।
3. अल्लाह तआला की सिफ़तें लामहदूद (जिनकी कोई हद नहीं) हैं जब के मख़लूक़ की तमाम सिफ़तें महदूद हैं।

अब अगर कोई ग़ैरुल्लाह के लिए इन लफ़्ज़ों को मानते हुए मदद तलब करे तो उस पर सिर्फ़ ज़माना हराम व गुनाहे कबीरा होने में क्या शुबा हो सकता है।

अब्दुल्लाह : वसीले के बारे में कुछ बतायें? वहाबी कहते हैं वसीला कोई चीज़ नहीं?

मुफ़्ती साहब : क़ुरआन में है अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अल्लाह की तरफ़ वसीला ढूंढो।

अब्दुल्लाह : अक़्ल यह ख़ुद तस्लीम करती है कि हर काम वसीले ही से हो रहा।

मुफ़्ती साहब : जी हाँ और सबसे बड़ा वसीला तो ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही हैं।

अब्दुल्लाह : कुछ और क़ुरआन से?

मुफ़्ती साहब : गुनाहों की मग़फ़िरत कराने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वसीला बनाने का हुक्म क़ुरआन ने दिया है कि तुम जब अपनी जानों पर ज़ुल्म करो तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में आओ और वह सिफ़ारिश करें तो अल्लाह को बड़ा मेहरबान पायें और यह हुक्म क़ियामत तक के हर मुसलमान के लिए है।

अब्दुल्लाह : आप तमाम आलम के लिए रहमत हैं क्या इसमें भी वसीले की तरफ़ इशारा है?

मुफ़्ती साहब : जी हाँ। बेशक अल्लाह रहीम रहमान है फिर भी फ़रमाता है कि ऐ महबूब हमने आपको तमाम आलम के लिए रहमत बना कर भेजा इसका साफ़ मतलब यही है कि हर नेमत आपके ही वसीले से मिलती है क्योंकि आप तमाम आलम के लिए रहमत हैं और अल्लाह के सिवा हर चीज़ आलम में दाख़िल है --- हाँ यह अक़ीदा रखना ज़रूरी है कि अल्लाह तआला वसीले का मुहताज नहीं वह हर काम बग़ैर वसीले भी कर सकता है मगर उसे पसन्द और मन्ज़ूर इसी तरह है।

अब्दुल्लाह : हदीस में भी वसीले के बारे में आया है?

मुफ़्ती साहब : हाँ हदीसों में है ख़ूबसूरत चेहरे वालों से मदद चाहो, नर्म दिल वालों से मदद चाहो, नेक लोगों से मदद चाहो।

अब्दुल्लाह : हालांकि वसीले के बारे में पीछे बहुत कुछ आया मगर मैं चाहता हूँ इस बारे में कुछ और क़ुरआन व हदीस से बयान करें।

मुफ़्ती साहब : सूरह माएदा में है ख़ुदा की तरफ़ वसीला तलाश करो ---- अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि मैं ज़मीन पर अपना नाइब बनाना चाहता हूँ

यहाँ नाइब का मतलब दुनियावी नाइब नहीं है और अल्लाह को किसी नाइब व वसीले की ज़रूरत नहीं। अल्लाह

चाहे तो अपनी पहचान बिना वसीले और बिना नाइब के करा सकता है हाँ उसे वसीला पसन्द है और उसे इसी तरह मन्ज़ूर है कि मुझे मेरे नबी के वसीले से जानों। वसीले की ज़रूरत इन्सान को थी। तो नाएब बनाया ही इसी लिए गया कि जो बन्दे और इन्सान के बीच वसीला बनेगा और जब उससे इतना बड़ा काम लेना है यानी अल्लाह को अपनी पहचान कराने का काम लेना है तो उसे कुछ पावर व इख़्तेयारात भी दिए जायेंगे और उसे इल्म या इल्मे ग़ैब (ग़ैब का छुपा हुआ इल्म) भी दिया जाएगा। शैतान को यही तो बुरा लगा था कि मैं आग से पैदा किया गया हूँ मैं बड़ा हूँ और पावर और इल्म इन्सान को मिले। वसीला इन्सानों ही में से बने इसी लिए यह वसीले का इन्कार कराने की पूरी कोशिश में लगा रहता है और वहाबियों को बहका चुका अब सुन्नियों के पीछे पड़ा रहता। अरे अल्लाह को हमने नबियों के ज़रिए और वसीले से ही तो जाना है क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अलावा किसी ने अल्लाह को देखा है।

अब्दुल्लाह : बहुत बढ़िया बात बताई। मैं समझता हूँ और भी आयात होंगी मगर काफ़ी है अब कोई हदीस सुनायें।

मुफ़्ती साहब :

1. हज़रते उसमान इब्ने हुनैफ़ से मरवी है कि ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) मैं आपके वसीले से अपने रब की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ।
2. एक नाबीना सहाबी का हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में अपनी नाबीनाई का सवाल करना और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का अपने वसीले से दुआ कराना मशहूर हदीस है।
3. हज़रते फ़ातिमा बिन्ते असद रद़ियल्लाहु तआला अन्हा की रिवायत में यह अल्फ़ाज़ आये हैं "ऐ रब यह दुआ क़बूल फ़रमा अपने नबी और उनसे पहले नबियों के वसीले से"
4. हज़रते अबू सईद ख़ुदरी रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की हदीस में यह अल्फ़ाज़ आये हैं "ऐ अल्लाह सवाल करने वालों का तेरे यहाँ जो हक़ है उसके वसीले से मैं तुझसे सवाल करता हूँ" इसमें सारे मुसलमानों का वसीला है इसमें ज़िन्दा भी आ गए और मुर्दा भी।
5. बारिश की दुआ के सिलसिले में हज़रते उमर रद़ियल्लाहु तआला अन्हु के ये अल्फ़ाज़ आये है "ऐ अल्लाह हम तेरे बारगाह में अपने नबी के चचा का वसीला लाते हैं"

अब्दुल्लाह : क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से पहले के लोग भी वसीला मानते थे?

मुफ़्ती साहब : हाँ हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से पहले के नबी यहूदी व ईसाई हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वसीले से दुआयें मांगते और उनकी दुआयें क़बूल होतीं और जंगे फ़तह होती थीं। हज़रते आदम अलैहिस्सलाम की दुआ हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का वास्ता व वसीला देने से ही हुई थी।

दलाइल और वाक़ियात बहुत हैं समझदार के लिए इतने ही काफ़ी हैं जो न समझना चाहे उसके लिए वही मिसाल कि अबू जहल के हाथ में कंकरियों ने कलिमा पढ़ा न मानना था न माना। ख़ुलासा यूँ है कि जिस तरह परवरदिगारे आलम बादलों के वसीले से बारिश सूरज के वसीले से धूप और चांद के वसीले से चांदनी अता फ़रमाता है। बच्चों को माँ बाप के ज़रिए पैदा फ़रमाता है और उन्हीं के ज़रिए उन्हें पालता है और रोटी रोज़ी अता फ़रमाता है और इससे उसकी ज़ात में कोई नुक़्स नहीं आता न उसकी शान में कोई फ़र्क़ आता है बस यूँ समझिए कि उसकी मर्ज़ी है कि कायनात आलम के ख़ज़ाने ज़ाहिर और बातिनी नेमतें जिसको भी मिलें व बारगाहे हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वसीले से मिलें और उन्हीं के ग़ुलामों और नेक बन्दों से बटें और यह अक़ीदा हरगिज़ तौहीद के ख़िलाफ़ नहीं है।

अब्दुल्लाह : कुछ लोगों का ख़्याल है कि नेक आमाल नमाज़ रोज़ा वसीला हैं?

मुफ़्ती साहब : यह बताइये कि हमारा या आपका हर अमल क़बूल हो जाता हैं।

अब्दुल्लाह : ज़रूरी नहीं है।

मुफ़्ती साहब : फिर जिसके मक़बूल होने में शक है और जो मक़बूल हो चुके अल्लाह के वली वलियों के सरदार अल्लाह के नबी नबियों के सरदार क्या वसीला नहीं होंगे बेशक उन्हें वसीला बनाना जाइज़ है शिर्क नहीं और डाइरेक्ट मांगना भी जाइज़ है मगर क़बूलियत की उम्मीद वसीले के ज़रिए ज़्यादा है इसी में फ़ायदा है। बेकार में शिर्क शिर्क कहना अपने ईमान को ख़तरे में डालना है। एक आम आदमी जिसको चन्द दिन के लिए पावर मिली उसके पास आदमी सिफ़ारिश और वसीले के साथ जाता है और यह बेवसीला उसे पाने चले बिना उनकी ग़ुलामी इख़्तेयार किए उन पर ईमान लाए ख़ुदा तक कैसे पहुंच जाएगा। अल्बत्ता डाइरेक्ट मांगना भी जाइज़। हाँ जो यह अक़ीदा रखे कि अल्लाह के सिवा दूसरा कोई अपनी ज़ाती ताक़त से मदद करता है तो वह मुश्रिक व काफ़िर जहन्नमी हमेशा के लिए है उसकी बख़्शिश नहीं।

ताज़ीमे नबी

अब्दुल्लाह : अगर हम सही तरीक़े पर यह समझ लें कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के बारे में क्या क्या अक़ीदे रखना चाहिए तो शयद फिर हमारे बहकने की गुंजाइश लगभग ख़त्म हो जाएगीं।

मुफ़्ती साहब : बुनियादी अक़ाइद सीखें और ताज़ीमे रसूल सीखें। अपने अस्ल मक़सद की तरफ़ रहें कि अल्लाह ने हमें क्यूँ पैदा किया। अल्लाह पाक ने हमें इबादत के लिए पैदा किया है और यह भी ध्यान रहे कि अल्लाह ने यह भी फ़रमाया है कि ऐ महबूब तुझे पैदा करना मन्ज़ूर न होता तो कुछ पैदा न करता यहाँ तक कि अपना रब होना भी ज़ाहिर न फ़रमाता।

अब्दुल्लाह : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम के बारे में कुछ क़ुर्आन व हदीस से फ़रमायें और इस तरह फ़रमायें कि जिसमें जवाब कुछ इस तरह हो कि हमारे ऊपर लगाया यह इल्ज़ाम भी साफ़ हो जाए कि यह कहते हैं कि तुम अल्लाह तआ़ला से भी ज़्यादा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम करते हो और कभी कभी इससे भी ज़्यादा बढ़ा देते हो।

मुफ़्ती साहब : अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ की कोई हद नहीं है और हर मख़लूक़ की तारीफ़ की कोई न कोई हद। अब अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की कोई इतनी तारीफ़ करे कि माज़ल्लाह उन्हें इबादत के क़ाबिल मानने लगे तो वह काफ़िर हो जाएगा और ऐसा तो काफ़िर भी ताज़ीम नहीं करता फिर हम तो मुसलमान हैं। इबलीस ताज़ीम न करने ही की वजह से मरदूद हुआ उसे ताज़ीमी सजदे का तो हुक्म था ख़ैर जो क़ुर्आन पाक ने हमें किस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम का हुक्म दिया वही अर्ज़ करता हूँ।

अब्दुल्लाह : जी बेहतर हवाला भी बताते जायें।

मुफ़्ती साहब :

1. बेशक हमने आपको भेजा हाज़िर ओ नाज़िर और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला ताकि ऐ लोगों तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ताज़ीम व तकरीम करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करो।(पारा 26 रुकू 9)
2. और जो अल्लाह तआ़ला के शआइर (निशानियाँ) की ताज़ीम करें तो वह दिलों की परहेज़गारी से है।(पारा 17 रुकू 11)

3. ऐ ईमान वालों अल्लाह व रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह सुनता व जानता है।

4. ऐ ईमान वालो अपनी आवाजें नबी की आवाज़ पर ऊंची न करो और उनके हुज़ूर चिल्ला कर बात न करो जैसे कि आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे आमाल अकारत न हो जायें और तुम्हें ख़बर भी न हो।

(पारा 26 रुकू 13)

5. रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा कि तुम एक दूसरे को पुकारते हो। (पारा 18 रुकू 15)

और भी कुर्आन में जगह जगह साफ़ साफ़ ताज़ीम का हुक्म है। समझदार को एक आयत काफ़ी है बाज़ ऐसे भी हैं कि जिनकी मादरी ज़बान अरबी है लोगों को अरबी पढ़ाते हैं और ताज़ीम न समझें।

अब्दुल्लाह : सहाबा किराम किस हद तक हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ताज़ीम करते थे बयान करें।

मुफ़्ती साहब : हदीस शरीफ़ में है कि हज़रते उरवा इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु जब कि वह मुसलमान न हुए थे हुदैबिया के मक़ाम पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुलह की बातचीत करने के लिए आये। इस मौके पर सहाबा को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ताज़ीम करते हुए जो देखा था वापसी के बाद मक्का शरीफ़ के काफ़िरों से इन लफ़्ज़ों में उन्होंने बयान किया ------

"क़सम ख़ुदा की मैं बादशाहों के दरबारों में वफ़्द लेकर गया हूँ मैं क़ैसर व किसरा व नजाशी के दरबारों में हाज़िर हुआ हूँ लेकिन ख़ुदा की क़सम मैंने कोई बादशाह ऐसा नहीं देखा कि उसके साथी इस तरह ताज़ीम करते हों जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के साथी उनको ताज़ीम करते हैं। ख़ुदा की क़सम जब वह थूकते हैं तो उनका थूक किसी न किसी आदमी की हथेली पर ही गिरता है जिसे वह अपने चेहरे और बदन पर मल लेता है और जब वह कोई हुक्म देते हैं तो फ़ौरन उनके हुक्म की तामील होती है और जब वह वुज़ू करते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि लोग वुज़ू का मुस्तामल पानी हासिल करने के लिए एक दूसरे के साथ लड़ने मरने के लिए आमादा हो जायेंगे और जब उनकी बारगाह में बात करते हैं तो अपनी आवाज़ों को पस्त रखते हैं और ताज़ीमन उनकी तरफ़ आँख भर कर नहीं देखते।

इसी एक हदीस से बहुत कुछ मालूम हो जाता है। इसके अलावा हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु का अपने आपको ताज़ीम ही की ख़ातिर साँप से कटवा लेना।

मौला अली का ताज़ीम ही की वजह से अस्र की नमाज़ का क़ज़ा कर देना। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से निसबत रखने वाली चीज़ों को तबर्रुक बना कर ताज़ीम के साथ लोगों का रखना। इसके अलावा हज़ारों वाक़ियात ताज़ीम के मिलते हैं मिलते रहेंगे। और इन्शाअल्लाह रोज़े क़ियामत भी हर तरफ़ उन्हीं की ताज़ीम व चर्चा होगा यहाँ तक कि काफ़िर भी ताज़ीम करेगा लेकिन रोज़े क़ियामत काफ़िर और मुरतद की वह ताज़ीम काम न आएगी। इस मौज़ू पर तो पूरी पूरी किताबें हैं और मैं समझता हूँ कि यह ऐसा मौज़ू है कि इसमें ज़्यादा बात क्या की जाए कि काफ़िर भी उनकी ताज़ीम करता है और मुरतद भी चाहे वह मरे दिल से ही करे कि दिल में सच्ची ताज़ीम होती तो उनकी ख़ूबियों को तसलीम करता उनके चाहने वालों पर झूटे शिर्क के फ़तवे न लगाता।

अब्दुल्लाह : मदीने की ताज़ीम ज़्यादा है या मक्के की?

मुफ़्ती साहब : मक्का में एक नेकी एक लाख नेकी के बराबर है और एक गुनाह एक लाख गुनाह के बराबर है और मदीने पाक में एक नेकी पचास हज़ार के बराबर मगर एक गुनाह एक गुनाह ही लिखा जाता है। अब ख़ुद ही फ़ैसला कर लें। आलाहज़रत फ़रमाते हैं

तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यूँ बात बढ़ाई है

अलबत्ता वह ज़मीन जिसमें आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आराम फ़रमा रहे हैं वह ज़मीन व आसमान काबा व अर्श से भी अफ़ज़ल है।

अब्दुल्लाह : यह जो सुन्नी लोग हर नमाज़ के बाद मदीने शरीफ़ की तरफ़ मुँह करके क्या पढ़ते हैं और यह बिदअत तो नहीं? या यह भी ताज़ीम के लिए खड़े होते हैं?

मुफ़्ती साहब : यह एक मुस्तहब काम है करें तो अच्छा है न करें तो कोई गुनाह भी नहीं रोके तो ऐसा करना बुरा है और यह सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में मुख़्तसर सा सलाम अर्ज़ करते हैं इसमें कोई हरज नहीं है। मीलाद शरीफ़ में विलादत के ज़िक्र के वक़्त ताज़ीम के साथ खड़े होकर सलाम पढ़ना एक ज़माने से बिदअते हसना के रूप में होता चला आया और मुसलमानों की मेजोरिटी ने इसे पसन्द फ़रमाया और मैंने तो बाज़ वहाबियों को भी सलाम के वक़्त खड़े होते देखा अगर यह बिदअत है तो फिर वह ये अमल क्यूँ करते हैं

अब्दुल्लाह : क्या कहीं किसी हदीस में खड़े होने को मना भी आया है?

मुफ़्ती साहब : हाँ आया है वह उसके लिए जो चाहता है कि उसके लिए लोग खड़े हों (क्योंकि इसमें गुरूर व तकब्बुर का इमकान है आया है कि जिसको पसन्द हो कि लोग उसके लिए खड़े हों वह अपनी जगह दोज़ख़ में ढूंढे) ----- जब कोई बड़ा आता है तो तक़रीबन हर सोसाइटी में खड़े होने को ताज़ीम समझा जाता है और इसे कोई बुरा नहीं कहता। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को खड़े हो कर सलाम अर्ज़ करने में क्या बिदअते सय्या हो सकती है हरगिज़ नहीं। हमारे नज़दीक ताज़ीम है और अगर बिदअत भी तसलीम करें तो बिदअते हसना है।

अब्दुल्लाह : लाखों सलाम करोड़ों सलाम और कि मस्जिद में नमाज़ियों को नमाज़ में ख़लल आये यह तो मुनासिब नहीं मालूम होता?

मुफ़्ती साहब : लाखों करोड़ों में हरज नहीं कि हमें अल्लाह ने ख़ूब दुरूद व सलाम पढ़ने का हुक्म दिया है ----- हाँ नमाज़ियों को नमाज़ में ख़लल आये इससे बचना चाहिए।

अब्दुल्लाह : कुछ सिरफिरे कहते हैं तेज़ आवाज़ और लाउडस्पीकर से सलाम न पढ़ो कि कोई पाख़ाने में है तो ताज़ीम के लिए कैसे खड़ा होगा?

मुफ़्ती साहब : वह शायद लाउडस्पीकर पर अज़ान के भी ख़िलाफ़ होंगे कि ऐसा न करो कि पाख़ाने वाले को अज़ान का जवाब देना पड़ेगा। इन्हें तो सलाम से ही चिढ़ है जब कि सलाम क़ुर्आन से साबित है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है बेशक अल्लाह और उसके फ़िरिश्ते नबी पर दुरूद और सलाम पढ़ते हैं ऐ ईमान वालो तुम भी ख़ूब दुरूद व सलाम भेजो।

इख़्तेयाराते मुस्तफ़ा

अब्दुल्लाह : हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने इख़्तेयार दिए हैं इसके बारे में कुछ रोशनी डालें?

मुफ़्ती साहब : क़ुर्आन में बहुत सी आयात हैं जिनसे साबित कि अल्लाह तआला ने हमारे आक़ा को इख़्तेयारात दिए हैं सूरह तौबा में है अगर वह राज़ी हो जाते इस पर जो अल्लाह और उसके रसूल ने उनको दिया ----- इसी सूरत में दूसरी जगह है और न बुरा लगा उन्हें मगर यह कि अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया ----- सूरह अहज़ाब में है अल्लाह ने इस पर इनाम फ़रमाया और ऐ महबूब आपने इस इनाम फ़रमाया ----- सूरह हश्र में है और जो तुम्हें रसूल दें वह ले लो और जिससे मना कर दें

रुक जाओ ------- और भी बहुत सी आयात हैं जिनसे यह साबित कि हमारे आका सारे जहान को देते हैं और इन आयात से आपकी अता, आपका वसीला, आपकी मदद साबित होते हैं।

अब्दुल्लाह : हदीस से कुछ फ़रमायें ?

मुफ़्ती साहब : हदीस में है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते है मैं ही ख़ाज़िन हूँ रखता हूं जहाँ हुक्म होता है (यानी जहाँ अल्लाह फ़रमाता है ख़र्च फ़रमाता हूँ) और फ़रमाते हैं अल्लाह देने वाला है मैं बांटने वाला हूँ। इसके अलावा अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ऐसे इख़्तेयार भी दिए कि जिसके लिए चाहें शरीअत में आसानी फ़रमा दें इसकी कुछ मिसाले सुने

1. हज के मौके पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने दो दो नमाज़ें जमा फ़रमा दीं यानी अराफ़ात में ज़ुहर व अस्र साथ पढ़ना है और मुज़दलेफ़ा में मग़रिब व इशा साथ साथ।

2. हज़रते ख़ुज़ैमा के लिए अकेले की गवाही को काफ़ी किया।

3. हज़रते सुराक़ा के लिए सोना हलाल किया जबकि सोना मर्द को हराम है।

4. सब मर्दों के लिए रेशम हराम मगर दो सहाबियों के लिए हलाल की।

5. माहे रमज़ान में रोज़े की हालत में बीवी से मुजामअत करने वाले को न सिर्फ़ कफ़्फ़ारा माफ़ फ़रमाया बल्कि टोकरा खजूरों का भी इनायत किया।

6. हज़रते अस्मा बिन्ते उमैस को उनके ख़ाविन्द की वफ़ात पर सिर्फ़ तीन दिन सोग करके निकाह की इजाज़त अता कर दी।

7. हज़रते अबू हुरैरह रदियल्लाहु तआला अन्हु के लिए 6 माह का बकरी का बच्चा क़ुर्बानी के लिए जाइज़ फ़रमाया।

8. अपनी मस्जिद में मौला अली के लिए हालते जनाबत में आना जाइज़ फ़रमाया।

9. मौला अली को फ़ातिमा के रहते दूसरा निकाह मना फ़रमाया।

10. एक शख़्स ने कहा कि मैं दो वक़्त की नमाज़ पढूंगा ईमान ले आऊंगा इजाज़त अता फ़रमाई।

11. मुस्लिम व मिश्कात में है हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने मक्का को हरम बनाया मैं मदीने को हरम बनाता हूँ।

इसके अलावा हज़ारों मोजिज़ात से यह ज़ाहिर है कि आपको अल्लाह की अता से तमाम मख़लूक़ में तसर्रुफ़ का इख़्तेयार है जैसे :- चांद के दो टुकड़े फ़रमा देना, सूरज को पलटा देना, बाग़ को जन्नत के बाग़ के बदले बेच देना, पत्थरों

व जानवरों को कलाम करना, बकरी को ज़िन्दा करना ... हज़ारों मोजिज़ात हैं बल्कि अल्लाह के तमाम वलों जो भी करामात दिखायें मदद फरमायें तसर्रुफ़ करें यह सब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वसीलों से ही होते हैं तो जब उनके वसीले से होते हैं तो फिर उनके इख़्तेयारात का क्या कहना तमाम औलिया अल्लाह के सरदार सरकार गौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह व रसूल की अता से आलम के तमाम मुमालिक को इस तरह देखते हैं जिस तरह हथेली पर राई का दाना और तसर्रुफ़ भी फरमाते हैं।

अब्दुल्लाह : एतराज़ यह है कि अगर उन्हें इख़्तेयार है तो फिर इख़्तेयार न मानने वाले नज्दियों को हुकूमत क्यूं दी गई और उनसे छीन क्यूं नहीं ली जाती?

मुफ़्ती साहब : इन सब बातों में अल्लाह की हिकमत है और इसी से ज़ाहिर कि अल्लाह ने छूट दी है वर्ना क्या काबे में बुत रखे जा सकते थे अल्लाह के महबूब को कोई परेशान कर सकता था। क्या नमरूद और फ़िरऔन ने हुकूमत नहीं की क्या यहूदी बैतुल मक़दस पर क़ाबिज़ नहीं, क्या काफ़िरों की हुकूमत मुसलमानों से ज़्यादा दुनिया में नहीं है। क्या कोई अल्लाह पर एतराज़ कर सकता है।

अब्दुल्लाह : हाँ आप ठीक फरमा रहे हैं।

मुफ़्ती साहब : दुनिया तो दुनिया आख़िरत में हमारे आक़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इख़्तेयारात देखें कैसे हम मुजरिमों को बचा रहे होंगे पुलसिरात पार करा रहे होंगे दोज़ख़ से बचा रहे होंगे जन्नत में ले जा रहे होंगे यहां तक कि बाज़ उन लोगों को दोज़ख़ से निकाल कर लायेंगे जो दोज़ख़ में जा चुके होंगे।

शफ़ाअत

अब्दुल्लाह : कुछ लोग यह कहते हैं कि अपने आमाल से आदमी जन्नत में जाएगा मआज़ल्लाह कोई सिफ़ारिश नहीं करेगा।

मुफ़्ती साहब : शर्म नहीं आती ऐसे जलीलों को ज़रा सोचिए आपके हाथ में क़लम दे दिया जाए और कहा जाए कि आप बारे में ख़ुद फ़ैसला लिखो कि तुम जन्नत में जाओगे या जहन्नम में तो शायद आज का एक आम आदमी यही कहेगा कि कुछ दिन तो जहन्नम में ही रहना पड़ेगा इसके बावजूद उनके मदरसे में सबसे पहले जन्नत में जा रहे हों। अल्लाह तआला फ़रमाता है ऐ महबूब जब तक आपकी उम्मत जन्नत में दाख़िल न हो जाए दूसरे नबियों की उम्मत पर जन्नत हराम ... मेरे गुनाहगार ... दूसरी उम्मत के नबियों तक ...

पहले जन्नत में जा रहे हैं जो हमसे कहीं ज़्यादा नेक्कार हैं यह किसका सदका है। शफ़ाअत कुर्आन से साबित जैसा कि दूसरे सवालों के जवाबों में भी आया कि अल्लाह ने हमें बुलाया कि मेरे महबूब के दर पर आओ और वह अगर तुम्हारे लिए सिफ़ारिश कर दें तो अल्लाह तुम्हें बख़्श देगा।

अब्दुल्लाह : कुछ हदीसें इस बारे में सुनायें।

मुफ़्ती साहब : शफ़ाअते कुबरा की हदीसें जिनमें साफ़ सरीह इरशाद हुआ कि महशर का दिन बहुत तवील (लम्बा) दिन होगा कि काटे न कटेगा ----- और सरों पर आफ़ताब और दोज़ख नज़दीक ------ उस दिन सूरज में दस बरस कामिल की गर्मी जमा करेंगे और सरों से कुछ ही फ़ासले पर लाकर रखेंगे ----- प्यास की वह शिद्दत कि ख़ुदा न दिखाए ------ गर्मी वह क़यामत की कि अल्लाह बचाए ----- बांसों पसीना ज़मीन में जज़्ब होकर ऊपर चढ़ेगा यहाँ तक कि गले गले बल्कि इससे भी ऊँचा होगा ----- जहाज़ छोड़ें तो बहने लगें ----- लोग उसमें गोते खायेंगे ----- लोग इन अज़ीम आफ़तों में जान से तंग आकर शफ़ीअ (शफ़ाअत या सिफ़ारिश करने वाला) की तलाश में जा-ब-जा फिरेंगे ----- आदम (यानी आदम अलैहिस्सलाम) व नूह व ख़लील (यानी हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम) व कलीम (यानी मूसा अलैहिस्सलाम) व मसीह (यानी हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम) के पास हाज़िर होकर जवाब साफ़ सुनेंगे। सब अम्बिया (नबी की जमा) फ़रमायेंगे हमारा यह मरतबा नहीं हम इस लाएक़ नहीं हमसे यह काम न निकलेगा --- नफ़्सी नफ़्सी -----तुम और किसी के पास जाओ ----- यहाँ तक कि सब के बाद हुज़ूर पुर नूर ख़ातमुन्नबिइयीन (जिन पर नुबूव्वत ख़त्म हुई) सय्येदुल अव्वलीन व आख़रीन (शुरू वाले और आख़िर वाले सब ही के सरदार) शफ़ीउल मुज़निबीन रहमतुल्लिल आलमीन (तमाम आलम के लिए रहमत) सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होंगे ------- हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अना लहा अना लहा फ़रमायेंगे यानी मैं हूँ शफ़ाअत के लिए, मैं हूँ शफ़ाअत के लिए -------- फिर अपने रब्बे करीम जल्ला जलालुहू की बारगाह में हाज़िर होकर सजदा करेंगे ------ उनका रब तबारक व तआला इरशाद फ़रमाएगा 'ऐ मुहम्मद अपना सर उठाओ और अर्ज़ करो तुम्हारी सुनी जाएगी और मांगो कि तुम्हें अता होगा और शफ़ाअत करो कि तुम्हारी शफ़ाअत क़बूल होगी।'

यही मकामे महमूद होगा जहाँ तमाम अव्वलीन व आख़रीन में हुज़ूर की तारीफ़ व हम्द व सना का गुल पड़ेगा

---- और मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ सब पर खुल जाएगा बारगाहे इलाही में जो वजाहत (इज़्ज़त, दबदबा) हमारे आक़ा का है किसी का नहीं ---- और मालिके अज़ीम जल्ला जलालुहू के यहाँ जो अज़मत हमारे मौला के लिए है किसी के लिए नहीं ---- वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन --- इसी के लिए अल्लाह तआला अपनी हिकमते कामिला के मुताबिक़ लोगों के दिलों में डालेगा कि पहले और अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के पास जायें और वहाँ से महरूम फिर कर उनकी ख़िदमत में हाज़िर आयें ताकि सब जान लें कि मनसबे शफ़ाअत इसी सरकार का ख़ास्सा है यानी हुज़ूर के लिए ख़ास है दूसरे की मजाल नहीं कि उसका दरवाज़ा खोले --- वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ------

अब्दुल्लाह : कुछ और हदीसें सुनायें बड़ा मज़ा आ रहा है।

मुफ़्ती साहब : जी हाँ और सुनिए हदीसें। ये हदीसें सही बुख़ारी मुस्लिम तमाम किताबों में मज़कूर और अहले इस्लाम में मारूफ़ व मशहूर हैं।

ये हदीसें ज़ाहिर करेंगी कि हमें ख़ुदा व रसूल ने का[न] खोल कर शफ़ीअ का नाम बता दिया और साफ़ फ़रमाया कि वह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हैं --- सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ---- न यह बात गोल रखी हो जैसे एक बदकार कहता है कि "उसी के इख़्तेयार पर छोड़ दीजिए जिसको वह चाहे हमारा शफ़ीअ कर दे।

उनके रब की क़सम जिसने उन्हें शफ़ीउल मुज़निबीन किया उनकी शफ़ाअत हम जैसे रूसियाहों, पुरगुनाहों (गुनाहों से भरे हुए), सियाहकारों (काले करतूत वाले), सितमगरों (ज़ुल्म ओ सितम ढाने वाले) के लिए है जिनका बाल बाल गुनाह में बंधा है जिनके नाम से गुनाह को भी शर्म आती है।

हदीसों के मफ़हूम पेशे ख़िदमत हैं हवाले फ़ुरसत में देख लें :--

1. अल्लाह तआला ने मुझे इख़्तेयार दिया कि या तो शफ़ाअत लो या यह कि तुम्हारी आधी उम्मत जन्नत में जाए। मैंने शफ़ाअत ली कि वह ज़्यादा तमाम और ज़्यादा काम आने वाली है क्या तुम यह समझ लिए हो कि मेरी शफ़ाअत पाकीज़ा मुसलमानों के लिए है, नहीं बल्कि वह उन गुनाहगारों के वास्ते है जो गुनाहों में आलूदा और सख़्तकार हैं।

2. मेरी शफ़ाअत मेरे उन उम्मतियों के लिए है जिन्हें गुनाहों ने हलाक कर डाला।

3. मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत में उनके लिए है जो कबीरा गुनाह वाले हैं।

4. मेरी शफ़अत मेरे गुनाहगार उम्मतियों के लिए है।
5. रू-ए-ज़मीन पर जितने पेड़ पत्थर ढेले हैं मैं क़यामत में उन सबसे ज़्यादा आदमियों की शफ़अत फ़रमाऊँगा।
6. मेरी शफ़अत हर कलिमागो के लिए है जो सच्चे दिल से कलिमा पढ़े कि ज़बान की तसदीक़ दिल करता है।
7. शफ़ाअत में उम्मत के लिए ज़्यादा वुसअत (गुन्जाइश) है कि वह हर शख़्स के वास्ते है जिसका ख़तमा ईमान पर हो।
8. मैं जहन्नम का दरवाज़ा खुलवा कर तशरीफ़ ले जाऊँगा वहाँ ख़ुदा की तारीफ़ें करूँगा ऐसी कि
न मुझसे पहले किसी ने कीं न मेरे बाद कोई करेगा फिर दोज़ख़ से हर उस शख़्स को निकाल लूंगा जिसने ख़ालिस दिल से "लाइलाहाइल्लल्लाह" कहा।
9. अम्बिया के लिए सोने के मिम्बर बिछाए जायेंगे वह उन पर बैठेंगे और मेरा मिम्बर बाक़ी रहेगा कि मैं उस पर जुलूस न फ़रमाऊँगा यानी बैठूंगा नहीं बल्कि अपने रब के हुज़ूर सर ओ क़द यानी अदब से खड़ा रहूंगा इस डर से कि कहीं ऐसा न हो कि मुझे जन्नत में भेज दे और मेरी उम्मत मेरे बाद रह जाए --- फिर अर्ज़ करूँगा ऐ रब मेरे मेरी उम्मत मेरी उम्मत --- अल्लाह तआला फ़रमाएगा ऐ मुहम्मद तेरी क्या मर्ज़ी है मैं तेरी उम्मत के साथ क्या करूँ? अर्ज़ करूँगा ऐ रब मेरे उनका हिसाब जल्द फ़रमा दे, पस मैं शफ़ाअत करता रहूंगा यहाँ तक कि मुझे उनकी रिहाई की चिट्ठियाँ मिलेंगी जिन्हें दोज़ख़ भेज चुके थे यहाँ तक कि मालिक दारोग़ए दोज़ख़ अर्ज़ करेगा ऐ मुहम्मद आपने अपनी उम्मत में रब का ग़ज़ब नाम को न छोड़ा।

इन हदीसों में यह बयान हुआ है कि हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं मैं शफ़ीअ मुक़र्रर कर दिया गया और शफ़ाअत ख़ास (शफ़ाअते कुबरा) मुझी को अता होगी मेरे सिवा किसी नबी को यह ममसब न मिला।
10. अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की अगरचे हज़ारों दुआयें क़बूल होती हैं मगर एक दुआ उन्हें ख़ास जनाबे बारी तआला से मिलती है कि जो चाहो मांग लो बेशक दिया जाएगा ---- तमाम अम्बिया आदम से ईसा तक (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) सब अपनी अपनी वह दुआ दुनिया में कर चुके और मैंने आख़िरत के लिए उठा रखी ---- वह मेरी शफ़ाअत है मेरी उम्मत के लिए, क़यामत के दिन मैंने उसे अपनी सारी उम्मत के लिए रखा है जो ईमान पर दुनिया से उठा।
ऐ ख़ुदा हमें उनके मक़ामो मनसब के तुफ़ैल उनकी

शफ़ाअत अता फ़रमा अल्लाहु अकबर! ऐ गुनाहगाराने उम्मत! क्या तुमने अपने मालिक व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की यह कमाल राफ़त व रहमत अपने हाल पर न देखी? कि बारगाहे इलाही अज़्ज़ जलालुहू से तीन सवाल हुज़ूर को मिले कि जो चाहो मांग लो अता होगा। हुज़ूर ने उनमें कोई सवाल अपनी ज़ाते पाक के लिए न रखा, सब तुम्हारे ही काम में सर्फ़ फ़रमा दिए। दो सवाल दुनिया में किए वह भी तुम्हारे ही वास्ते --- तीसरा आख़िरत को उठा रखा वह तुम्हारी उस अज़ीम हाजत के वास्ते जब उस मेहरबान मौला रऊफ़ुर्रहीम आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सिवा कोई काम आने वाला बिगड़ी बनाने वाला न होगा --- सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ---- हक़ फ़रमाया ----- अल्लाह तआला ने "जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिराँ है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान"

वल्लाहिल अज़ीम क़सम उसकी जिसने उन्हें हम पर मेहरबान किया कि हरगिज़ हरगिज़ कोई माँ अपने अज़ीज़ प्यारे इकलौते बेटे पर इतनी मेहरबान नहीं जिस क़द्र वह अपने एक उम्मती पर मेहरबान हैं (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)

इलाही! तू हमारा इज्ज़ (आजज़ी) व .जुअफ़ (कमज़ोर होना) और उनके हुक़ूक़े अज़ीमया की अज़मत जानता है ऐ क़ादिर! ऐ वाजिद! ऐ माजिद! हमारी तरफ़ से उन पर और उनकी आल पर वह बरकत वाली दुरूदें नाज़िल फ़रमा जो उनके हुक़ूक़ को वाफ़ी हों और उनकी रहमतों को मुकाफ़ी।

सुब्हानल्लाह! उम्मतियों ने उनकी रहमतों का यह मुआवज़ा रखा कि कोई अफ़ज़लियत में तशकीक निकालता है (यानी उनके सबसे अफ़ज़ल होने में शक करता है), कोई उनकी शफ़ाअत में शुबा डालता है, कोई उनकी तारीफ़ अपनी सी जानता है, कोई उनकी ताज़ीम पर बिगड़ कर कहता है ---- अफ़आले महब्बत का बिदअत नाम --- इज्लाले अदब पर शिर्क के अहकाम। (यानी हमारे आक़ा तो हम पर इतने मेहरबान कि हर वक़्त हमें याद रखें और कुछ लोग हैं कि उनके मरतबे में शक करते हैं बल्कि बाज़ तो अपने जैसा बशर जानते हैं) लाहौला वलाक़ुव्वता इल्लाबिल्ला हिल अलिइयिल अज़ीम। ------ इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। (रोते रोते मुफ़्ती साहब की हिचकियाँ बंध गईं)

अब्दुल्लाह : वाह वाह सुब्हानल्लाह क़ुर्बान जाऊं शफ़ीउल मुज़निबीन पर। वाक़ई शफ़ाअत सिर्फ़ उनके लिए नहीं है जो ... न माने बाक़ी सब के लिए [illegible] ... के लिए किसके ... जितनी जिसको महब्बत न हो ...

बिदअत का बयान

अब्दुल्लाह : कुछ फ़ुरूई मसाइल पर बात कीजिए?

मुफ़्ती साहब : अब फ़ुरूई मसाइल की बात आप शुरू करना चाहते हैं तो इससे पहले यह समझना ज़रूरी है कि हमारा इख़्तेलाफ़ फ़ुरूई मसाइल का नहीं बल्कि अक़ाइद का है और हमें इनसे अक़ाइद पर ही बहस करना चाहिए। इसकी एक वजह यह भी है कि हम लोगों में बदआमालियाँ इतनी बढ़ चुकीं हैं कि हमें अपना सही मज़हब ग़लत नज़र आने लगता है और यह हमारी बदआमालियों को दिखा कर हमें हराने की कोशिश करते हैं और हम जवाब नहीं दे पाते। ----- इनके अलावा इनके यहाँ बिदअत का बहुत ख़र्चा है और बात बात पर बिदअत का फ़तवा लगाते हैं। लिहाज़ बिदअत के बारे में जानना बहुत ज़रूरी है।

लुग़त में नई चीज़ को बिदअत कहते हैं और शरा की बोली में बिदअत वह चीज़ है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ज़माने के बाद हुई। हज़रते मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं कि इमाम नौवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया ऐसी चीज़ जिसकी मिसाल पहले ज़माने में न हो (लुग़त में) उसको बिदअत कहते हैं और शरा में बिदअत यह है कि किसी ऐसी चीज़ का ईजाद करना जो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़ाहिरी ज़माने में न थी। (मिरक़ात जिल्द अव्वल)

बिदअत हस्ना भी होती है और सइय्या भी होती है। हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी किताब 'अशिअतुल्लमआत' जिल्द अव्वल में फ़रमाते हैं जो बिदअत कि हुज़ूर की सुन्नत के उसूल व क़वाइद के मुताबिक़ है और उसी पर कियास की गई है उसको बिदअते हसना कहते हैं और जो बिदअत कि सुन्नत के मुख़ालिफ़ हो उसे बिदअते गुमराही या बिदअते सइया कहते हैं।

सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स इस्लाम में किसी अच्छे तरीक़े को राइज करेगा तो उसको अपने राइज करने का सवाब मिलेगा और उन लोगों के अमल करने का भी जो उसके बाद उस तरीक़े पर अमल करते रहेंगे और अमल करने वालों के सवाब में कोई कमी भी न होगी और जो इस्लाम में किसी बुरे तरीक़े को राइज करेगा तो उस शख़्स पर उसके राइज करने का भी गुनाह होगा और उन लोगों के अमल करने का भी गुनाह होगा जो उसके बाद उसके तरीक़े पर अमल करते रहेंगे और अमल करने वालों के गुनाह में कोई कमी न होगी। (मिश्कात शरीफ़ व अशिअतुल लमआत शरीफ़)

इस हदीस शरीफ़ से भी मालूम हुआ कि बिदअत हस्ना भी होती है और सइय्या भी। बिदअत हस्ना का इन्कार करना इस हदीस का इन्कार करना है। वैसे तो बिदअतों की कुल पाँच क़िस्में हैं मगर यहाँ हम इन्हीं दो बिदअतों को समझा रहे हैं और इससे हमारी बात हल हो जाती है।

बिदअतों का रिवाज

अब बिदअते हस्ना और बिदअते मुबाह जो मुसलमानों में राइज है उनकी थोड़ी तफ़सील मुलाहिज़ा फ़रमायें

1. मुसलमान बच्चों को ईमाने मुजमल और ईमाने मुफ़स्सल याद कराया जाता है। ईमान की यह दो क़िस्में और उनके यह दोनों नाम बिदअत हैं।

2. कलिमों की तादाद उनकी तरतीब और उनके नाम सब बिदअत हैं।

3. क़ुरआन शरीफ़ का 30 पारे बनाना, उनमें रुकू क़ाइम करना, उस पर ज़बर, ज़ेर वग़ैरा लगाना और आयतों का नम्बर लगाना सब बिदअत हैं।

4. हदीस को किताबी शक्ल में जमा करना, हदीस की क़िस्में बनाना कि यह सहीह है, यह हसन है, यह ज़ईफ़ है वग़ैरा–2 और फिर उनके अहकाम मुक़र्रर करना सब बिदअत हैं।

5. उसूले हदीस उसूले फ़िक़्ह के सारे क़ाइदे क़ानून बिदअत है।

6. फ़िक़्ह और इल्मे कलाम जिन पर आजकल दीन का दारोमदार है यह भी शुरू से आख़िर तक बिदअत हैं।

7. नमाज़ में ज़बान से नियत करना बिदअत और रमज़ान में बीस रकअत तरावीह की जमाअत पर हमेशगी करना बिदअत है जैसा कि ख़ुद हज़रते उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि यह बेहतरीन बिदअत है।

8. रोज़ा की व इफ़्तार की नियत ज़बान से करना बिदअत है।

9. ज़कात में मौजूदा सिक्का अदा करना और रुपया पैसा से फ़ितरा निकालना सब बिदअत है।

10. जहाज़ों, मोटरों वग़ैरह के ज़रिए हज करना और मोटरों में अराफ़ात जाना सब बिदअत है।

11. शरीअत के चार तरीक़े हनफ़ी, शाफ़ई, मालिकी और हंबली। इसी तरह चार सिलसिले क़ादिरी, चिश्ती, नक़्शबन्दी और सोहरवर्दी सब बिदअत है और इनके वज़ीफ़े, मुराक़बे, चिल्ले वग़ैरा भी बिदअत हैं।

12. हवाई जहाज़, रेल, मोटर, टेलीफोन, रेडियो, लाउडस्पीकर, कम्पयूटर, फोटो स्टेट, फ़ैक्स और इन्टरनेट सब बिदअत हैं।

इसी तरह हज़ारों बिदअत हम हर रोज़ सुबह शाम करते

हैं और सब ही करते हैं न इन्हें कोई बुरा कहता है न अच्छा तो फिर मीलाद, फातिहा, सलात, खड़े होकर सलाम, नियाज़ व नज़्र, रबीउल अव्वल शरीफ़ पर चरागाँ और उस जैसी बिदअत हस्ना को ही यह देवबन्दी और वहाबी क्यूँ रोकते हैं क्या इससे यह साफ़ ज़ाहिर नहीं होता कि इन बेदीन फिरक़ों को उन्हीं बिदअते हस्ना से चिढ़ है जिनमें सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम या बुजुर्गाने दीन की ताज़ीम व तारीफ़ हो।

मज़ारात पर हाज़िरी

अब्दुल्लाह : मज़ारात पर हाज़री देना कैसा और किस तरह देना चाहिए और कब यह शिर्क होगा।

मुफ़्ती साहब : मज़ार पर हाज़िरी देना जाइज़ और अगर किसी बुज़ुर्ग का मज़ार है तो फ़ैज़ लेना जाइज़ इसमें कोई शरई गिरफ़्त नहीं, वसीले और ग़ैरुल्लाह से मदद वाले सवाल पर हम बहुत कुछ समझा चुके। देखा यह गया है कि मज़ार पर हाज़री देते वक़्त अक्सर लोग हाज़री के आदाब का ख़्याल नहीं रखते और अपने अक़ीदत के इज़हार में हद से तजावुज़ कर जाते हैं। कोई मज़ार के बिल्कुल क़रीब जाकर अपना सिर, आखें, माथा वग़ैरह रगड़ कर हद से ज़्यादा अक़ीदत का इज़हार करता है जबकि मज़ार शरीफ़ पर हाज़री देते वक़्त कम से कम चार हाथ दूर रहने का हुक्म है। हाँ हाथ लगाकर मज़ार शरीफ़ को बोसा देना बिला कराहत जाइज़ है --- और उनके वसीले से मांगना बेशक जाइज़ और क़ुरआन और हदीस से साबित है बल्कि जिसको जो मिला वसीले से ही मिला, किसी ज़रिए से मिला, बग़ैर वसीले से किसी को कुछ नहीं मिलता। हाँ हर चीज़ का देने वाला अल्लाह और सिर्फ़ अल्लाह ही है अगर कोई यह अक़ीदा रखे कि उसे अल्लाह के सिवा किसी और ने दिया तो यह शिर्क है। हाँ वसीला और ज़रिया भी अल्लाह ही का पैदा किया हुआ है और अल्लाह हर शख़्स को वसीले से ही देता है। ----- कुछ लोग मज़ार शरीफ़ पर हाज़री के वक़्त इतनी ज़्यादा अक़ीदत दिखाते हैं कि मज़ार शरीफ़ के पास सजदे की सी हालत में हो जाते हैं हालांकि वह सजदा नहीं है, वहाँ सजदे की शराएत नहीं पाई जातीं मगर अवाम पर उसका असर ग़लत होगा और ऐसा करने का हुक्म भी नहीं, और अगर वाक़ई कोई ताज़ीमी सजदा करता है तो वह हराम है और अगर वह सजदा इबादतन यानी इबादत की नियत से करता है तो वह अहले सुन्नत वल जमाअत की नज़र में मुशरिक और काफ़िर है। मगर

लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ने वाले से ऐसी उम्मीद नहीं कि वह गैरुल्लाह को इबादत की नियत से सजदा करे अगर करता है तो यह कलिमए अव्वल का इन्कार है और ऐसा शख़्स इस्लाम से ख़ारिज है।

अब्दुल्लाह : औरतों का मज़ारात पर जाना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : सिवाए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रौज़ए मुबारक के औरतों की मज़ार पर बढ़ती तादाद बहुत बुरा अमल है। इसमें फ़ितने का बहुत ज़्यादा अन्देशा है जब मस्जिद में औरतों के जाने का हुक्म नहीं तो मज़ार पर क्यूं कर होगा --- और आज हम देख रहे हैं कि बाज़ जगह औरतें मर्दों से आगे आगे हैं इस काम में जबकि औरतों का मज़ारात पर जाना सख़्त मना है। हाँ औरत घर से बैठ कर ही नियाज़ फ़ातिहा कर सकती है मदद मांग सकती जैसा कि हुक्म है यानी शिर्क के दाइरे से बाहर रह कर मदद मांगे।

अब्दुल्लाह : मुजाविरों के हाल बड़े ख़राब हैं इसके बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

मुफ़्ती साहब : वाक़ई मज़ारात के मुजाविरों में देखा गया है कि आजकल ज़्यादातर इस ताक में रहते हैं कि कब कोई नज़राना देने वाला फंसे। मुजाविरों का ध्यान मज़ार की ख़िदमत करके साहिब-ए-मज़ार से फ़ैज़ हासिल करने की तरफ़ कम लगकर लोगों की जेब और फ़ातिहा की शीरीनी पर ज़्यादा रहता है। बाज़ जगह देखा गया है कि अगर मुजाविरों को नज़राना न मिले तो वह तरह-2 से डरा कर उससे रक़म ऐंठने की कोशिश करते हैं। बाज़ जगह नज़राना न देने पर कोसने और काम न होने की धमकियाँ भी सुनना पड़ती हैं। यह सब बातें इस क़द्र आम हो गई हैं कि लिखना शायद ज़रूरी भी नहीं है। बहुत सख़्त गुनाहगार हैं वो लोग जो चन्दे का पैसा उस मद में नहीं लगाते जिस मद के लिए चन्दा किया गया उससे वह अपना बैंक बैलेंस बढ़ाते हैं यहाँ तक कि देखा जा रहा है कि ज़कात के नाम पर लेकर लोग उसे अपने ज़ाती ख़र्च में लाते हैं यानी उस ग़रीब का हक़ मारते हैं जिसका हक़ अल्लाह तआला ने क़ुरआन में इरशाद फ़रमाया और इसे फ़र्ज़ फ़रमाया। अल्लाह तआला मुसलमानों को इस बला से बचाए।

अब्दुल्लाह : रबीउल अव्वल शरीफ़ में रोशनी करना या कराना इसके लिए चंदा इकट्ठा करना लंगर करना खाना का खिलाना कैसा है और जुलूस निकालना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : बारह रबीउल अव्वल शरीफ़ में रोशनी करना जुलूस निकालना बेशक जाइज़ है मगर याद रखें [illegible] अल्लाह

के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का जुलूस-ए-मुहम्मदी है इसका एहतराम बहुत ज़रूरी है और एहतराम का सही तरीका यही है कि इसमें कोई ग़ैर शरई बात न की जाए। देखा गया है कि लोग जुलूस के साथ-2 घंटों चलते हैं और बहुत जोश दिखाते हैं मगर नमाज़ क़ज़ा कर देते हैं क्या यही तरीका है रसूल का दामन, ग़ौस का दामन थामे रहने का। लिबास पर लोग ध्यान नहीं देते क्या सिर्फ़ एक दिन के लिए हम अंग्रेज़ी लिबास नहीं छोड़ सकते, सर पर टोपी नहीं रख सकते। बहुत लोगों को देखा गया है कि वह इस पाक जुलूस को आज की नापाक राजनीती से जोड़ देते हैं गर्ज़ यह है कि जुलूस का एहतराम करें ग़ैर शरई बात न करें। रबीउल अव्वल शरीफ़ में रोशनी करना मीलाद पढ़ना, नियाज़ नज़र करना, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर लाखों, अरबों बेगिनती सलाम व दुरूद पढ़ना, नात-ए-पाक पढ़ना यह सब बाइस-ए-बरकत व सवाब है। लंगर करना लोगों को जाइज़ खाने खिलाना बेशक जाइज़।

अब्दुल्लाह : आजकल उर्स में जो हाल हो गया है उस पर आप क्या कहना चाहेंगे?

मुफ़्ती साहब : किसी बुज़ुर्ग के उर्स में शरीक होते वक़्त ख़ास ध्यान यह रहे कि ग़ैर शरई बात से दूर रहें यही अक़ीदत है उन बुज़ुर्ग से और यही हुक्म है और तभी फ़ैज़ हासिल होगा। उर्स में ग़ैरशरई क़व्वाली, नाच रंग, फ़ोटो खिचाना, औरतों से ख़लत मलत सख़्त हराम है बल्कि उर्स के अलावा भी हराम है।

अब्दुल्लाह : ताक़ के बारे में हुक्म बतायें?

मुफ़्ती साहब : ताक़ पर फूल चढ़ाना, मन्नत मानना यह सब बेअस्ल, वाहियात है और हराम है।

अब्दुल्लाह : नमाज़ छोड़ कर नियाज़ का क्या हुक्म है?

मुफ़्ती साहब : नमाज़, रोज़ा वग़ैरह फ़र्ज़ को तर्क करके मज़ारात पर घूमते रहना, नियाज़ वग़ैरह करते रहना मुख़ालफ़ीन को यह कहने का मौक़ा देना हैं कि यह अल्लाह से न मांगकर ग़ैरुल्लाह से मांगते हैं। बेशक अल्लाह के वली अल्लाह के हुक्म और उसकी दी हुई ताक़त से मदद फ़रमाते हैं और बिगड़े काम बनाते हैं, मगर जब हम अपनी बदआमालियों से अल्लाह और उसके रसूल को नाराज़ किए हैं तो क्यूं हम हक़दार होंगे अल्लाह के वली से फ़ैज़ हासिल करने के। याद रखिए जब तक फ़र्ज़ जिम्मे होता है नफ़्ल मक़बूल नहीं होता।

ईसाले सवाब सुन्नत है और सुबूते फ़ातिहा

अब्दुल्लाह : ईसाले सवाब का मतलब क्या?

मुफ़्ती साहब : मुसलमान के दुनिया से जाने के बाद उसे सवाब भेजने को ईसाले सवाब कहते हैं। ईसाल का मतलब है भेजना और सवाब का मतलब है आमाल का बदला या वह चीज़ जिससे इन्सान अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमत व मग़फ़िरत और रसूलुल्लाह की जानिब से शफ़ाअत का मुस्तहिक़ हो जाता है।

अब्दुल्लाह : कुर्आन से कोई दलील इस बात की कि ज़िन्दा लोगों की तरफ़ से मुर्दों को दुआ व ईसाले सवाब की [illegible] पर किसी क़िस्म का नफ़ा पहुँचता है?

मुफ़्ती साहब : जी हाँ! अल्लाह तआला फ़रमाता है ------ ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे माँ बाप को और सब मुसलमानों को जिस दिन हिसाब क़ाइम हो। (सूरह इब्राहीम पारा 13 आयत 41) ---- वह जो अर्श उठाते हैं और जो उसके गिर्द हैं अपने रब की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बोलते हैं और उस पर ईमान लाते और मुसलमानों के लिए मग़फ़िरत मांगते हैं (सूरत मोमिन पारा 24 आयत 7) ---- और वह जो उनके बाद आए अर्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाईयों को जो हमसे पहले ईमान लाए (सूरह हश्र पारा 28 आयत 10) ------ इन आयाते कुर्आन में मोमिनीन के लिए दुआ व मग़फ़िरत हो रही है और जितने गुज़रे हुए और आने वाले दोनों शामिल हैं।

अब्दुल्लाह : अहादीस से कुछ दलाइल सुनायें?

मुफ़्ती साहब : हदीसें तो बहुत आई हैं मगर चन्द सुनिये

<u>हदीस</u> : मुस्लिम शरीफ़ में है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक मेंढा मंगा कर मेंढे को ज़िबह करते वक़्त फ़रमाया "अल्लाह के नाम से ऐ अल्लाह! मुहम्मद और आले मुहम्मद और उम्मते मुहम्मद की तरफ़ से इसे कबूल फ़रमा" फिर उसकी क़ुर्बानी की।

<u>हदीस</u> : तबरानी औसत में है हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब तुम में से कोई शख़्स कुछ नफ़्ल ख़ैरात करे तो चाहिए कि उसे माँ बाप की तरफ़ से करे क्यूँकि उसका सवाब उन दोनों को मिलेगा और उस शख़्स के सवाब में कुछ भी कम न किया जाएगा

<u>हदीस</u> : तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि हज़रते अली रदियल्लाहु

तआला अन्हु दो मेंढों की कुर्बानी किया करते थे एक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ से और एक अपनी तरफ से। आप से इसके मुतअल्लिक पूछा गया तो फरमाया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इसका हुक्म फरमाया मैं इसे कभी भी न छोड़ूंगा।

हदीस : अबू दाऊद में मरवी है कि आस इब्ने वाइल ने वसीयत की कि उसकी तरफ से सौ गुलाम आज़ाद किए जायें तो उसके बेटे हश्शाम ने 50 गुलाम आज़ाद कर दिए। उसके बेटे हज़रते अम्र इब्ने आस रदियल्लाहु तआला अन्हु ने बक़िया 50 गुलाम आज़ाद करने का इरादा किया लेकिन उन्होंने सोचा कि पहले इस सिलसिले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया जाए। चुनांचे वह आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और बक़िया गुलाम आज़ाद करने के बारे में दरयाफ़्त किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "अगर तेरा बाप इस्लाम व ईमान के साथ दुनिया से रुख़सत होता और फिर तू उसकी तरफ से गुलाम आज़ाद करता या सदक़ा करता या हज करता तो उन आमाल का सवाब उसको पहुँच जाता।

इन अहादीस से ये साबित हुआ

1. ईसाले सवाब जाइज़ और आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और सहाबा की सुन्नत है।

2. आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और सहाबा ने ईसाले सवाब के लिए तरग़ीब व वसीयत की।

3. इबादत चाहे बदनी हो या माली सब का ईसाले सवाब किया जा सकता है और सवाब करने वाले के सवाब में कमी न होगी।

4. ईसाले सवाब दुनिया से जा चुके, मौजूदा और आने वाले सभी मुसलमानों को कर सकते हैं।

5. ईसाले सवाब सिर्फ़ मुसलमान के लिए है काफ़िर को नहीं और अगर कोई कर भी दे तो काफ़िर को कोई फ़ायदा नहीं होगा।

6. ईसाले सवाब की बरकत से मरने वाले के गुनाह मिटा दिए जाते हैं और ईसाले सवाब मुर्दों के लिए नजात का सबब है।

अब्दुल्लाह : ईसाले सवाब की बरकत से सवाब व नजात व गुनाहों का कफ़्फ़ारा के अलावा मुर्दों को और क्या फ़ायदा हासिल होता है?

मुफ़्ती साहब : मोतबर किताबों में बहुत से वाक़ियात ऐसे मिलते हैं कि मरने के बाद किसी ने ख़्वाब में अपने अज़ीज़ को ईसाले सवाब की बरकत देखी। मगर यहाँ वाक़ियात न

मुताबिक़ एक हदीस शरीफ़ "हज़रते अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुना कि जब कोई मय्यत को ईसाले सवाब करता है तो जिब्रील अलैहिस्सलाम उसे एक नूरानी तबाक़ में रख कर क़ब्र के किनारे खड़े हो जाते हैं फिर इरशाद फ़रमाते हैं कि ऐ गहरी क़ब्र के साथी यह तोहफ़ा तेरे घर वालों ने भेजा है इसे क़बूल कर तो फिर जब वह सवाब उसकी क़ब्र में दाख़िल होता है तो वह मुर्दा उससे बेहद ख़ुशी महसूस करता है और उसके वह पड़ोसी ग़मगीन हो जाते हैं कि जिनकी तरफ़ कोई शय हदिया नहीं की गई होती। (तिबरानी)

अब्दुल्लाह : फ़र्ज़ व वाजिब व नफ़ल में से किस किस का सवाब पहुँचाया जा सकता है? जैसे किसी ने एक नेकी दस मुर्दों को ईसाल की तो क्या सब को एक एक नेकी मिलेगी या वह एक नेकी ही दस टुकड़े में तक़सीम की जाएगी।

मुफ़्ती साहब : ईसाले सवाब के लिए नफ़्ल नमाज़ रोज़ा व सदक़ा व ख़ैरात की ख़ुसूसियत नहीं बल्कि हर फ़र्ज़ व वाजिब व सुन्नत व मुस्तहब का सवाब पहुँचाया जा सकता है। और हर एक को पूरी एक नेकी मिलेगी और ईसाल करने वाले के सवाब में भी कमी न होगी बल्कि उसे सब के बराबर सवाब मिलेगा यानी दस सौ नेकी मिलेगी। हवाले के लिए मशहूर किताब रद्दुल मुहतार का मसअला देखें।

अब्दुल्लाह : ईसाले सवाब के लिए शरीअत की तरफ़ से कोई ख़ास वक़्त मुक़र्रर नहीं तो फिर आजकल तीजा चालीसवाँ ग्यारहवीं बारहवीं कूँडे के नाम से ईसाले सवाब के लिए दिन क्यूँ मख़सूस है?

मुफ़्ती साहब : वक़्त मुक़र्रर करना दो तरह से है 1. शरई यानी जिसे शरीअत ने मुक़र्रर किया है जैसे नमाज़ का वक़्त 2. उर्फ़ी यानी जिसे लोग अपनी सुहूलत के लिए मुक़र्रर कर लें जैसे जमाअत के लिए वक़्त तय कर लेना, वाज़ के लिए, तक़रीर के लिए ----- तीजा चालीसवाँ वग़ैरह दूसरे वक़्त यानी उर्फ़ी की मिसालें हैं। इसकी बहुत सी मिसालें हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व सहाबा से भी मिलती जिन्हें हम शरई मिसाल बना सकते हैं।

अब्दुल्लाह : अगर कोई शख़्स मसअला जानने के बावजूद ईसाले सवाब के लिए मख़सूस खाने को हराम और ईसाले सवाब करने वाले को मुशरिक बिदअती क़रार देता है तो शरई लिहाज़ से उसके लिए क्या हुक्म है?

मुफ़्ती साहब : मुसलमान तो आख़िर इस खाने को कि जिस पर अल्लाह तआला का नाम, क़ुरआन पढ़ा गया हराम और सुन्नत

पर अमल पैरा होने वाले को गुनहगार बिदअती क़रार दे वह खुद बिदअती व गुनहगार है। जब अल्लाह व रसूल ने इसे मना नहीं किया तो यह कौन होते हैं मना करने वाले। ऐसे लोगो से रोज़े कियामत सवाल होगा। अल्लाह तआला सूरह माइदह की आयत न. 87 में इरशाद फ़रमाता है ऐ ईमान वालो! हराम न ठहराओ वह सुथरी चीजें कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल कीं और हद से न बढ़ो बेशक हद से बढ़ने वाले अल्लाह को नापसन्द हैं।

अब्दुल्लाह : इसाले सवाब (मुर्दो को सवाब पहुँचाना) किस किस फ़िरक़े के नज़दीक जाइज़ है?

मुफ़्ती साहब : सभी फ़िरकों में।

अब्दुल्लाह : फिर झगड़ा क्यूँ?

मुफ़्ती साहब : बख़्शने के तरीके में इख़्तेलाफ़ है। हम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वसीले से बख़्शते हैं यह झगड़ा है। वसीले पर बात हम कर चुके हैं।

अब्दुल्लाह : हाथ उठा कर दुआ करना हदीस से साबित है?

मुफ़्ती साहब : इसाले सवाब (मुर्दों को सवाब पहुँचाना) भी एक दुआ है लिहाज़ा इसाले सवाब हाथ उठा कर करना भी जाइज़ है?

अब्दुल्लाह : इसाले सवाब जबकि खाना खिलाने का सवाब पहुँचाना साथ ही कुछ पढ़ना भी हो खाना कहाँ रखना चाहिए?

मुफ़्ती साहब : आप ही बतायें के खाना सामने रखें, दायें या बायें या ऊपर रखना चाहिए?

अब्दुल्लाह : ज़ाहिर है एक देहाती भी कहे देगा कि सामने ही रखना बेहतर है।

मुफ़्ती साहब : अब सामने रखने को बहुत ही बुरी बिदअत माना जाए क्या अक़्ल तसलीम करती है। एक हदीस बुख़ारी शरीफ़ की मुलाहिज़ा फ़रमायें हज़रते अनस इब्ने मालिक फ़रमाते हैं कि हज़रते अबू तल्हा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रते उम्मे सुलेम रदियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की आवाज़ सुनी है जो जईफ़ मालूम होती है मुझे यूँ महसूस होता है कि आपको भूक लगी हुई है क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है? तो उन्होंने कहा हाँ। फिर उन्होंने जौ की चन्द रोटियाँ निकालीं और एक ओढ़नी के कोने में लपेट कर मुझे पकड़ाई और बाकी ओढ़नी मुझे उढ़ा कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में भेजा। जब मैं आपकी ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ तो वहाँ काफ़ी लोग मौजूद थे। मैं दूसरे लोगों के साथ खड़ा हो गया। --- सरकारे दो आलम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया। क्या तुझे अबू तल्हा ने भेजा है? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ। तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने पास हाज़िर लोगों से फ़रमाया उठो। हज़रते अनस फ़रमाते हैं कि वो सब चल पड़े तो मैं उनके आगे आगे चल कर अबू तल्हा के पास आकर उन्हें उस चीज़ की ख़बर दी तो अबू तल्हा ने उम्मे सुलैम रदियल्लाहु तआला अन्हा से कहा कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ और लोग भी आ रहे हैं और हमारे पास कोई ऐसी चीज़ मौजूद नहीं जो उन सबको खिला सकें। हज़रते उम्मे सुलैम ने कहा अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं। हज़रते अनस फ़रमाते हैं हज़िरते अबू तल्हा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इस्तकबाल किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और अबू तल्हा दोनों घर में दाख़िल हुए। ------ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नेफ़रमाया ऐ उम्मे सुलैम तेरे पासओ कुछ है ले आओ तो वह वही रोटियाँ लेकर हाज़िर हुई। रहमते दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन रोटियों को तोड़ने का हुक्म दिया। फिर उम्मे सुलैम ने उन रोटियों के टुकड़ों पर घी की कुप्पी औंधा कर उनको रोग़नी कर दिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन टुकड़ों पर जो चाहा पढ़ा, फिर इरशाद फ़रमाया दस शख़्सों को बुलाओ। जो आए और सैर होकर खा कर चले गए। फिर आपने इरशाद फ़रमाया और दस लोगों को बुलाओ। वो भी आए और सैर होकर खा कर चले गए। फिर फ़रमाया दस और लोगों को बुलाओ। वो भी सैर होकर खा कर चले गए। ग़र्ज़ सब लोग सैर हो गए और 70 या 80 लोग थे। ---- अब इस हदीस से सामने रख कर पढ़ना बरकत होना दोनों शामिल हैं कि नहीं।

अब्दुल्लाह : सवाल : किसी ने सिर्फ़ ग़रीबों को खिलाने की नियत से खाना पकाया और फ़ातिहा भी की उसे अमीर को खाना कैसा?

मुफ़्ती साहब : नाजाइज़ है लेकिन बाज़ नियाज़ को बुरा भला कहने वालों को हमने ख़ुद खाते देखा इसका तो मतलब यही हुआ कि मौक़ा देख कर बढ़िया पका हो तो खा लो।

अब्दुल्लाह : किसी ने अमीरों और ग़रीबों सभी को खिलाने की नियत से खाना पकाया और फ़ातिहा भी की उसे अमीर को खाना कैसा?

मुफ़्ती साहब : अमीरों को इसका खाना बिला कराहत जाइज़ है।

अब्दुल्लाह : किसी ने जाइज़ चीज़ पर फ़ातिहा की और कोई ख़ास नियत न की फिर ख़ुद भी खाई और अपने बच्चों को भी खिलाई यह कैसा है? कुछ लोग हर जुमेरात को फ़ातिहा दिलाते हैं. हर त्योहार के मौक़े पर नियाज़ फ़ातिहा बल्कि बाज़ लोग रोज़ फ़ातिहा करते हैं एक अमल को इतना ज़्यादा करना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : यह काम सही है बल्कि इससे बरकत होती है। सारा दारोमदार नियत पर है जैसी नियत वैसा हुक्म वैसी बरकत।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग नियाज़ को बड़ी धूम से करते हैं बाक़ायदा बुलावे दिए जाते हैं बड़े बड़े लोगों को बुलाया जाता है। देगों की गिनती आटे की मिक़दार तरह तरह से अपनी वाहवाही लूटने की फ़िक्र होती है यह सब कैसा है?

मुफ़्ती साहब : सारा दारोमदार नियत पर है अल्लाह तआला को रिया व दिखावा पसन्द नहीं न ही क़बूल है हाँ अगर नियत साफ़ हो तो बहुत सवाब पाएगा। ग़ौसे पाक रद्वियल्लाहु तआला अन्हु ने भूको को खाना खिलाने का सवाब समझाने के लिए फ़रमाया कि मैंने जितनी इबादात व रियाज़ात की मगर जितना अज्र व सवाब भूकों को खाना खिलाने में पाया उतना दूसरे अमल में नहीं अगर मुझे मालूम होता कि इतना सवाब है तो मैं ज़िन्दगी भर भूकों को खाना खिलाता रहता।

अब्दुल्लाह : माफ़ कीजिएगा तो आज से नमाज़ रोज़ा छोड़ कर नियाज़ में लग जाऊँ शायद इसी लिए यह सुन्नी नमाज़ न पढ़ कर मज़ारात पर घूमते रहते हैं और नियाज़ खाते खिलाते रहते हैं।

मुफ़्ती साहब : सुन्नीयों में बदअमली बढ़ती जा रही मगर अल्हम्दुलिल्लाह हम बदअक़ीदा नहीं।

अब्दुल्लाह : यह मेरी बात का जवाब न हुआ।

मुफ़्ती साहब : नफ़्ल आमाल का सवाब तभी क़बूल है जब फ़र्ज़ इबादात पूरी कर ले यानी नियाज़ तभी क़बूल होगी जब नमाज़ रोज़ा पूरे कर ले।

अब्दुल्लाह : तो पहले हमें फ़र्ज़ पूरे करना चाहिए, आप लोगों को समझाते क्यूँ नहीं कि तुम्हारी नियाज़ बेकार है जब तक फ़र्ज़ पूरे न हों।

मुफ़्ती साहब : बात ठीक है मगर अगर कोई नेक अमल कर रहा है तो उसे रोका नहीं जाएगा।

अब्दुल्लाह : मैं समझा नहीं।

मुफ़्ती साहब : इसको इस तरह समझिए कि एक शख़्स ने नफ़्ल नमाज़ की मन्नत मानी और उसका काम हो गया और

अब वह नमाज़ पढ़ रहा है तो क्या उसे रोका जाएगा कि तुम्हारे ज़िम्मे दस या बीस साल की नमाज़ें बाकी हैं लिहाज़ा यह मन्नत के नफ़्ल न पढ़ो।

अब्दुल्लाह : हाँ बात समझ आ गई कि अगर कोई नेक काम कर रहा है तो उसे रोका न जाए आहिस्ता आहिस्ता फ़र्ज़ भी पढ़ने लगेगा।

मुफ़्ती साहब : जी हाँ।

अब्दुल्लाह : क्या किसी वहाबी से फ़ातिहा दिलवा सकते हैं,

मुफ़्ती साहब : जिनके पास ईमान नहीं उनसे दिलवाने से क्या फ़ायदा। हमारे एक मिलने वाले हैं बेचारे कुछ नहीं जानते बेपढ़े हैं उन्होंने एक मरतबा फ़ातिहा के लिए कुछ मंगाया और एक मौलवी साहब को पकड़ लाए जो तबलीगी जमात के थे। ख़ैर फ़ातिहा तो उन्होंने दे दी मगर जब उनसे ज़रा सा चखने के लिए कहा गया तो बोले यह हराम है। वह ग़रीब बोला मौलवी साहब मैं बेपढ़ा ज़रूर हूँ मगर यह बताइये कि यही खाना अगर मैं आपको फ़ातिहा से पहले खिलाना चाहता तो आप बड़े शौक़ से खाते यह अल्लाह का कलाम पढ़ते ही हराम कैसे हो गया। खाना पाक कमाई पाक सफ़ाई से बनाया गया और फिर अल्लाह का कलाम पाक अब उसका खाना हराम हमें समझा ज़रूर दें। मौलवी साहब अपना सा मुँह लेकर चले गए।

अब्दुल्लाह : मुझे तो हंसी आ रही है आपने ऐसी बात सुना दी। कुछ लोग कहते हैं कि फ़ातिहा का तबर्रुक है पेट में जाएगा पाख़ना बनेगा हड्डी वग़ैरह पैरों के नीचे आएगी इस लिए अल्लाह का कलाम पढ़ना ही नहीं चाहिए वैसे ही बख़्श देना चाहिए।

मुफ़्ती साहब : बेअदबी के डर से फ़ातिहा न देना बेकार की बात है अरे अदब करना तो उस पर लाज़िम है जिसके पास तबर्रुक है क्या बच्चों के हाथ में क़ुर्आन देना मना है हाँ उन्हें अदब सिखाना ज़रूरी है और फिर बच्चे का हुक्म अलग है। ज़मज़म शरीफ़ को लोग पीते हैं कितना बड़ा तबर्रुक है अब क्या पेशाब नहीं करेंगे या ज़मज़म शरीफ़ नहीं पियेंगे। ज़मज़म शरीफ इस्तेमाल करने पर कभी कभी गिर भी जाता है तो क्या ज़बान से चाटने का हुक्म है बल्कि मैंने बाज़ लोगों को ज़मज़म शरीफ़ से वुज़ू भी करते देखा है। क़ुर्बानी का गोश्त और फिर हर ज़बीहे पर अल्लाह का नाम पढ़ना ज़रूरी है वर्ना वह हराम हो जाएगा अब बताईये क्या बग़ैर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर ज़िबह किया जाए। यह सब बेकार की बातें हैं इन्हें तो बस अल्लाह के वलियों और उनकी नियाज़ और नियाज़ के तबर्रुक से चिढ़ है।

अब्दुल्लाह : सवाब बख़्शने का सही तरीक़ा बतायें?

मुफ़्ती साहब : सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर तमाम नबियों को फिर तमाम सहाबा को फिर तमाम बुज़ुर्गों और तमाम मुसलमानों (जो हैं, जो गुज़र गए और जो आने वाले हैं) को और जिसके लिए फ़ातिहा है सबसे बाद में उसे बख़्शें।

अब्दुल्लाह : आने वाले मुसलमानों को भी। वह क्यूं?

मुफ़्ती साहब : इसका जवाब हो चुका है इतना और समझ लें कि आने वाले ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से दौर जितना दूर होगा उसमें ज़्यादा गुनाह व गुनाहगार होंगे इसलिए वो ज़्यादा मुस्तहिक़ हुए।

अब्दुल्लाह : नियाज़ देते में किसी ने क़ुर्आन पढ़ने में ग़लती की तो क्या हुक्म होगा?

मुफ़्ती साहब : कोई सवाब नहीं मिलेगा और जब सवाब ही न मिलेगा तो बख़्शेगा क्या --- और गुनहगार भी होगा। यहाँ बहुत इहतियात की ज़रूरत है अल्लाह माफ़ फ़रमाये।

अब्दुल्लाह : तीजा, चालीसवाँ, दसवाँ, बर्सी करना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : दावत न बनाकर ख़ालिस ईसाले सवाब के लिए करें तो बेहतरीन काम उसके हक़ में जो अब अमल नहीं कर सकता हमारे सवाब का मुहताज है। वह तरस रहा है इस बात के लिए कि कोई उसे पढ़ कर कुछ बख़्श दे। क़ब्रस्तान के मुर्दे तमन्ना करते हैं कि हमें कम से कम इतनी ज़िन्दगी मिल जाए कि दो रकआत नमाज़ पढ़ लें और यह भी तमन्ना करते हैं कि कोई अल्लाह का बन्दा उन्हें चलते चलते ही बख़्शता हुआ चला जाए तो क्या हमारे वह बुज़ुर्ग व रिश्तेदार जिनके हमारे ऊपर हज़ारों एहसानात हैं क्या हम इसलिए याद नहीं कर रहे कि हम उन्हें कुछ पढ़ कर बख़्श दें।

अब्दुल्लाह : हमारे माँ बाप और क़रीबी रिश्तेदार वाक़ई हमें इस नियत से तो बहुत याद करते होंगे कि हम उन्हें पढ़ कर बख़्शें। वह तो हमसे कह नहीं सकते और हमें तो सिर्फ़ ज़बान हिलाना है।

मुफ़्ती साहब : बल्कि ज़बान भी नहीं हिलाना है सिर्फ़ यह नियत दिल ही दिल में कर लें कि हमारे तमाम अमलों का सवाब हमारे माँ बाप और सब मुसलमानों को मिले।

अब्दुल्लाह : वाक़ई यह सिलसिला चलता रहे तो तमाम मुसलमानों की बख़्शिश का सामान ख़ुद ब ख़ुद हो जाए।

मुफ़्ती साहब : लेकिन इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि हम अमल छोड़ दें और यह सोचने लगें कि हमें कोई पढ़ कर बख़्श देगा। बल्कि अपनी औलाद और हमसे महब्बत रखने वालों को वसीयत कर जायें कि वह हमारे जाने के बाद नेक

अमल और सही अदाएगी के साथ कुर्आन पढ़ कर बख़्शें। अब्दुल्लाह साहब आपसे यह गुज़ारिश है कि मेरे मरने के बाद मुझे जब भी मेरी याद आए तो ज़रूरकुछ ने कुछ पढ़ कर बख़्शना और इस बात का ख़्याल रखना जो पढ़ना वह सही पढ़ कर बख़्शना ग़लत पढ़ते हों तो हमें उसकी न ज़रूरत होगी न सवाब मिलेगा। हाँ अगर पढ़ने में ग़लती करते हों तो ख़ाली वक़्त में आ जायें इन्शा अल्लाह आपका कुर्आन सही करा दूंगा।

अब्दुल्लाह : क्या औरतें फ़ातिहा दे सकतीं हैं?

मुफ़्ती साहब : हाँ दे सकतीं है।

अब्दुल्लाह : वाक़ई माँ बाप का तो यह हक़ है कि उन्हें ज़रूर सही पढ़ कर बख़्शा जाए।

मुफ़्ती साहब : जब आपने माँ बाप का ज़िक्र छेड़ा है तो एक बात बहुत बढ़िया सुनें। वह यह कि नेक औलाद माँ बाप के लिए सदक़ए जारिया। सदक़ए जारिया का मतलब यह है कि वह अमल जो मरने के बाद भी जारी रहे। औलाद के नेक अमल माँ बाप देख कर ख़ुश होते हैं और इसका सवाब उन्हें मिलता है। और औलाद को चाहिए कि अगर वह वालिदैन की ज़िन्दगी में नेक न थी तो अब ज़्यादा से ज़्यादा नेक अमल करके माँ बाप को फ़ायदा पहुँचा सकता है। ग़ौर कीजिए ख़ुद नेक बनिए और अपनी औलाद को नेक राह पर डालिए। आलिम नहीं बना सकते तो कम से कम नेक मुसलमान तो बना सकते हैं। क्या ही प्यारी बात क्या ही प्यारा मज़हबे इस्लाम।

अब्दुल्लाह : मैंने एक साहब को देखा कि वह वहाबी अक़ाइद रखते थे मगर अब उन्होंने तौबा कर ली और उनके वालिद उसी वहाबी अक़ीदे पर दुनिया से गए, यह बात वह अच्छी तरह जानते थे। लेकिन अपने वालिद के मरने के बाद उन्होंने तीजा चालीसवाँ सब किया। इस पर कुछ लोगों ने शिरकत न की। अब बायकाट करने वालों की इस हरकत से उन्हें तकलीफ़ पहुँची। अब देखिए कि ऐसा करना तो मुनासिब नहीं लगता कि अब तो यह सब सुन्नी हो गए हैं।

मुफ़्ती साहब : बायकाट करने वाले हक़ पर हैं वह इसलिए कि मसअला यह है कि जो शख़्स वाक़ई कुफ़्री वहाबी अक़ाइद पर दुनिया से गया। वहाबी ही नहीं कोई भी अगर कुफ़्र पर दुनिया से गया तो उसके लिए इसाले सवाब नहीं। इस मसअले में तो हर फ़िरक़ा इसी पर है कि काफ़िर व मुरतद के लिए ईसाले सवाब है ही नहीं। बल्कि नुक़सान यह है कि मरने वाले काफ़िर को तो कोई फ़ायदा पहुँचने वाला नहीं हाँ सवाब बख़्शने वाले पर कुफ़्र लाज़िम आएगा जबकि ख़ूब जानता हो कि यह ईमान पर नहीं गया।

अब्दुल्लाह : अरे हमें यह मसअला तो मालूम ही न था हम तो हर जगह सुन्नी और सुन्नियों का अमल समझ कर चले जाते हैं। इसमें तो बड़ी एहतियात की ज़रूरत है।
मुफ़्ती साहब : जी हाँ।
अब्दुल्लाह : और जिनके बारे में पता ही न हो तो क्या करे?
मुफ़्ती साहब : वहाँ मोमिन के लिए नेक गुमान ही करना बेहतर है और फिर यह हुक्म उसी के लिए है जो बेईमान गया। इसकी तफ़सील लम्बी है फ़ुरसत से समझ लें।
अब्दुल्लाह : फ़कीर को कर्ज़ लेकर तीजा चालसवाँ बर्सी वग़ैरह करना कैसा है?
मुफ़्ती साहब : कर्ज़ लेकर करना नाजाइज़ है।
अब्दुल्लाह : तीजा चालीसवाँ बर्सी वग़ैरह की अस्ल क्या है?
मुफ़्ती साहब : ईसाले सवाब ही इन सब की अस्ल है।
अब्दुल्लाह : एक रसम यह है कि मरने के दिन से ही रिश्ते की औरतें जमा हो जाती हैं और कई कई दिन तक कभी कभी चालीसवें तक शादियों जैसा खाना चलता रहता है यहाँ तक कि पान छालिया भी चलता है। यह सब कैसा है?
मुफ़्ती साहब : इस नापाक रसम में बहुत फ़ितने हैं यह गुनाह है, बिदअत है ।
अब्दुल्लाह : मय्यत के घर वालों और ख़ास बाहर से आए मेहमानों के लिए, सिर्फ़ एक दिन का खाना पका कर भेजें तो कैसा है?
मुफ़्ती साहब : जाइज़ है। हाँ अगर परदेसी मेहमानों के लिए भी पकवा कर भेज दिया तो जाइज़ है कि वो परदेसी खाने के लिए कहाँ मारे मारे फिरेंगे।
अब्दुल्लाह : तीजे के चने बताशे जब कि मालिक ने सबके बांटने की नियत से ख़रीदे हों खाना जाइज़ है?
मुफ़्ती साहब : हाँ।
अब्दुल्लाह : देवबन्दी नियाज़ के खाने को खाना कैसा जानते हैं?
मुफ़्ती साहब : देवबन्दियों के मौ. रशीद अहमद गंगोही ने फ़तावा रशीदया में है कि नियाज़ नज़र का खाना हराम और होली दीवाली की पूरियाँ खाना जाइज़ लिखा है।
अब्दुल्लाह : कुछ लोग कहते हैं कि अमीर के लिए नियाज़ का खाना हराम है चाहे खिलाने वाले ने दोनों के खिलाने की नियत रखी हो।
मुफ़्ती साहब : क्या आप बता सकते हैं कि वही हलाल चीज़ जो फ़ातिहा से पहले हलाल थी अल्लाह का कलाम पढ़ते ही हराम कैसे हो गई।

अब्दुल्लाह : देवबन्दियों के मौ रशीद अहमद गंगोही ने लिखा कि कौआ खाना सवाब है क्या यह सही है?

मुफ़्ती साहब : हाँ देवबन्दियों ने कौआ खाना सवाब लिखा है। सुबूत के लिए देवबन्दी मौलवी मो रशीद अहमद गंगोही की फ़तावा रशीदया पेज 597 देखें।

अरवाहे मोमिनीन

अब्दुल्लाह : क्या मोमिनीन की रूहें मरने के बाद उनके घर पर आती हैं?

मुफ़्ती साहब : शैख़ुल इसलाम कश्फ़ुल अज़ा में फ़रमाते हैं "ग़राइब और ख़ज़ाना में है कि मोमिनों की रूहें हर जुमा की रात को, ईद और आशूरा के दिन और शबे बराअत में अपने घर आती हैं और दरवाज़े के बाहर खड़ी हो कर रंज व अफ़सोस के लहजे में बलन्द आवाज़ से पुकारती हैं कि ऐ मेरे घर वालो ऐ मेरे बच्चो! और ऐ अज़ीज़ो! मुझ पर सदक़े के ज़रिए मेहरबानी करो"

अब्दुल्लाह : क्या घर के अलावा भी कहीं आती जाती हैं?

मुफ़्ती साहब : हदीस में आया कि बेशक दुनिया काफ़िर के लिए जन्नत है और मुसलमान के लिए क़ैदख़ाना है। जब मुसलमान की जान निकलती है तो उसकी मिसाल ऐसी है जैसे कि कोई शख़्स पिंजरे में था अब आज़ाद कर दिया गया तो ज़मीन में गश्त करने लगा चलने फिरने लगा?

निदाए या रसूलल्लाह

अब्दुल्लाह : हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को "या रसूलल्लाह" कह कर पुकारना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : जाइज़ है।

अब्दुल्लाह : क़ुर्आन व हदीस से कुछ हवालाजात पेश करे?

मुफ़्ती साहब :

1. क़ुर्आन में निदा इस तरह आई या अय्युहन्नबी, या अय्युहर्रसूल, या अय्युहल मुज़्ज़म्मिल, या अय्युहल मुद्दस्सिर वग़ैरह
2. या मूसा, या ईसा, या यहया, या इब्राहीम, या अदम वग़ैरह
3. या अय्युहल्लज़ीना कह कर मुसलमानों को निदा की गई
4. मिश्कात शरीफ़ में है हज़रते जिब्रील व हज़रते मलिकुल मौत ने या मुहम्मद कह कर पुकारा
5. एक हदीस में एक नाबीना के दुआ के अल्फ़ाज़ में या मुहम्मद मैंने आपके ज़रिए से 'अपने रब की तरफ़ अपनी इस हाजत में तवज्जोह की ताकि हाजत पूरी हो

अब्दुल्लाह : कुछ किताबों के नाम बताइये जिनमें "या रसूलल्लाह" कहने का सुबूत मिलता है?

मुफ़्ती साहब :
1. शिफ़ाउस्सेकाम -- अल्लामा अब्दुल हसन अली सुबकी।
2. मवाहिबे लदुन्निया -- इमाम अहमद क़ुस्तलानी।
3. शरहे बुख़ारी व शरहे मवाहिब -- अल्लामा ज़रक़ानी।
4. अश्अतुल लमआत शरहे मिश्कात, जज़्बुल क़ुलूब, मदारिजुन्नुबुव्वत --- तीनों शाह मुहद्दिस हक़ देहलवी
5. अफ़ज़लुल कुरअ शरहे इमामुलकुरअ -- इमाम इब्ने हजर मक्की

अब्दुल्लाह : नमाज़ में अत्तहिय्यात में आता है "अस्सलामुअलैका अय्युहन्नबीय्यु व रहमतुल्लाहि व बराकातुह" क्या इसे निदाए या रसूलल्लाह कह सकते हैं?

मुफ़्ती साहब : हाँ यह निदाए या रसूलल्लाह है और ज़रूरी है कि नमाज़ न होगी और इससे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर सलाम का सुबूत भी है।

अब्दुल्लाह : कुछ मशहूर बुज़ुर्गों के नाम बतायें जिन्होंने निदा की हो?

मुफ़्ती साहब :
1. क़सीदा बुर्दाह शरीफ़ के एक शेर का तर्जमा है ऐ बेहतरीन मख़लूक़ आपके सिवा मेरा कोई नहीं कि मुसीबत के वक़्त जिसकी पनाह लूँ।
2. इमाम ज़ैनुल आबेदीन रदियल्लाहु तआला अन्हु के क़सीदे के एक शेर का तर्जमा है कि ऐ रहमतुल्लिल आलमीन ज़ैनुल आबेदीन की मदद को पहुँचो वह इस अज़दहाम में ज़ालिमों के हाथों में क़ैद है।
3. मौलाना जामी अलैहिर्रहमह अपने एक शेर में फ़रमाते हैं जिसका तर्जमा है कि जुदाई से आलम की जान निकल रही है या नबी रहम फ़रमाओ रहम फ़रमाओ क्या आप रहमतुल्लिल आलमीन नहीं हैं फिर हम मुजरिमों से फ़ारिग़ क्यूं हो बैठे।
4. हज़रते इमाम अबू हनीफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु के क़सीदे के एक शेर का तर्जमा है ऐ पेशवाओं के पेशवा मैं दिली इरादे से आपके पास आया हूँ आपकी रज़ा का उम्मीदवार हूँ और अपने को आपकी पनाह में देता हूँ

ताज़ियादारी

अब्दुल्लाह : ताज़ियादारी से मुतअल्लिक़ इनमें से क्या सही है
1. इमाम आली मक़ाम के रौज़े की सही नक़्ल बना कर मकान में रखी है
2. इमाम आली मक़ाम के रौज़े की नक़्ल में जानदार की कोई तसवीर नहीं।

3. इमामे हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के रौज़े का तुग़रा या कैलेन्डर लगा है

मुफ़्ती साहब : यही सभी सही व जाइज़ हैं।

अब्दुल्लाह : ताज़िया के मुतअ़ल्लिक़ क्या क्या ग़लत है?

मुफ़्ती साहब : ताज़िए की ऐसी शक्ल बना दी कि रौज़े की शक्ल नहीं लगती और उसे इमामे हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का रौज़ा कहते हैं। ---- और फिर ताज़िए को बना कर घुमाते फिराते सजदा करते, मन्नतें मानते और बाद में मसनूई करबला में दफ़्न कर देते हैं ----- ताज़िए में परियाँ, बुराक़ और घोड़ा वग़ैरह बनाते हैं। --- यह सब बिदअ़त है मना है लेकिन ऐसा नहीं कि हर बार शिर्क साबित किया जाए हाँ हद से बढ़ जाए और शिर्क की हदों में आ जाए तो शिर्क हो जाएगा।

अब्दुल्लाह : ताज़ियों के साथ या दूसरे मज़हबी मौक़ों पर लंगर होता है, लंगर जाइज़ है लेकिन यह सूरतें कैसी हैं

1. छतों से रोटियाँ, फल, बिस्कुट वग़ैरह फेंकना
2. सिक्के फेंकना कि रेत या नाली वग़ैरह में गिरते हैं
3. फ़ख़्र के तौर पर 1000, 500 के नोट लुटाना, मोबाइल फ़ोन लुटाना

मुफ़्ती साहब : यह सब रियाकारी, रिज़्क़ की बेहुरमती और नाजाइज़ है।

अब्दुल्लाह : ताज़ियों के साथ यह सब काम करना कैसा है

1. बाजे ताशे ढोल बजाना, धूम मचाना, फ़ोटो खिंचाना मूवी बनाना।
2. औरतों का हर तरफ सज संवर कर निकलना और हुजूम इकट्ठा करना।
3. ताज़िये को बाज़ लोगों का शहीदों का जनाज़ा समझना।
4. ताज़िये से क़ीमती चीज़े निकाल कर बाक़िया को तोड़ फोड़ कर दफ़्न कर देना।

मुफ़्ती साहब : सब नाजाइज़ व बुरी बिदअ़त हैं।

अब्दुल्लाह : ग़म मनाना, रोना, तीन दिन झाड़ू न देना चूल्हा न जलाना, लाल काले हरे कपड़े पहना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : ग़म मनाने का हुक्म नहीं अगर ग़म मनाने का हुक्म होता तो सबसे ज़्यादा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का ग़म मनाया जाता ---- इमामे हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ज़िक्र सुनकर रोना आए तो रोना जाइज़ मगर झूट मूट रोना या मातम करना नाजाइज़ है ---- मोहर्रम में तीन दिन चूल्हा न जलाना, झाड़ू न देना, अपने आपको झूट मूट ग़मगीन ज़ाहिर करना

---- काले कपड़े पहनना राफ़ज़ियों का तरीक़ा, हरे कपड़े पहनना ताज़ियादारों का तरीक़ा और लाल कपड़े पहनना ख़रजियों का तरीक़ा है इससे बचना चाहिए मजबूरी हो मसलन किसी ग़रीब के पास दूसरे कपड़े नहीं तो हरज नहीं।

अब्दुल्लाह : यौमे आशूरा (मुहर्रम की दस तारीख़) को ये काम करना कैसा है

1. नियाज़ दिलाकर सबील लगाना, खाना खिलाना, लंगर करना (जबकि रिज़्क़ की बेअदबी न करे)
2. ज़िक्रे शहादतैन जबकि सही रिवायात से हो
3. ग़ैर शरई ताज़ियादारी, सोग, मर्सियाख़्वानी से दूर रहना।
4. मुहर्रम की 9,10. या 10,11 में दो दिन रोज़ा रखना

मुफ़्ती साहब : यह सब बहुत अच्छे काम हैं अल्लाह पाक हमें और आपको इन पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे।

अब्दुल्लाह : राफ़ज़ियों की महफ़िलों में मरसिया सुनने जाना और वहाँ खाना पीना कैसा है।

मुफ़्ती साहब : हराम है।

अब्दुल्लाह : ताज़िया बनाना, उनसे मन्नतें मानना और इन सबको शरीअत जानना। क्या हुक्म है

मुफ़्ती साहब : बुरी बिदअत है, इन कामों में कोई सवाब नहीं हाँ शिर्क या कुफ़्र हरगिज़ नहीं न औरत निकाह से बाहर है।

अब्दुल्लाह : राफ़ज़ियों के ज़ाकिरों को चाय बिस्कुट खिलाना रोटी खिलाना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : नाजाइज़ हराम गुनाह कि यह तबर्रा बकते हैं आजकल के राफ़ज़ी दीन से ख़ारिज मुरतद हैं।

अब्दुल्लाह : इन्हें रोका क्यूँ नहीं जाता?

मुफ़्ती साहब : इनमें ज़्यादातर वो जाहिल लोग हैं कि इन्हें अगर किताब दिखाई जाए तो कहेंगे कि हम तो बेपढ़े हैं हमारे बुज़ुर्गों से होता चला आया हम नहीं रुकेंगे आप अपना काम करें हमें अपना करने दें और ज़्यादा समझाने की कोशिश करेंगे तो मार पीट पर आमादा हो जायेंगे और हिन्दुस्तान में तो डेमोक्रेसी है भई।

अब्दुल्लाह : एक बार मैं इनकी झूटी करबला गया तो बड़ा तअज्जुब हुआ पता ही नहीं चलता कि यह मेला है यह खुशी मनाई जा रही है या गम। औरतें सजी संवरी, बेपर्दगी, छेड़छाड़ और बाज़ कुफ़्फ़ार भी मज़े लेने को आए हैं, तरह तरह के झूले, तरह तरह के खाने दुकानें वग़ैरा वग़ैरा।

मुफ़्ती साहब : क्या बताया जाए यहाँ यह बद आमालियाँ हैं कि बदमज़हबों को हमें बदनाम करने का मौक़ा मिलता है यहाँ हम अपने आपको बड़ा बेबस महसूस करते हैं।

ताज़ीमी सजदा

अब्दुल्लाह : सजदे दो क़िस्म के होते हैं सजदए इबादत और सजदए ताज़ीमी क्या यह सही है।
मुफ़्ती साहब : हाँ।
अब्दुल्लाह : सजदए ताज़ीमी अल्लाह के सिवा किसी को करना कैसा है?
मुफ़्ती साहब : पहले की शरीअतों में जाइज़ था अब मज़हब इसलाम में हराम है लेकिन शिर्क व कुफ़्र नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर मैं किसी को सजदे का हुक्म देता तो औरत को देता कि अपने शौहर को सजदा करे। क्या यह सजदए इबादत होता या यह सजदए ताज़ीम होता।
अब्दुल्लाह : बेशक यह ताज़ीमी सजदा होता सजदए इबादत का हुक्म हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम दें यह तो हो ही नहीं सकता।. और वज़ाहत फ़रमायें
मुफ़्ती साहब : हदीस में है एक सहाबीए रसूल का ऊँट बिगड़ गया वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास पहुँचे। आप तशरीफ़ ले गए तो ऊँट ने आपको सजदा किया। उन सहाबी ने भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सजदा करने की इजाज़त मांगी। यह किस सजदे की इजाज़त मांगी क्या सजदए इबादत की हरगिज़ नहीं बल्कि सजदए ताज़ीमी की चूंकि एक सहाबी से हरगिज़ यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह इबादत के सजदे की इजाज़त मांगेगे चूंकि कलिमए लाइलाहा इल्लल्लाह न कभी बदला न कभी बदलेगा।
अब्दुल्लाह : ताज़ीमी सजदा किस ज़माने तक जाइज़ था?
मुफ़्ती साहब : हज़रते यूसुफ़ अलैहिस्सलाम तक।
अब्दुल्लाह : कुछ क़ुर्आन से सुबूत दें?
मुफ़्ती साहब : हज़रते आदम अलैहिस्सलाम को फ़िरिश्तों का सजदा करना और हज़रते यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उनके वालिदैन और भाईयों का सजदा करना यह कौन सा सजदा था ---- सजदए इबादत या सजदए ताज़ीमी। बिला शक ओ शुबाह यह ताज़ीमी सजदे थे।
अब्दुल्लाह : आज अगर कोई अपने पीर या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ताज़ीमी सजदा करे तो काफ़िर हो जाएगा?
मुफ़्ती साहब : काफ़िर तो न होगा हाँ हराम है।
अब्दुल्लाह : क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए अक़्दस को जालियों से ढकने की एक ख़ास वजह यह है कि ताज़ीम बरक़रार रहे और लोग ताज़ीमी सजदा न करने लगें।
मुफ़्ती साहब : हाँ।

अब्दुल्लाह : कुछ और वज़ाहत करें?
मुफ़्ती साहब : नमाज़ में काबे वाले को सजदा है काबे को नहीं और यह नमाज़ की शर्त है ------ मक़ामे इब्राहीम पर दो रकआत नमाज़ नफ़्ल पढ़ने का हुक्म है उस पत्थर को सजदे का हुक्म नहीं----- असहाबे सुफ़्फ़ा पर नमाज़ पढ़ना बिला कराहत जाइज़ बल्कि लोगों का हुजूम लगा रहता है कि यहाँ नमाज़ पढ़ लें जब यह वह जगह है कि काबा और नमाज़ी के बीच में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मज़ारे मुबारक है अगर यह ताज़ीमी सजदे होते तो हराम होते और इजाज़त न होती और इबादत का सजदा तो अल्लाह के सिवा किसी भी दूसरे को करना शिर्क व कुफ़्र है इसमें किसी को इख़्तेलाफ़ है ही नहीं।
अब्दुल्लाह : हमने ख़ुद देखा है कि लोग मज़ारों को सजदा करते हैं इन्हें रोका क्यूँ नहीं जाता?
मुफ़्ती साहब : रोका तो जाता है मगर थू है ऐसी जहालत पर कि अल्लाह भी नाराज़ रसूल भी नाराज़ और साहिबे मज़ार भी नाराज़ मगर यह साहब नहीं मानते सारी अक़ीदत इसी में हैं झूटे हैं मक्कार हैं ऐसे लोग अल्लाह अपनी अमान में रखे। चन्द सिक्कों के बदले लोगों से यह हराम करवाते हैं जो कुफ़्र तो नहीं लेकिन कुफ़्र के बहुत नज़दीक और हराम हराम हराम है। क्या बताया जाए यही वह बद आमालियाँ हैं कि वहाबियों को हमें बदनाम करने का मौक़ा मिलता है यहाँ हम अपने आपको बड़ा बेबस महसूस करते हैं। मेरा बस चले तो ऐसे लोगों को बाक़ायदा डंडा ले कर समझाऊँ। अल्लाह हिदायत दे।

अंगूठे चूमना

अब्दुल्लाह : कुछ लोग कहते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नाम पर अंगूठे चूमना बिदअत है अल्लाह के नाम पर चूमते नहीं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नाम पर चूमते हो।
मुफ़्ती साहब : पहली बात तो यही कि हमारा झगड़ा इस बात का है ही नहीं और अगर कोई अंगूठे नहीं चूमेगा तो इस्लाम से बाहर नहीं हो जाएगा। हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नामे नामी आने अज़ान में सुनने के वक़्त या नमाज़ व क़ुर्आन की तिलावत के वक़्त के अलावा किसी भी वक़्त अंगूठे या शहादत की उंगली आंखों से लगाना यक़ीनन जाइज़ व मुस्तहब है और बहुत ही रहमत व बरकत का ज़रिया है। इसके जाइज़ होने पर बहुत दलीलें और जाइज़ न होने पर कोई दलील नहीं और शरीअत ने जिस चीज़ को

रोका नहीं वह मुबाह व जाइज़ है। मैंने हुक्म बयान कर दिया हवाले की ज़रूरत जब कभी पड़े दिखा दूंगा और हवाले की ज़रूरत जब ही पड़ेगी जब आप किसी से भिड़ पड़ें। और मेरी राय यह है कि जब तक मालूमात न हो बहस करने से बचें। फिर भी कोई समझना चाहे और ख़्वामख़ाँ मुँह ज़ोरी न करना चाहे तो जब चाहें मेरे पास ले आयें। हवाले नोट करें :-

1. क़ुर्आने पाक की मशहूर तफ़सीर रूहुल बयान अल्लामा फ़ाज़िलुल कामिल अल शैख़ इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह।

2. शैख़ इमाम अबू तालिब मुहम्मद इब्ने मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह की किताब क़ुव्वतुल क़ुलूब

3. इमाम सख़ावी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने कई हवालों से नक़ल किया है

4. अल्लामा शामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह रद्दुल मुहतार शरहे दुर्रे मुख़्तार में

5. रईसुल फ़िक़्हुल हनफ़िया अल्लाहमा तहतावी रहमतुल्लाहि तआला अलैह शरहे मराक़ियुल फ़लाह में

6. मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह मस्नवी शरीफ़ में और मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह भी।

अल्लामा शफ़ी उकाड़वी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की किताब अंगूठे चूमने का मसअला में यह सारे हवाले और इससे भी ज़्यादा एक जगह हैं हो सके तो वहाँ से देख लें।

अब्दुल्लाह : क्या तिलावते क़ुर्आन और ख़ुतबे की अज़ाना में भी अंगूठे चूमें जायें?

मुफ़्ती साहब : तिलावते क़ुर्आन और ख़ुतबे की अज़ान में अंगूठे चूमना जाइज़ नहीं।

अज़ाने क़ब्र

अब्दुल्लाह : कुछ लोग दफ़न के बाद अज़ान देते हैं और कुछ लोग मना करते हैं हमें क्या करना चाहिए?

मुफ़्ती साहब : अगर अज़ान न दी जाए तो कोई गुनाह नहीं मगर अज़ाने क़ब्र जाइज़ है बाज़ उल्मा ने इसे सुन्नत भी कहा है। अज़ान के बहुत से फ़ायदे हैं और यहाँ जो फ़ायदे मुर्दे को मिलेंगे वो ये हैं

1. शैतान क़ब्र में भी जाता है और सवाल जवाब के वक़्त परेशान करता है लेकिन अज़ान सुनकर शैतान भागता है।

2. अज़ान में तीनों सवालों के जवाब आ जाते हैं और तीनों जवाब अभी अभी सुनने की वजह से जवाब देने में आसानी होती है।

3. अज़ान अल्लाह का ज़िक्र भी है लिहाज़ा अज़ान कहने पर अल्लाह की रहमत होती है शैतान को तकलीफ़ होती है।

4. अज़ान के फ़ौरन बाद मांगी दुआ कबूल होती है लिहाज़ा हमारे यहाँ यह रिवाज डाला गया कि अज़ान के बाद फ़ौरन फ़ातिहा और दुआ होती है जो मग़फ़िरत के लिए है (कब्र वाला कितना मुहताज है इस वक़्त दुआओं का इसाले सवाब का यह हमें अगर रौशन हो जाए तो शायद हम गुनाहों से बाज़ आ जायें।)

5. अज़ान ज़िक्रे ख़ुदा है और इससे मुर्दे का दिल बहलता है कब्र जैसी वहशत की जगह अज़ान या किसी भी जाइज़ तरीक़े पर अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो मय्यत के लिए आसानी ही है।

6. अज़ान से मय्यत का ग़म दूर होता है कि ग़म दूर करने के लिए कान में अज़ान के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मौला अली रदियल्लाहु तआला अन्हु से कहा।

कब्र पर अज़ान के और भी फ़ायदे हैं। हमने यहाँ कई फ़ायदे गिनवाए अब विरोधी इसके नुक़सान गिनवाए शायद न गिना सकेगा हाँ बिदअत का झूटा राग ज़रूर अलापेगा। अल्लाह पाक तौफ़ीक़ अता फ़रमाए अरे देने तो अज़ान ही तो है फ़ितना मत फैलाओ।

अब्दुल्लाह : अज़ान में पहले और तीसरे सवालों के जवाब तो साफ़ हैं दूसरे सवाल का जवाब किस तरह है कि तेरा दीन क्या है इसमें दीने इस्लाम तो कहीं नहीं आता है,

मुफ़्ती साहब : अज़ान नमाज़ की तरफ़ बुला रही है और दीने इस्लाम में नमाज़ है लिहाज़ा उसे याद आ जाएगा कि मैं दीने इस्लाम पर हूँ।

अब्दुल्लाह : जब अज़ान देने के लिए हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नहीं कहा तो हम अपनी तरफ़ से यह कह कर एक नया काम नहीं कर रहे हैं और इसी को यह लोग बिदअत कहते हैं?

मुफ़्ती साहब : हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मना भी नहीं फ़रमाया बस यही दलील काफ़ी है कि जब मना नहीं फ़रमाया तो इसमें हरज भी नहीं और जहाँ तक बिदअत का सवाल है तो मैं आपको बता चुका हूँ कि बिदअत कई क़िस्म की होती है और अगर यह बिदअत भी है तो अच्छी बिदअत है।

अब्दुल्लाह : नमाज़ के अलावा और कब कब अज़ान देना [illegible] [illegible] है या देने में फ़ायदा है?

मुफ़्ती साहब : कई जगह हुक्म है
1. बच्चा पैदा हो तो उसके कान में अज़ान कहे।
2. कहीं आग लग जाए तो अज़ान कही जाए आग बुझ जाएगी
3. आसेबी ख़लल को दफ़ा करने के लिए आमेलीन सात दिन तक बलन्द आवाज़ से अज़ान पढने का अमल बताते हैं।
4. ग़म दूर करने के लिए कान में अज़ान के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने मौला अली रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से कहा।
5. वबा फैलने के वक़्त अज़ान देने को बुज़ुर्गों ने मुस्तहब कहा है।
अब्दुल्लाह : बस आख़री एतराज़ का जवाब दे दें कि हर अज़ान की नमाज़ है इस अज़ान की नमाज़ कब है?
मुफ़्ती साहब : जुमे में दो अज़ानें होती हैं जुमा पहली के लिए है या दूसरी के लिए। बेकार के एतराज़ निकालना शैतान ही का काम है।

मीलाद

अब्दुल्लाह : मीलाद शरीफ़ के बारे में अहले सुन्नत का अक़ीदा बयान करें?
मुफ़्ती साहब : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पैदाइश का ज़िक्र और इस पर ख़ुशी मनाना यानी महफ़िले मीलाद शरीफ़ करना जबकि इसमें कोई ख़िलाफ़े शरा बात न पाई जाए यक़ीनन जाइज़ और इससे बड़ी ख़ैर व बरकत होती है।
अब्दुल्लाह : कुछ लोग इसे नाजाइज़ हराम और बिदअत व गुमराही कहते हैं तअज्जुब है?
मुफ़्ती साहब : मीलाद शरीफ़ में अल्लाह की हम्द नबी ए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की नात व दुरूद और आपकी विलादत और उसके वक़्त के वाक़ियात नज़्म व नस्र में बयान किए जाते हैं बाद में खड़े होकर ताज़ीम के साथ सलाम पढ़ा जाता है इसमें क्या बुरा है और यह सब बातें हदीस से साबित हैं।
अब्दुल्लाह : हदीस से सुबूत पेश करें?
मुफ़्ती साहब : बुख़ारी शरीफ़ में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने मस्जिदे नबवी में हज़रते हस्सान इब्ने साबित के लिए मिम्बर रखवाया जिस पर खड़े होकर उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शान व अ़ज़मत में नात शरीफ़ पढ़ी साथ ही उनके दुश्मनों की बुराई भी अपनी नात में पढ़ी। हदीस का यह मफ़हूम हदीस शरीफ़ की दूसरी किताबों में भी है।

अब्दुल्लाह : दुनिया के हर कोने में महफ़िले मीलाद होती है चन्द सिरफिरों को छोड़ कर इसे बुरा कहना तो दूर लोग बड़े ही शौक़ व एहतिमाम के साथ नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मीलाद मनाते हैं। क्या कभी ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना मीलाद ख़ुद किया ऐसी कोई हदीस है?

मुफ़्ती साहब : तिरमिज़ी शरीफ़ की जिल्द 2 में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मिम्बर पर जलवाअफ़रोज़ हुए और फ़रमाया मैं कौन हूँ। लोगों ने अर्ज़ किया आप अल्लाह के रसूल हैं। फ़रमाया मैं मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने अब्दुल मुत्तलिब हूँ, अल्लाह ने मख़लूक़ को पैदा फ़रमाया तो मुझको इनमें सबसे अच्छों में बनाया फिर इन अच्छों की दो जमाअतें कीं तो इनमें सबसे अच्छी जमाअत में मुझको बनाया फिर इन अच्छों के क़बीले कि ता सबसे अच्छे क़बीले में मुझको बनाया फिर इस अच्छे क़बीले के घराने किए तो सबसे अच्छे घराने में मुझे पैदा फ़रमाया तो मैं अपनी ज़ात के एतबार से भी सबसे अच्छा हूँ और ख़ानदान के एतबार से भी सबसे अच्छा हूँ।

इस हदीस से ख़ूब ज़ाहिर कि ख़ुद सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना मीलाद मिम्बर पर खड़े हो कर पढ़ा। क्या अब भी कोई कहेगा कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की विलादत का ज़िक्र करना ग़लत है। मैं समझता हूँ ऐसा वही कहेगा जिसके दिल में चोर व निफ़ाक़ होगा।

सलात

अब्दुल्लाह : अज़ान के बाद सलाम पढ़ने का रिवाज सिर्फ़ हमारे यहाँ है ऐसा क्यूँ?

मुफ़्ती साहब : सलात को मना करने वाला बताए कि कहाँ लिखा है कि मना है या बुरा है बस यही दलील इस मसअले के लिए ही नहीं बहुत से मसइल के लिए काफ़ी है कि हमें मना नहीं किया गया और इसमें ग़लत क्या पढ़ते हैं लिहाज़ा जाइज़ है और अगर बिदअत कहा जाए तो बिदअते हसना है बुरी बिदअत नहीं जैसे रमज़ान की तरावीह के बारे में आया कि यह अच्छी बिदअत है।

ग्यारहवीं शरीफ़

अब्दुल्लाह : ग्यारहवी शरीफ़ के बारे में कुछ बतायें,

मुफ़्ती साहब : हर क़िस्म की न्याज़ मसलन तीजा, दसवाँ,

चालीसवाँ, बरसी या उर्स या किसी भी बुज़ुर्ग की फ़ातिहा की अस्ल इसाले सवाब यानी बुज़ुर्गाने दीन या दूसरे मरे हुए मुसलमानों की रूह को सवाब पहुँचाना है। हर क़िस्म की फ़ातिहा या न्याज़ में कुछ .क़ुर्आन शरीफ़ और दुरूद शरीफ़ वग़ैरह पढ़ कर तमाम मुसलमानों को बख़्शा जाता है। फिर अगर वह न्याज़ का खाना वग़ैरह किसी अल्लाह के वली के लिए है तो उस न्याज़ का खाना अमीर ग़रीबों आलिम जाहिल औरत मर्द सभी को जाएज़ है और अगर किसी आम मुसलमान का है तो बेहरत यह है कि मालदार आदमी उसको न खाए बल्कि सिर्फ़ ग़रीब मुसलमान औरत मर्द खायें। और अगर नज़्रे शरई की मिन्नत मानी तो उसको भी सिर्फ़ ग़रीब ही खा सकाते हैं किसी अमीर को इस नज़्रे शरई को खाना हरगिज़ जाएज़ नहीं अगर खायेंगे तो हरामख़ोर होंगे।

इसाले सवाब करने में किसी को इख़्तिलाफ़ भी नहीं। बदमज़हबों को इख़्तिलाफ़ यह है कि खाना सामने रख कर फ़ातिहा न दो और उसे सिर्फ़ ग़रीब खायें। उनका यह एतराज़ बेकार है। और इसका जवाब यह है कि फ़ातिहा आगे रख कर न दी जाए तो क्या पीछे या दायें बायें रख कर दी जाए या सर पर रख कर दी जाए। तीजा चालीसवाँ वग़ैरह के खाने से अमीर को बचना चाहिए हाँ चखना जाएज़ है और अगर फ़ातिहा करने वाले ने इस नियत से सबके लिए पकाया है कि ग़रीब अमीर सब खायें तो सबको खाना बिला कराहत जाएज़ है। हाँ वह लोग जो तीजे चालीसवें या फ़ातिहा के खानों की तलाश में रहते हैं, उनके इस खाने से उनके दिल स्याह होने का अन्देशा है।

फ़ातिहा के सुबूत के लिए हम यहाँ पर हुज़ूर ग़ौसे आज़म का एक अमल ज़िक्र करते हैं जिससे इन्साफ़ पसन्द आदमी यह कहने पर मजबूर हो जाएगा कि फ़ातिहा बिल्कुल जाएज़ है और फ़ातिहा को नाजाएज़ बताने वाले या तो वहाबी देवबन्दी कुफ़्फ़ार व मुरतदीन हैं या कम से कम गुमराह हैं। हज़रते इमाम याफ़िई रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी किताब .क़ुर्रतुल नाज़िर में लिखते हैं कि एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआला अन्हु ने जनाबे रसूले करीम रऊफ़ व रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की 11 तारीख़ को फ़ातिहा दिलाया। हुज़ूर ग़ौसे आज़म की यह न्याज़ सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बहुत पसन्द आई इसलिए सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआला अन्हु ने हर 11 तारीख़ को यह फ़ातिहा मुक़र्रर कर दी यानी सरकार ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआला अन्हु हर 11 तारीख़ को अपने

जते करीम नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की फातिहा करने लगे। सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु का यह अमल मुसलमानों में आहिस्ता आहिस्ता आपकी तरफ़ मन्सूब हो गया जिसको मुसलमानाने अहले सुन्नत ग्यारहवीं शरीफ कहने लगे जिसका मतलब यह है कि वह ग्यारहवीं जो हुज़ूर ग़ौसे पाक किया करते थे। आज भी यह न्याज़ सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की नियाज़ के नाम से मशहूर व मारूफ़ है और मुसलमान इसे बड़ी धूम धाम से करते हैं। सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु को सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से ऐसे ही क़ुरबत और नज़दीकी है जैसे ग्यारहवीं को बारहवीं के साथ है और बारहवीं शरीफ़ भी दुनिया के तमाम मुसलमानाने अहले सुन्नत में उसी तरह मनाई जाती है जैसे ग्यारहवीं शरीफ़ मनाई जाती है।

सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ग़रीबों, मेहमानों और सब ही को ख़ूब खिलाया करते और रोज़ ही आपके यहाँ कितने ही भूकों को खाना खिलाया जाता और लंगर जारी रहता। ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु का फ़रमान भी है कि मैंने इतने मुजाहदात और रियाज़ात किए मगर जितना अज्र भूकों को खिलाने में पाया उतना किसी और अमल से न पाया अगर मुझे पहले मालूम होता तो मैं सारी ज़िन्दगी भूकों को खाना खिलाता रहता।

आजकल यह भी देखा जाता है कि न्याज़ फ़ातिहा के वक़्त बहुत सी शरीअत के ख़िलाफ़ बातें की जाती हैं। मिसाल के तौर पर क़ुर्आन ख़्वानी या फ़ातिहा में क़ुर्आन शरीफ़ ग़लत पढ़ा जाता है। उस पर ज़ुल्म यह कि उस ग़लत पढ़े हुए को अच्छा समझा जाता है और उसको बख़्शा जाता है। अल्लाह की पनाह। हालांकि जब क़ुर्आन शरीफ़ ग़लत पढ़ा गया तो सवाब कैसा बल्कि ग़लत पढ़ने वाला सख़्त गुनहगार हुआ और जब क़ुर्आन शरीफ़ ग़लत पढ़ने की वजह से सवाब न मिला तो जिसके लिए फ़ातिहा किया गया तो उसको सवाब क्या मिलेगा।

आजकल यह भी देखा जाता है कि न्याज़ से पहले लोग गाना बजाना या ग़ैर-शरई क़व्वाली वग़ैरह कराते हैं और बाज़ जगह तो नाच या टेलीवीज़न भी देखे जाते हैं। यह सब यूँ भी हराम है और ऐसे मुबारक वक़्त तो और ज़्यादा। अल्लाह की पनाह। यह भी देखा गया है कि न्याज़ के वक़्त ग़रीब का ख़्याल नहीं रखा जाता और उसे झिड़का जाता है जबकि ऐसे मौक़े पर ग़रीब का हक़ ज़्यादा है और यहाँ वह मक़सद फ़ौत हो रहा यानी न्याज़ का अस्ल मक़सद तो ग़रीब को अच्छा खाना खिला कर उन्हें ख़ुश

करना है क्यूँकि वह ग़रीब बेचारे अच्छा खाना कम पाते हैं और रहे अमीर व मालदार तो उनको तो अच्छे अच्छे खाने मिलते ही रहते हैं। इस मौके पर वह हज़रात भी अगर दिल को ग़ुरबा के साथ ग़रीबों के खिलाने में लग जायें और खुद अपना थोड़े खाने पर कनाअत कर लें तो उन हज़रात को भी सवाब मिलेगा।

तम्बीह : हमारे मुसलमान भाइयों को चाहिए कि न्याज़ व फ़ातिहा जब भी करें तो हराम पैसे से न करें। चाहे थोड़ा ही करें मगर जाएज़ पैसे से करें।

मैं समझता हूँ आपके सवाल के जवाब में कुछ और भी ऐसी बातें आ गईं जो आप सवाल करते। अल्लाह अपने हबीब कि सदके में मुसलामानों को बदआमालियों से बचाए।

अब्दुल्लाह : शबेबरात में हलवे बनाना, आतिशबाज़ी जलाना और रात भर जाग कर इबादत न करके क़ब्रस्तान में घूमते रहना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : हलवे वग़ैरह किसी चीज़ पर नियाज़ देना इसाले सवाब का एक रूप है जो जाइज़ है। आतिशबाज़ी जलाना इबादत न करना इसे तो सभी बुरा ही कहते हैं और दोनों बिला शक ओ शुबा हराम हैं। क़ब्रों की ज़्यारत करना सुन्नत है इसके बहुत फ़ायदे हैं काश हम रोज़ मौत को याद करके अपने ईमान की फ़िक्र करते बल्कि हर वक़्त करते तो शायद इतना वबाल भी न होता। अल्लाह का ख़ौफ़ और ईमान की फ़िक्र ही तो ख़त्म हो गई। ---- शबे बरात में रात भर जाग कर इबादत करना चाहिए। इस रात दो रकआत नमाज़ पढ़ने का 400 बरस की भी इबादत से ज़्यादा सवाब है. और दूसरे दिन रोज़ा रखने का भी बहुत बड़ा सवाब है।

अब्दुल्लाह : कूंडों की नियाज़ के बारे में बताये?

मुफ़्ती साहब : हज़रते इमाम जाफ़र सादिक़ रद़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिए ईसाले सवाब इसमे हरज ही क्या है और अगर न दिलाए तो कोई गुनाह नहीं न ही इस्लाम से बाहर हुआ जाता है। हाँ नियाज़ तो दिलाए मगर नमाज़ न पढ़े यह बहुत बुरा है मगर फिर भी नियाज़ जैसे अमल से रोका नहीं जाएगा और रोकना वहाबियों की पहचान बन चुका है। 27 रजब के रोज़े का भी बहुत बड़ा सवाब है।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग कहते हैं कि यह तो राफ़ज़ियों की तरह है और उनसे मुशाबेहत है?

मुफ़्ती साहब : हज़रते इमाम जाफ़र सादिक़ रद़ियल्लाहु तआला अन्हु हमारे हैं राफ़ज़ियों के नहीं। राफ़ज़ी जो हरकतें करते हैं वह हज़रते इमाम जाफ़र सादिक़ रद़ियल्लाहु तआला अन्हु का रास्ता हरगिज़ नहीं। राफ़ज़ियों पर उनकी लानत है।

अब्दुल्लाह : आम क़ब्र पर चादर नहीं चढ़ाते और किसी बुज़ुर्ग की क़ब्र यानी मज़ार पर चढ़ाते हैं क्यों?

मुफ़्ती साहब : ताकि बुज़ुर्गों की क़ब्र दूसरी आम क़ब्रों से अलग मालूम हो और लोग मज़ार को पहचान कर फ़ातिहा पढ़ें और फ़ैज़ हासिल करें।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग चादर चढ़ाने के लिए बाक़ायदा ढोल बाजे के साथ जाते हैं और क़ब्र पर रख कर फ़ातिहा देते हैं?

मुफ़्ती साहब : ढोल बाजे यूँ ही हराम हैं क़ब्र पर रख कर फ़ातिहा देना मना क़ब्र से हट कर देना चाहिए। चूँकि जाहिल भी बुज़ुर्ग की क़ब्र का एहतराम करते हैं एक आम क़ब्र का नहीं इसलिए बुज़ूर्गों की क़ब्र पर चादर जाइज़ कि क़ब्र पर वो जाहिल बैठ कर जुआ न खेलेंगे गालियाँ न बकेंगे वग़ैरह।

अब्दुल्लाह : मज़ार पर एक ही चादर चढ़ाना चाहिए जब तक पहली चादर ख़राब न हो जाए दूसरी नहीं चढ़ाना चाहिए क्या यह सही है?

मुफ़्ती साहब : हाँ सही है। लेकिन अगर चादर उतार कर ग़रीबों और मिस्कीनों में तक़सीम कर दी जाती हो तो जल्दी जल्दी चादर चढ़ाना जाइज़ है।

अब्दुल्लाह : अगर दौलतमन्द सज्जादानशीन के यहाँ चादर चली जाती हो या वही चादर फिर से दुकानदार के पास चली जाती हो तो यह सब जाइज़ है क्या?

मुफ़्ती साहब : नहीं। लेकिन अगर दौलतमन्द सज्जादानशीन उस चादर को ग़रीबों को दे देता हो तो ऐसा करना ठीक होगा। लेकिन बार बार उसी चादर को ला लाकर बेचने का धंधा बना लेना क़तई ग़लत एक आम आदमी भी इसे ग़लत ही बताता है।

अब्दुल्लाह : लेकिन ऐसा होता है?

मुफ़्ती साहब : होता तो पता नहीं क्या क्या है जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। शरीअत का हुक्म सबके लिए एक सा है हिसाब तो अल्लाह को देना है ज़रा ज़रा सी चीज़ का हिसाब देना होगा आजकल के मुजावेरीन को अल्लाह तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

अब्दुल्लाह : मुसलमान की क़ब्र पर फूल डालना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : हर मुसलमान चाहे वह गुनहगार हो उसकी क़ब्र पर फूल डालना जाइज़ है कि हदीस से साबित कि फूल या पत्ती या पेड़ की टहनी जब तक तर रहती है अल्लाह की तसबीह करती है और अल्लाह के ज़िक्र से रहमत नाज़िल होती है जो गुनहगार के लिए बड़ी फ़ायदे की है।

अब्दुल्लाह : क़ब्र पर अगरबत्ती चराग़ या ख़ुशबू लगाना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : खुशबू जाइज़ है अगरबत्ती या चराग़ क़ब्र पर जाइज़ नहीं हाँ थोड़ा दूर पर लगाना जाइज़ है।

अब्दुल्लाह : बाज़ लोग कहते हैं कि फ़ुलाँ दरख़्त पर शहीद मर्द है और फिर वहाँ फ़ातिहा वग़ैरह दिलाते हैं हार लटकाते हैं लोभान सुलगाते हैं मुरादें मानते हैं ऐसे लोग हक़ पर हैं क्या?

मुफ़्ती साहब : यह सब वाहियात व ख़ुराफ़ात और जाहिलाना बेवक़ूफ़ियाँ और झूट व बकवास है हमें ऐसे लोगों को इन कामों से मना करना चाहिए।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग क़ब्र के पास क़ुर्आनख़्वानी कराते हैं और पढ़ने वाले को उजरत भी दी जाती है क्या सवाब मिलेगा या इसे बख़्श सकते हैं?

मुफ़्ती साहब : क़ुर्आन पर उजरत लेना नाजाइज़ और नाजाइज़ काम पर सवाब नहीं और जब सवाब मिला ही नहीं तो मय्यत को बख़्शना कैसा।

अब्दुल्लाह : पुख़्ता क़ब्र बनाना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : मय्यत के आस पास पुख़्ता न हो ऊपर का हिस्सा पुख़्ता कर दें तो हर्ज नहीं।

अब्दुल्लाह : वलियों की क़ब्र का बोसा देना तवाफ़ करना या सजदा करना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : काबए मुअज़्ज़मा के अलावा किसी का तवाफ़ जाइज़ नहीं। चूमना मना कि चार हाथ दूर खड़े होकर हाज़िरी दे सजदा हराम चाहे ताज़ीम के तौर पर हो इबादत की नियत से करेगा तो काफ़िर हो जाएगा। अल्लाह महफ़ूज़ रखे लोग बाज़ नहीं आते कितना ही समझाओ सारी अक़ीदत इन्हीं कामों में है साहिबे मज़ार क्या इन बातों से खुश होंगे अरे उन्हें खुश करना है तो याद रखिए कि जितना आप शरीअत की पाबन्दी करेंगे उतना ही यह ख़ुश होंगे, अल्लाह के वलियों ने सारी ज़िन्दगी शरीअत की तो पाबन्दी ही की है और इसी से इस मक़ाम पर पहुँचे हैं काश हम समझ पाते तो क्या ही अच्छा होता विरोधी को भी हमें कहने का मौक़ा नहीं मिलता साहिबे मज़ार भी ख़ुश अल्लाह रसूल भी ख़ुश।

अब्दुल्लाह : वालिदैन की क़ब्र को बोसा देना भी मना है क्या?

मुफ़्ती साहब : वालिदैन की क़ब्र को बोसा देना जाइज़ है।

अब्दुल्लाह : फ़र्ज़ी क़ब्र बना कर उस पर उर्स फ़ातिहा करना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : हराम सख़्त हराम और यही वो बदआमालियाँ हैं जो हमें कमज़ोर करतीं और नीचा दिखातीं हैं और इनमें

वहाबियों को भोले मुसलमानों को बहकाने के लिए मसाला मिलता है अल्लाह महफ़ूज़ रखे।

अब्दुल्लाह : औरतों का मज़ार पर जाना कैसा?

मुफ़्ती साहब : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मज़ारे पाक के अलावा औरतों को मज़ार पर जाने की इजाज़त नहीं ख़ास तौर पर इस दौर में कि फ़ितनों का दौर है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन औरतों पर अल्लाह की लानत है जो क़ब्र पर जायें।

अब्दुल्लाह : लानत होती है?

मुफ़्ती साहब : हाँ साहिबे मज़ार की लानत फ़िरिश्तों की लानत भी।

अब्दुल्लाह : क़व्वाली का हुक्म बतायें?

मुफ़्ती साहब : मुख़्तसर यह कि ग़ैर शरई क़व्वाली नाजाइज़ है और अगर महफ़िले सिमा के आदाब पायें जायें तो जाइज़ है मसलन जो म्यूज़िक मना हो उससे पाक हो, सुनाने वाला मर्द कामिल हो औरत या बच्चा न हो, सुनने वाला यादे ख़ुदा में ग़ाफ़िल न हो, जो कलाम पढ़ा जाए फ़ोहश बेजा बेहयाई मस्ख़रगी न हो बूजा अश्आर न हों।

अब्दुल्लाह : फ़िल्मी गानों की तरज़ पर नातें पढ़ना कैसा है?

मुफ़्ती साहब : बिल्कुल मना है ऐसे लोगों को चाहिए कि ऐसे लोगों से हम्द व नातें वग़ैरह न सुने

अब्दुल्लाह : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मज़ारे पाक की हाज़िरी के आदाब बतायें कि यह सबसे बड़ा मज़ारे पाक है और जब हज करने जाते हैं तो वह लोग भी जाते हैं जो मज़ारात पर जाने का इन्कार करते हैं? और ज़रा तफ़सील से बयान करें कि हाज़री के वक़्त किस हद तक अदब करना चाहिए वग़ैरह वग़ैरह।

मुफ़्ती साहब : बहुत ही अच्छा सवाल है ज़रा तफ़सीली जवाब सुनें जब अल्लाह व रसूल का ख़ास करम हो और हाज़िरी नसीब हो तो आदाब कुछ इस तरह हैं :-

पूरा यक़ीन जानो कि वह हमें देख रहे हैं और ऐसे ही ज़िन्दा हैं जैसे अपनी हयात में ज़िन्दा थे। नबियों को बस एक आन के लिए मौत आती है तमाम नबी ज़िन्दा हैं। वह हमारे दिलों के हाल से वाक़िफ़ हैं। इन्तिहाई अदब में डूबे हुए गर्दन झुकाये, आँखें नीची किये, लरज़ते, काँपते, गुनाहों की नदामत (शर्मिन्दगी) से पसीना-पसीना होते हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अफ़्व व करम की उम्मीद रखते हुज़ूर की पाएंती शरीफ़ यानी पूरब की तरफ़ से मुवाजहए आलिया में हाज़िर हो कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला

अलैहि वसल्लम मज़ारे अक़दस में क़िब्ला की तरफ़ चेहरा अनवर किये हुए जल्वा फ़रमा हैं, उस सम्त से हाज़िर होंगे तो हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की निगाह बेकस पनाह तुम्हारी तरफ़ होगी और यह बात तुम्हारे लिए दोनों जहाँ में काफ़ी है, वल्हम्दुलिल्लाह। ----- अब कमाले अदब व हैबत व ख़ौफ़ व उम्मीद के साथ कम से कम चार हाथ के फ़ासिले से क़िब्ला को पीठ और मज़ारे अनवर को मुँह करके नमाज़ की तरह हाथ बाँधे खड़े हो लुबाब व शरहे लुबाब व इख़्तियार शरह मुख़्तार व फ़तावा आलमगीरी वग़ैरा मोतबर किताबों में इस अदब के बारे में साफ़-साफ़ लिखा है कि हुज़ूर के सामने ऐसा खड़ा हो जैसा नमाज़ में खड़ा होता है) यह इबारत आलमगीरी व इख़्तियार की है और लुबाब में फ़रमाया दस्तबस्ता दहना हाथ बायें पर रख कर खड़ा हो। ----- ख़बरदार! जाली शरीफ़ को बोसा देने या हाथ लगाने से बचो कि अदब के ख़िलाफ़ है बल्कि चार हाथ फ़ासिले से ज़्यादा क़रीब न जाओ। यह उनकी रहमत क्या कम है कि तुम को अपने हुज़ूर बुलाया अपने मुवाजहए अक़दस यानी मज़ार शरीफ़ के बिल्कुल सामने जगह बख़्शी। उनकी रहमत और निगाहे करीम अगर्चे हर जगह तुम्हारी तरफ़ थी अब ख़ुसूसियत और इस दर्जा क़ुर्ब (नज़दीकी) के साथ है, वल्हम्दुलिल्लाह! ---- अल्हम्दुलिल्लाह! अब दिल की तरह तुम्हारा मुँह भी उस पाक जाली की तरफ़ हो गया जो अल्लाह तआला के महबूबे अज़ीमुश्शान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आरामगाह है, निहायत अदब व वक़ार के साथ, ग़मग़ीन व दर्द भरी हुई आवाज़ व निहायत शर्मिन्दा दिल और कटे हुए जिगर के साथ दर्मियानी आवाज़ से, न इतनी बलन्द व सख़्त हो क्योंकि उनके हुज़ूर आवाज़ बलन्द करने से अमल अकारत (बर्बाद) हो जाते हैं, न बिल्कुल नर्म व पस्त (हल्की), कि सुन्नत के ख़िलाफ़ है, अगर्चे वह तुम्हारे दिलों के ख़तरों तक से आगाह हैं जैसा कि अभी तसरीहाते अइम्मा से गुज़रा मुजरा व तस्लीम बजा लाओ यानी अदब के साथ दुरूद व सलाम अर्ज़ करो और यह भी अर्ज़ करो :

السلام علیک ایها النبی و رحمة الله و برکاته
السلام علیک یا رسول الله السلام علیک یا خیر
خلق الله السلام علیک یا شفیع المذنبین السلام
علیک و علی الک و اصحبک و امتک اجمعین

जहाँ तक मुमकिन हो, और ज़बान साथ दे और सुस्ती

न हो दुरूद व सलाम ख़ूब पढ़ो। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से अपने और अपने माँ, बाप, पीर, उस्ताद, औलाद व अ़ज़ीज़ों, दोस्तों और सब मुसलमानों के लिए शफ़ाअ़त मांगो और बार-बार अ़र्ज़ करो :

اَسْئَلُکَ الشَّفَاعَۃَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمْ.

तर्जमा : या रसूलल्लाह! मैं हुज़ूर से शफ़ाअ़त मांगता हूँ।

फिर अगर किसी ने सलाम अ़र्ज़ करने की वसीयत की तो बजा लाओ यानी उसकी तरफ़ से सलाम अ़र्ज़ करो कि शरअ़न इसका हुक्म है। फिर अपने दाहिने हाथ यानी पूरब की तरफ़ हाथ भर हट कर हज़रते सिद्दीक़े अकबर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के चेहरए नूरानी के सामने खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ करो। फिर उतना ही और हट कर हज़रते फ़ारूक़े आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के रूबरू (सामने) खड़े होकर सलाम अ़र्ज़ करो। ये सब हाज़रियाँ दुआएं क़बूल होने की जगह हैं, दुआ में कोशिश करो। दुआए जामे करो और दुरूद पर क़नाअ़त बेहतर है। --- फिर मिम्बरे अतहर के क़रीब दुआ मांगो। --- फिर जन्नत की क्यारी में (यानी जो जगह मिम्बर व हुजरए मुनव्वरा के दरमियान है उसे ह़दीस में जन्नत की क्यारी फ़रमाया) आकर मकरूह वक़्त न हो तो दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ कर दुआ करो। ---- यूँही मस्जिद शरीफ़ के हर सुतून के पास नमाज़ पढ़ो दुआ मांगो कि महल्ले बरकात (बरकतें नाज़िल होने की जगह) हैं ख़ुसूसन बाज़ सुतूनों में ख़ास ख़ुसूसियतें हैं। --- जब तक मदीना तय्यिबा की हाज़िरी नसीब हो एक साँस बेकार न जाने दो ज़रूरियात के सिवा अक्सर वक़्त मस्जिद शरीफ़ में बा-तहारत और बा-वुज़ू हाज़िर रहो नमाज़ व तिलावत व दुरूद में वक़्त गुज़ारो दुनिया की बात किसी मस्जिद में न चाहिए न कि यहाँ। ---- हमेशा हर मस्जिद में जाते वक़्त एतिकाफ़ की नीयत कर लो (एतिकाफ़ के मअ़ना हैं मस्जिद में बिलक़स्द नीयत करके ठहरना इसलिए कि ज़िक्रे इलाही करूँगा) यहाँ तुम्हारी याददिहानी ही, को दरवाज़े से बढ़ते ही यह लिखा हुआ मिलेगा نَوَیْتُ سُنَّۃَ الْاِعْتِکَافِ. ----- यहाँ हर नेकी एक की पचास हज़ार लिखी जाती है लिहाज़ा इबादत में ज़्यादा कोशिश करो। --- रौज़ए अनवर पर नज़र करना भी इबादत है जैसे कअ़बए मुअ़ज़्ज़मा या क़ुर्आन मजीद का देखना तो अदब के साथ उसकी कसरत करो और दुरूद व सलाम अ़र्ज़ करो। पंजगाना या कम से कम सुबह व शाम मुवाजहा शरीफ़ में सलाम अर्ज करने के लिए हाज़िर हो।

--- शहर में या शहर से बाहर जहाँ कहीं गुम्बदे मुबारक पर नज़र पड़े फ़ौरन दस्तबस्ता उधर मुँह करके सलात व सलाम अर्ज़ करो बे इसके हरगिज़ न गुज़रो कि अदब के ख़िलाफ़ है।
--- जहाँ तक हो सके कोशिश करो कि मस्जिदे अव्वल यानी हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ज़मानाए मुबारका में जितनी थी उस में नमाज़ पढ़ो और उसकी मिक़दार सौ हाथ लम्बाई व सौ हाथ चौड़ाई है अगर्चे बाद में कुछ इज़ाफ़ा हुआ है उसमें नमाज़ पढ़ना भी मस्जिदे नबवी ही में पढ़ना है।---- क़ब्रे करीम को हरगिज़ पीठ न करो और जहाँ तक हो सके नमाज़ में भी ऐसी जगह न खड़े हो कि पीठ करनी पड़े।
---- रौज़ए अनवर का न तवाफ़ करो न सज्दा न इतना झुकना कि रुकू के बराबर हो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ताज़ीम उनकी इताअत में है। शायद तफ़सील ज़्यादा ही हो गई है बस उस बारगाह का बड़ा अदब है और वहाँ जाकर क्या कैफ़ियत होती है यह सबका मामला अलग है सारा दारोमदार महब्बत और इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर है।

मुरतद और मुरतद के अहकाम

अब्दुल्लाह : जैसा कि आपने बताया कि वहाबी दीन से ख़ारिज और मुरतद हैं इनसे दूर रहना चाहिए। तो ज़रा इस बारे में थोड़ा तफ़सील से बतायें कि काफ़िरो की कितनी क़िस्में होती हैं और यह कौन से काफ़िर होते हैं?

मुफ़्ती साहब : इन्सान दो तरह के होते हैं मुसलमान और काफ़िर --- फिर काफ़िर भी दो तरह के होते हैं काफ़िर असली काफ़िर मुरतद। काफ़िर असली वह काफ़िर है जो शुरू से ही कलमए इस्लाम को न मानता हो जैसे दहरिया, मजूसी, मुशरिक और यहूद व नसारा वग़ैरह। काफ़िर मुरतद भी दो तरह के होते हैं। मुरतद मुजाहिर और मुरतद मुनाफ़िक़। मुरतद मुजाहिर वह काफ़िर है कि जो पहले मुसलमान था अब खुल्लम खुल्ला इस्लाम से फिर गया और कलमए लाइलाहाइल्लल्लाह का इन्कार कर के दहरिया, मुशरिक, मजूसी या किताबी वग़ैरह कुछ भी हो गया। मुरतद मुनाफ़िक़ वह काफ़िर है जो कलमए लाइलाहाइल्लल्लाह अब भी पढ़ता है अपने आप को मुसलमान ही कहता है मगर ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम या किसी नबी की तौहीन करता है या दीगर ज़ुरूरियाते दीन में से किसी बात का इन्कार करता है।

काफ़िरों में सबसे बुरा यही मुरतद मुनाफ़िक़ है जो मुसलमान बन कर कुफ़्र सिखाता है और अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को गालियाँ देता है --- अल अयाज़ु बिल्लाहि तआला --- सही मुसलमान वह है जो ज़ुरूरियाते दीन को मानने के साथ साथ तमाम ज़ुरूरियाते अहले सुन्नत को मानता हो और गुमराह मुसलमान वह बदमज़हब है जो ज़ुरूरियाते अहले सुन्नत में से किसी बात का इन्कार करता हो मगर उसकी बदमज़हबी कुफ़्र की हद तक न पहुँची हो। मुनाफ़िक़ों से मुताल्लिक़ क़ुआन में बहुत आयात आई हैं और मुरतद का हुक्म भी क़ुआन में है। और आजकल के वहाबी मुरतद हैं।

अब्दुल्लाह : इनके लिए हदीसों में क्या हुक्म आया है क्या इनकी सारी इबादतें बेकार हैं यह तो बहुत नमाज़ें तबलीग़ वग़ैरह करते हैं क्या सब बेकार? कुछ लोग कहते हैं सब से मिल कर रहना चाहिए वरना काफ़िर हम पर ग़ालिब आ जायेंगे अख़लाक़ भी कोई चीज होती है ज़रा हदीस की रोशनी में ऐसे लोगों के बारे में बतायें जो वाक़ई अल्लाह रसूल की तौहीन करके मुरतद हो गए?

मुफ़्ती साहब : यहाँ चन्द हदीसें सुनाता हूँ ये हदीसें उन लोगों का मुँह बन्द कर देती हैं जो सुलहकुल की क़िस्म से हैं और ज़बरदस्ती इत्तेहाद क़ाएम करना चाहते हैं। ये हदीसें साफ़ बता रहीं हैं कि मुरतद के साथ शरीअत ने कोई समझौता नहीं रखा है।

हदीस न. 1 :- हज़रते हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ख़ुदाए तआला किसी बदमज़हब का न रोज़ा क़बूल करता है न नमाज़ न ज़कात न हज न उमराह न जिहाद और न कोई नफ़्ल न फ़र्ज़। बदमज़हब दीने इस्लाम से ऐसा निकल जाता है जैसे गुंधे आटे से बाल निकल जाता है। (इब्ने माजा)

हदीस न. 2 :- हुज़ूर नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अगर कोई बदमज़हब मसलए तक़दीर को झुटलाने वाला हज्रे असवद और मक़ामे इब्राहीम के दरम्यान मज़लूम क़त्ल किया जाए और अपने इस मारे जाने पर वह साबिर व तालिबे सवाब रहे जब भी अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला उसकी किसी बात पर नज़रे करम न फ़रमाए यहाँ तक कि उसे जहन्नम में डाले।

हदीस न. 3 :- हज़रते इब्राहीम इब्ने मयसरह रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत हैं कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु

वस्सलाम ने फ़रमाया कि जिसने बदमज़हब की इज़्ज़त की उसने इस्लाम के ढाने पर मदद की। (मिश्कात शरीफ़)
हदीस न. 4 :– हज़रते अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया कि बदमज़हब अगर बीमार पड़े तो उसे देखने न जाओ अगर मर जाए तो उसके जनाज़े में शरीक न हो, उससे भेंट हो तो उससे सलाम न करो, उनके पास न बैठो, उनके साथ पानी न पियो, उनके साथ खाना न खाओ, उनके साथ शादी ब्याह न करो, उनके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ो। (यह हदीस मुस्लिम, अबू दाऊद, इब्ने माजा, उकैली और इब्ने हब्बान की रिवायतों का मजमूआ है)
हदीस न. 5 :– अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि तमाम नेक कामों में सबसे अफ़ज़ल अमल अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला के वास्ते दोस्ती रखना और अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला के वास्ते दुश्मनी रखना है।
हदीस न. 6 :– तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रते मआज़ इब्ने अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु से रावी जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जिसने दिया अल्लाह के वास्ते और देने से इन्कार किया अल्लाह के वास्ते और ईमान वालों से अल्लाह के लिए दोस्ती की और बदमज़हबों और बद्दीनों से अल्लाह के वास्ते दुश्मनी रखी तो बेशक उसने अपने ईमान को कामिल कर लिया।
हदीस न. 7 :– दार .कुतनी में हुज़ूर महबूबे मुहतरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अनक़रीब मेरे बाद एक जमाअत रूनुमा होगी उनके लिए एक बुरा लक़ब होगा उनको राफ़ज़ी कहा जाएगा --- तो ऐ अली तुम अगर उनको पाना उनसे जंग करना इसलिए कि वो मुरतद हैं। हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मैंने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उस क़ौम का नाम तो आपने बता दिया है उसकी पहचान भी बता दें। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया उनकी पहचान ये है कि तुम्हारी तारीफ़ ऐसी करेंगे जो तुममें नहीं हैं (जैसे नबी से अफ़ज़ल होना या आपको ख़िलाफ़त का पहला हक़दार जानना) और अगलों यानी पहले तीन ख़लीफ़ाओं पर तअन करेंगे।
अब्दुल्लाह : हदीसें तो बहुत सख़्त हुक्म बता रही हैं ऐसे तो मिलना जुलना बड़ा मुश्किल हो जाएगा
मुफ़्ती साहब : जो शख़्स अभी इस हद तक नहीं पहुँचा कि अल्लाह व रसूल की तौहीन करके मुरतद हो गया उस बहुत

प्यार से दलाइल के साथ समझाना चाहिए इन्शा अल्लाह समझ जाएगा और जो सब कुछ जानने के बावजूद उन्हीं की हाँ में हाँ मिलाए उसके लिए क़ुर्आन व हदीस से बहुत सख़्त हुक्म है। ------ और इन हदीसों का ख़ुलासा यह है कि जब यह साबित हो ले कि कोई शख़्स वाक़ई मुरतद है तो उसके साथ निम्न बर्ताव करने का शरीअत ने हुक्म फ़रमाया फिर याद रखिए जब सब तहक़ीक़ हो ले कि वह मुरतद है तब निम्न हुक्म हैं जो .क़ुरआन और हदीसों से साबित हैं :-

उससे सलाम कलाम हराम, मेलजोल हराम, बीमार पड़े तो उसकी इयादत को जाना हराम, मर जाए तो उसके जनाज़े में शिरकत हराम, उसे मुसलमानों के क़ब्रस्तान में दफ़नाना हराम, मुसल्मानों की तरह उसकी क़ब्र बनाना हराम, उसे मिट्टी देना हराम, उस पर फ़ातहा हराम, उसे कोई सवाब पहुँचाना हराम बल्कि ख़ुद कुफ़्र व क़ातेए इसलाम, उससे निकाह हराम, उसके हाथ का ज़बीहा हराम, ग़रज़ वह शख़्स सख़्त क़ाबिले नफ़रत है।

अब्दुल्लाह : बड़े सख़्त अहकाम बयान फ़रमा दिए आपने।

मुफ़्ती साहब : अभी और सुनिए जो शख़्स मुरतद हो जाए उसकी औरत हराम हो जाती है, फिर इसलाम लाए तो उससे दुबारा निकाह किया जाए इससे पहले उस कलमए कुफ़्र के बाद की सोहबत से जो बच्चा होगा हरामी होगा, और यह शख़्स अगर आदत के तौर पर कलमा पढ़ता रहे कुछ फ़ायदा न देगा जब तक अपने इस कुफ़्र से तौबा न करे कि आदत के तौर पर मुरतद के कलमा पढ़ने से उस का कुफ़्र नहीं जाता। ---- और जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी करे दुनिया में बाद तौबा भी उसे सज़ा दी जाएगी यहाँ तक कि अगर नशे की बेहोशी में कलमा गुस्ताख़ी बका जब भी माफ़ी न देंगें। और तमाम उलमाए उम्मत का इजमा है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान-ए-अक़दस में गुस्ताख़ी करने वाला काफ़िर है और काफ़िर भी ऐसा कि जो उसकी कुफ़्र में शक करे वह भी काफ़िर है। मुरतद की औरत को इख़्तियार है कि इद्दत के बाद जिससे चाहे निकाह करे।

अब्दुल्लाह : मुरतद के ये अहकाम क्या देवबन्दियों की किताबों में हैं?

मुफ़्ती साहब : हाँ अगर इनसे फ़तवा पूछें तो मुरतद का यह भी यही हुक्म देंगे।

अब्दुल्लाह : तो क्या यह हम सुन्नियों पर भी ऐसा हुक्म लगाते हैं?

मुफ़्ती साहब : ये अपनी मक्कारी से हमें धोका देकर हमारे

पीछे नमाज़ पढ़ें मेल जोल करें यहाँ तक कि शादी भी कर लेते हैं और हमें छुपा हुआ मुशरिक भी जानते हैं।

अब्दुल्लाह : हमें इनके पीछे नमाज़ का क्या हुक्म है?

मुफ़्ती साहब : बदमज़हब को इमाम बनाना गुनाह, उसके पीछे नमाज़ पढ़ना गुनाह। अगर बदमज़हब कुफ़्र की हदों तक पहुँचा है तो उसको इमामत के क़ाबिल जानना कुफ़्र।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग कहते हैं बल्कि कुछ मुरतद मुसलमानों को इस तरह बहकाते हैं कि वह भी क़ुरआन पढ़ रहा है वह भी क़ुरआन पढ़ रहा है लिहाज़ा नमाज़ हो जाएगी नमाज़ सब के पीछे पढ़ लेना चाहिए।

मुफ़्ती साहब : याद रखो ऐसा हरगिज़ नहीं। नमाज़ कोई हंसी खेल नहीं अल्लाह की सबसे बेहतर इबादत है। अब ज़रा अक़्ल से सोचो मुसलमानों कि तुम ज़रा सा किसी में ऐब देखते हो तो उसके पीछे नमाज़ पढ़ना गवारा नहीं करते, क्या किसी दाढ़ी मुंडे के पीछे नमाज़ पढ़ते हो (जबकि दाढ़ी मुंडाना छोटा ऐब नहीं) या उस शख़्स के पीछे तुम्हें नमाज़ पढ़ना गवारा होता है जो तरह तरह के गुनाहों में मुलव्विस हो जबकि वह मुसलमान हो तो कैसे तुम्हें उसके पीछे नमाज़ गवारा है जो अल्लाह और उसके रसूल की तौहीन करता है। क्या को ईसाइ, यहूदी या हिन्दू नमाज़ याद करके नमाज़ पढ़ाने खड़ा हो जाए तो तुम नमाज़ उसके पीछे पढ़ोगे, हरगिज़ नहीं यूंही अगर तुम्हें मालूम है कि फ़लाँ शख़्स मुरतद है यानी सिर्फ़ ज़ाहिर का मुसलमान है तो क्या उसके पीछे नमाज़ पढ़ोगे हरगिज़ नहीं। याद रखो मुरतद के पीछे नमाज़ नहीं बल्कि उसे इमामत के क़ाबिल जानना कुफ़्र है जबकि उसकी बदमज़हबियत हदे कुफ़्र तक पहुँच गई हो।

यहाँ एक और बात बड़ी हैरत की है कि सुन्नी तो अलल ऐलान वहाबी मुरतद के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ता मगर वहाबी हमारे पीछे नमाज़ पढ़ने से परहेज़ नहीं करता जबकि वह हमें क़ब्र का पूजने वाला मुशरिक और बिदअती न जाने क्या क्या समझता है। अरे अगर हम मुशरिक और बिदअती हैं तो हमारे पीछे नमाज़ क्यूँ पढ़ते हो, हमसे अपने मुर्दे की नमाज़ क्यूँ पढ़ाना चाहते हो, तुम्हें यह कैसे गवारा है कि तुम्हारे मुर्दे के लिए दुआ एक मुशरिक और बिदअती करें यह सब सुन्नियों को धोके देने के नए-नए तरीके हैं। यह हमारे सामने यह जताना चाहते हैं कि हम तुम एक हैं और इस तरह ईमान को लूटना इनके लिए आसान होगा।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग कहते हैं कि हरम शरीफ़ के इमाम के पीछे नमाज़ न पढ़ो वह वहाबी हैं?

मुफ़्ती साहब : हाँ वहाँ नजदियों वहाबियों की हुकूमत है

इसलिए ऐसा कहते हैं। इसको यूँ समझइये कि अगर कोई बदमज़हब दुनिया के किसी कोने में भी इमाम बन कर खड़ा हो जाए तो क्या आप नमाज़ उसके पीछे पढ़ेंगे और आसान मिसाल यह है कि क्या राफ़ज़ी जो हज करने आते हैं उनके पीछे आप नमाज़ पढ़ना गवारा करते हैं हरगिज़ नहीं।

अब्दुल्लाह : सुना है कि हदीस में है कि अरब में काफ़िर नहीं होंगे और वहाँ वहाबियों की हुकूमत है तो मालूम हुआ कि वह मुसलमान हैं लिहाज़ा अगर वहाबी काफ़िर है तो उनकी इस बात का जवाब क्या है?

मुफ़्ती साहब : हदीस शरीफ़ में यह हर्गिज़ नहीं आया कि अरब में काफ़िर नहीं होंगे बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तो यह फ़रमाया कि शैतान इस बात से मायूस हो गया है कि मोमिन जज़ीरए अरब में उसकी इबादत करें यानी बुतपरस्ती में मुबतला रहें। ----- अब बताइयें इसका साफ़ मतलब यह है कि जज़ीरए अरब में बुतपरस्ती न होगी या यह मतलब है कि वहाँ काफ़िर न जाएगा। अगर कोई यह कहे कि वहाँ कोई कैसे मुरतद हो सकता है तो उसका जवाब यह है कि यह तो पहले भी हुआ मुसैलमा कज़्ज़ाब मुरतद हुआ, कुछ लोग ज़कात का इन्कार करके मुरतद हुए, अबू ताहिर करमती हि. 320 में मुरतद हुआ और हिजरी 654 में मदीने शरीफ़ पर राफ़ज़ियों का क़ब्ज़ा हुआ। तो साबित यह हुआ कि काफ़िर या मुरतद तो हो सकेंगे मगर वहाँ बुतों की पूजा कभी न होगी।

अब्दुल्लाह : मुरतद अगर मर जाए तो उसकी नमाज़ जनाज़ा न पढ़नी चाहिए?

मुफ़्ती साहब : हरगिज़ नहीं। ईमान जाने का पूरा ख़तरा है।

अब्दुल्लाह : क्या वहाबी मुरतद देवबन्दी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से नए सिरे से कलिमा पढ़ना और निकाह ज़रूरी हो जाता है?

मुफ़्ती साहब : जो शख़्स किसी के दबाव, लिहाज़ या चापलूसी में देवबन्दी के जनाज़े की सफ़ में खड़ा हो जाता है लेकिन नमाज़ की नियत न करे तो उसका तौबा करना ज़रूरी है और जो मुसलमान समझ कर उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ उस पर नए सिरे से कलिमा पढ़ना और निकाह ज़रूरी हो जाता है।

अब्दुल्लाह : मुरतद अगर जानवर ज़िबाह करे तो उसके खाने का क्या हुक्म है?

मुफ़्ती साहब : मिस्ल मुर्दार के है खाना हराम है।

अब्दुल्लाह : बक़रीद में जगह जगह से गोश्त आता है क्या किया जाए?

मुफ़्ती साहब : अव्वलन तो मुरतद के घर का लेना ही नहीं

चाहिए अगर किसी दबाव या लिहाज़ में ले भी लिया तो उसे हलाल गोश्त में हरगिज़ न मिलाए कि सब हराम हो जाएगा। इसी तरह मुरतद के यहाँ अक़ीक़े में जाने में भी हराम खाने का ख़तरा है।

अब्दुल्लाह : मुरतद से निकाह का हुक्म ज़रा तफ़सीली बयान करें?

मुफ़्ती साहब : मुरतद का निकाह किसी से नहीं हो सकता यहाँ तक कि मुरतद्दा से भी नहीं। आजकल शादी के वक़्त लोग अक्सर अक़ाएद नहीं देखते और हज़ारों निकाह बातिल हो जाते हैं और इसका गुनाह उन पर होता है जो जानते हुए भी ऐसे निकाह को करते हैं और शरीक होते हैं। आज इस मसअले की बेख़बरी की वजह से बहुतेरे लोग हज़ारों रुपए ख़र्च करके अपनी बहन, बेटी को ज़िना के लिए पेश कर देते हैं और जब निकाह क़ायम न हुआ तो सोहबत कब जाइज़ वह तो ज़िना हो गई। अल्लाह महफ़ूज़ रखे।

अब्दुल्लाह : ये लोग तो हमारे यहाँ निकाह करने में कुछ भी बुरा नहीं समझते और हुक्म तो हमारे लिए बड़ा सख़्त और इससे यह लोग हममें घुस जाते हैं और वहाबियत फैलती जाती है हमें क्या करना चाहिए?

मुफ़्ती साहब : आजकल देखा यह गया है कि मुरतद लोग सुन्नीयों में शादी करना चाहते हैं ताकि सुन्नियों के ईमान पर डाका डाल सकें और इस तरह रिश्ता हो जाने के बाद अपने रिश्तेदारों को बेदीन बनाना आसान हो जाए और सिर्फ़ नाम का सुन्नी अल्लाह व रसूल और बुज़ुर्गाने दीन की झूटी महब्बत का दावेदार उनके दुश्मनों के यहाँ रिश्ता कर लेता है हालांकि उनके यहाँ शादी करना ज़िना का दरवाज़ा खोलना है इसलिए कि मुरतद के साथ निकाह जाइज़ ही नहीं होता।

अब्दुल्लाह : किसी मशहूर किताब का हवाला दें कि मुरतद से निकाह है ही नहीं?

मुफ़्ती साहब : फ़तावा आलमगीरी जिल्द अव्वल मिसरी सफ़हा 263 में है "मुरतद का निकाह मुरतद्दा (मुरतद औरत), मुस्लिमा (मुसलमान औरत) और काफ़िरा असलिया (वह औरत जो असली काफ़िर हो) किसी से जाइज़ नहीं ऐसे ही मुरतद्दा का निकाह किसी से नहीं हो सकता।" इसी तरह इमाम मुहम्मद अलैहिर्रहमत व रिज़वान की किताब मबसूत में है।

अब्दुल्लाह : बड़ा सख़्त मामला है सब कबाड़ा हुआ जाता है?

मुफ़्ती साहब : हैरत है कि सुन्नी अपने बाप दादा के दुश्मनों से रिश्ता नहीं करता मगर अल्लाह व रसूल और बुज़ुर्गाने दीन के दुश्मनों के यहाँ शादी बियाह करने में कोई रुकावट नहीं

महसूस करता और जब उनके यहाँ रिश्ता करने से मना किया जाता है तो कहता है कि अब वह ज़माना नहीं रहा कि उनके यहाँ शादी करने से रोका जाए। ऐसे लोग जब और थोड़ी तरक़्क़ी कर लेंगे तो उन्हें शायद ग़ैर क़ौमों में भी रिश्ता करने से ऐतराज़ न होगा जैसा कि आज कुछ नाम निहाद मुसलमान ग़ैर मुस्लिमों के यहाँ शादी करने लगे हैं।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग कहते है कि लड़की लाने में कोई हर्ज नहीं अलबत्ता उनको लड़की देना ग़लत है?

मुफ़्ती साहब : लड़की हो या लड़का किसी का रिश्ता करना उनसे जाइज़ नहीं जैसा कि फ़तावा अलमगीरी के हवाले से अभी गुज़रा। लड़की देने में तो एक लड़की को मुरतद के हवाले करना है और मुरतद की लड़की लाने में अपने लड़के और उसकी औलाद को मुरतद होने के रास्ते पर खड़ा करना है इसलिए कि अकसर यही होता है कि जिस सुन्नी लड़के की बीवी मुरतद के यहाँ से लाई गई कुछ दिनों के बाद वह बहकी बहकी बातें करने लगता है और औलाद नाना नानी का असर क़बूल करती है। मुरतद का ज़बह किया हुआ मुर्दारी खाती है, उन्हीं का तौर तरीक़ा इख़्तयार करती है यहाँ तक कि कुछ दिनों बाद यह होता है कि पूरा घर बेदीन हो जाता है।

खुलासा यह है कि मुरतद के घर लड़की देना या लेना दोनों ही से बेदीनी का दरवाज़ा खुलता है बल्कि लड़की लाने में नुक़सान ज़्यादा है। अल्लाह महफ़ूज़ रखे।

अब्दुल्लाह : ये लोग तो हमसे निकाह में परहेज़ नहीं करते जबकि यह हमें शिर्क करने वाला जानते हैं।

मुफ़्ती साहब : बड़ी हैरत की बात है कि देवबन्दीयों वहाबियों के नज़दीक हम क़ब्र के पूजने वाले हैं तो फिर वह हमसे निकाह करने में परहेज़ क्यूँ नहीं करते। यह सब इनकी मक्कारी है सुन्नीयों के क़रीब आने और उनके ईमान को छीनने के लिए। उससे ज़्यादा हैरत की बात यह है कि सुन्नी या किसी भी शख़्स की बहन बेटी पर कोई ग़लत निगाह डाले तो वह उसकी आखें निकालने को तैयार हो जाता है मगर यहाँ यह नहीं देखता कि जब निकाह ही नहीं हुआ तो कैसे अपनी बहन और बेटी को उस मुरतद के सामने ज़िना के लिए पेश करता है और उसके साथ साथ पूरी महफ़िल वह तमाशा देखने को तैयार है। अल्लाह मुसलमानों को महफ़ूज़ रखे।

अब्दुल्लाह : अगर कोई शादी के लालच में दिखावे की तौबा कर ले तो सुन्नी फंस जाए तो?

मुफ़्ती साहब : यह भी देखा गया है कि कुछ मुरतद दिखावे की तौबा कर लेते हैं और कुछ दुनियादार मौलवी बादे तौबा

फ़ौरन निकाह पढ़ा देते हैं और अपना नज़राना सीधा करके चलते बनते हैं। यहाँ पर शरीअत का हुक्म यह है कि तौबा के बाद फ़ौरन उसके साथ निकाह नहीं किया जाएगा बल्कि कुछ दिनों उसे देखा जाएगा कि अपने तौबा पर वह क़ाइम है या नहीं जैसा कि फ़ासिक़े मोलिन तौबा कर ले तो फ़ौरन उसे इमाम नहीं बना दिया जाएगा। फ़तावा रज़विया जिल्द 3, फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ और फ़तावा आलमगीरी में है कि "फ़ासिक़ तौबा कर ले तब भी उसकी गवाही नहीं क़बूल की जाएगी जब तक कि इतना वक़्त न गुज़र जाए कि उस पर तौबा का असर ज़ाहिर हो।"

अब्दुल्लाह : इतनी नफ़रत मुरतद से रखना क्या ठीक लगता है?

मुफ़्ती साहब : शरीअत के हुक्म से साफ़ ज़ाहिर है कि शरीअत ने मुरतद से किस हद तक नफ़रत दिलाई और इस हुक्म के ज़रिए मुरतद का सोशल बायकाट (यानी बिरादरी से अलग या हुक़्क़ा पानी बन्द करना) करने का हुक्म दिया है क्यूँ। और मुरतद का यह हुक्म सब फ़िरक़ों में एक सा है और सब ही फ़िरक़े यही हुक्म लगाते हैं। इसलिए कि यह आस्तीन का सांप है और क़ौम और मज़हब की जड़ें खोखली करता है। नेकी की आड़ में वह गुनाह कराता है जिसकी कोई माफ़ी नहीं, ईमान का ऐसा दुश्मन कि कब ईमान छीन ले जाए पता नहीं। शायद कुछ लोगों को इस बात पर ऐतराज़ हो कि इतनी सख़्ती क्यूँ तो अव्वल तो मैं उनसे यह कहना चाहूँगा कि यह हुक्म उनके लिए है जो वाक़ई अल्लाह व रसूल का दुश्मन है और दूसरे मैं उनसे पूछना चाहूंगा कि अगर उनके माँ बाप, उस्ताद, पीर या दीगर अहबाब की कोई तौहीन करे तो क्या वह बर्दाश्त कर सकेंगे तो कैसे उनकी तौहीन बर्दाश्त होगी जो हमारे सब कुछ हैं जिनके लिए हम दुनिया में आए हैं जिनके लिए अल्लाह पाक ने सारे जहाँ बनाए। वह जो माँ बाप से ज़्यादा हमे प्यार करते हैं, वह जिनसे वास्ता पड़ना है क़ब्र में, हश्र में, वह जो मीज़ान पर और पुलसिरात पर मदद फ़रमायेंगे, हौज़े कौसर पर सैराब करायेंगे वह जो जन्नत में ले जायेंगे वह जो दोज़ख़ से बचायेंगे, वह जिनके बग़ैर न जन्नत मिले न दोज़ख़ से नजात। रोज़े महशर सब उन्हीं के आगे हाथ फैलाए होंगे। उस रोज़ किस मुँह से उनका सामना करोगे। क्या वह इस बात से नाराज़ न होंगे, क्या अल्लाह तआला इस बात से नाराज़ न होगा कि दुनिया में तुम अल्लाह रसूल के दुश्मन के साथ थे। अल्लाह के वास्ते सोचो वह वक़्त जब कोई काम न आयेगा तो कौन काम आयेगा और जो काम आएगा उसी की नाराज़गी ले ली तो क्या पार पा सकोगे। अब भी वक़्त है दूर

हो जाओ अल्लाह के दुश्मन से दूर और बहुत दूर रहो। ग़र्ज़ उनके बदगो से हमें दूर रहना है और अगर उनका बदगो हमारे बीच पल रहा है तो उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल बाहर फेंकना है, उसका पर्दा फ़ाश करना हमारे और हमारी क़ौम के लिए बेहद ज़ुरूरी है। उम्मीद है आप बात की नज़ाकत को समझ गए होंगे।

अब्दुल्लाह : आपका बहुत बहुत शुक्रिया कि आप आपने ज़हन को बिल्कुल साफ़ कर दिया मेरी परेशानी को दूर कर दिया अल्लाह पाक आपको अपने हबीब के सदके में इसका बड़ा अज्र अता फ़रमाये अब मुझे इजाज़त दें।

मुफ़्ती साहब : आज की तवील गुफ़्तगू में मैंने आपको सबसे पहले ईमान की अहमियत बताई और यह बताया कि ईमान सलामत तो सब बेहतर ईमान गया तो सब बरबाद और अल्लाह के अज़ाब से बेईमान को कहीं छुटकारा नहीं फिर उन हदीस से साबित उन भविष्यवाणियों को बताया गया जो बदमज़हब फ़िरक़ों के बारे में हैं और फिर संक्षेप में उन फ़िरक़ों का इतिहास बताया गया फिर इस बात का सुबूत पेश किया गया कि देवबन्दी वहाबी फ़िरक़े बदमज़हब और मुरतद हैं और सुबूत में उनकी लिखी किताबें भी दिखाई। यह भी बताया कि यह मौलवियों की ज़ाती लड़ाई न होकर इस बात की लड़ाई है कि बदमज़हब फ़िरक़े अल्लाह व रसूल की तौहीन करने की वजह से काफ़िर व मुरतद हैं और यह भी समझा दिया गया कि यह इख़्तेलाफ़ात (मतभेद) नियाज़-नज़्र, फ़ातिहा या मज़ारात पर हाज़री के नहीं बल्कि इस बात के हैं कि ये लोग अल्लाह रसूल के बद-गो और रसूल की तौहीन करने वाले हैं लिहाज़ा इस्लाम से ख़ारिज और मुरतद है। यह भी बताया कि वो ग़लत बातें यानी सुन्नियों की बदआमालियाँ जो बहुतेरे सुन्नी बराबर कर रहे है वह सुन्नियों को नहीं करना चाहिए कि वो बातें सुन्नी आलिमों ने ख़ुद ही मना की हैं। और इख़्तेलाफ़ी मसाइल पर आपके सारे सवालों के इत्मिनान बख़्श जवाब दिए और कुछ ऐसी किताबों के बारे में भी बताया कि आप ख़ुद हवाले देखें।

इन सब बातों के बताने के बाद यह ईमान अफ़रोज़ राय दे रहा हूँ कि वह लोग जो वाक़ई में बदमज़हब, गुमराह, अल्लाह रसूल की तौहीन करने वाले हैं चाहे वह कितने भी नेक नज़र आयें उनसे बचना कितना ज़रूरी है। यह बात आज कोई नई नहीं बरसों से हमारे उल्मा बताते आ रहे हैं मगर देखा यह गया है कि सब कुछ जानने के बाद भी कुछ लोग उनसे बचते नहीं और दुनिया के [illegible] में उनसे मिलते जुलते हैं और तरह तरह के बहाने [illegible] दूसरों से भी बहस करते हैं

और कहते हैं कि किसी से मिलने जुलने से रोकना नहीं चाहिए और कहते हैं कि यह सुन्नियों को हर वक्त बस यही पड़ी रहती है इसके अलावा कोई बात नहीं करते। अरे सोचो ज़रा यह आलिम जो तुम्हें इन बदीनों से होशयार कर रहा है तुम्हारा दोस्त है या दुश्मन, उसे तुमसे क्या लालच है जो ऐसा कर रहा है। लोग इल्ज़ाम लगाते हैं कि सुन्नी अमल की बात नहीं बताते बस यही कहते रहते हैं कि वहाबी ऐसे वहाबी वैसे। पहली बात तो यह गलत है कि सुन्नी आलिम अमल करने के लिए नहीं कहते हाँ यह ज़रूर है कि सुन्नी आलिम सबसे ज़्यादा अहमियत इसी बात को देते हैं कि इनसे दूर रहो यह अल्लाह रसूल की तौहीन करने वाले हैं मुरतद हैं इनसे दूर रहो नहीं तो तुम्हारा ईमान यह छीन लेंगे और तुम्हें पता भी न चलेगा और जब ईमान ही न रहेगा तो फिर नमाज़ रोज़ा और दूसरी इबादतें कहाँ कबूल होंगी लिहाज़ा ईमान की अहमियत बताना बहुत ज़्यादा ज़रूरी है।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग कहते हैं कि हम जब काफ़िरों से मिलते हैं और यह भी काफ़िर हैं तो इनसे मिलने में हर्ज क्या है।

मुफ़्ती साहब : इसका जवाब यह है कि इनसे मिलने जुलने को रोकना किसी ने अपनी तरफ़ से नहीं निकाला बल्कि अल्लाह व उसके रसूल ने इन लोगों से मिलने को मना फ़रमाया। दूसरे यह कि ज़ाहिरी या ख़ालिस काफ़िर से मिलने में दीन का वह नुक़सान नहीं जो इन लोगों से है चूंकि काफ़िर से आप उसे काफ़िर समझ कर मिलते हैं और बदमज़हब को मुसलमान समझने लगते हैं उसकी झूटी नमाज और दूसरी झूटी इबादत से बहक जाते हैं। खुला काफ़िर आपको जल्दी दीन का नुक़सान नहीं पहुँचा सकता हाँ दुनयवी नुक़सान पहुँचा सकता है। दुनयवी नुक़सान तो यहीं रह जाता है मगर दीन में अगर नुक़्स आ गया या दीन चला गया तो यह हमेशा का नुक़सान यानी हमेशा के लिए दोज़ख़ में पहुँचाने वाला है। काफ़िर से मिलने जुलने को ऐसा मना न किया गया जैसा कि बदमज़हब से मिलने को किया गया बल्कि काफ़िर से मिलने का बाज़ वक़्त हुक्म है अगर उससे न मिलोगे तो उसे इस्लाम की दावत कैसे दोगे और यूँ ज़रूरत और अख़्लाक़ी तौर पर मिलने का हुक्म भी है और इससे परहेज़ मुहाल।

अब्दुल्लाह : हमारे आक़ा ने तो अच्छे अख़्लाक़ का हुक्म दिया क्या इनसे अख़्लाक़ के साथ पेश नहीं आया जा सकता कि यह राहे रास्त पर आ जायें?

मुफ़्ती साहब : बदमज़हब से मिलना अख़्लाक़ नहीं बल्कि बदअख़्लाक़ी है। बदमज़हब से न मिलना अख़्लाक़ और मिलना

बदअख़लाक़ी। इस बात को इस तरह समझइये कि अगर आपके बाप दादा या आपके किसी चहीते को कोई ख़्वामख़्वाह गाली दे और और आप उसके आगे झुके चले जायें, यह आपके माँ बाप को गालियाँ लिखकर लिखकर छापे और आप उससे अख़्लाक़ से पेश आते रहें तो दुनिया आप से यही कहेगी कि तेरी ग़ैरत को क्या हो गया है यह कैसा अख़लाक़ है यह तो अच्छा अख़लाक़ नहीं बल्कि अच्छा अख़लाक़ तो यह है कि अपने माँ बाप की इज़्ज़त का ख़्याल करते हुए तू हमेशा के लिए उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दे जो तेरे माँ बाप को बुरा कहे या उसे किसी दुनयवी ग़र्ज़ से अपने दोस्तों में शुमार करता रहेगा। हाँ अगर किसी मजबूरी की वजह से मिलना भी पड़ जाए तो दिल में नफ़रत रखते हुए बस ज़ुरूरत के तहत काम से काम रखते हुए मिलो मिसाल के तौर पर अगर तुम्हारे पास कोई बदमज़हब माल ख़रीदने आता है तो बस उससे ख़रीद फ़रोख़्त तक ही तअल्लुक़ रखो। जहाँ तक हो सके उससे माल ख़रीदने से बचो। या मसलन तुम नौकरी में हो और तुम्हारे साथ कोई बदमज़हब काम करता है तो बस काम की हद तक काम रखो उससे ज़ाती तअल्लुक़ की ज़ुरूरत नहीं। ज़ाती तअल्लुक़ात बढ़ाने में यह नुक़सान साफ़ है कि जब तअल्लुक़ात बढ़ेंगे तो जाना आना बढ़ेगा और उसके घर दावत और मौत में भी जाना पड़ सकता है और मआज़ अल्लाह कहीं किसी बदमज़हब की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ना पड़ जाए जब कि काफ़िर के साथ ऐसा नहीं। इसी तरह से समझो अज़ीज़ों क्या यह अख़लाक़ होगा कि जो तुम्हारे सब कुछ जिनका मरतबा माँ बाप और हर अज़ीज़ से ज़्यादा है, क्या उनको गालियाँ लिख लिखकर छापने वाले से मिलना अख़लाक़ होगा जब तक मालूम न था कोई इतनी सख़्त बात न थी आज जब मालूम हो गया कि ये वही लोग हैं जिनके बारे में अल्लाह के हबीब ने पहले ही फ़रमा दिया था कि इनसे दूर रहना तो अब तुम्हारी ग़ैरत क्या कहती है।

अब्दुल्लाह : सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से महब्बत का तक़ाज़ा तो यही है कि इनसे नफ़रत की जाए?

मुफ़्ती साहब : जो तुमसे इतनी महब्बत करते हैं जितनी तुम अपने आप से भी नहीं करते तुम्हें उनकी तौहीन करने वालों से मिलना अच्छा लगता है। तुम गुनाह पर गुनाह करते रहते हो वह (हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) तुम्हें हर दम याद करें तुम्हारी माफ़ी के लिए रब तबारक व तआला से गिड़गिड़ा कर अर्ज़ करें ऐ अल्लाह इन्हें माफ़ फ़रमा दे, जो रातों को

तुम्हारे लिए रोते थे, जो तुम्हें दोज़ख़ से बचाएंगे जन्नत में ले जायेंगे क्या उनके बग़ैर कोई जन्नत में जा सकेगा। ज़रा अपने आमाल तो देखो क्या तुम्हारे आमाल इस क़ाबिल हैं। क्या यह इस बात से ख़ुश हो सकते हैं क्या अल्लाह इस बात से ख़ुश होगा कि तुम अल्लाह और अल्लाह के हबीब की शान घटाने वाले से अख़लाक़ से पेश आते रहो हरगिज़ नहीं बल्कि जितना तुम बदमज़हब से महब्बत करोगे तो अल्लाह का ग़ज़ब तुम पर हो सकता है अल्लाह के अज़ाब और ग़ज़ब से कहीं छुटकारा नहीं। अल्लाह हमें और आपको माफ़ फ़रमाए।

अब्दुल्लाह : कुछ लोग कहते हैं कि आपस में इत्तेहाद (एकता) क़ायम करो क्यूँकि दूसरे काफ़िरों की नज़र में सब मुसलमान हैं और तुम्हारे इस तिफ़रक़े का यह फ़ायदा उठायेंगे।

मुफ़्ती साहब : बात समझ में आती है लेकिन याद रखो इसाई, यहूदी और मुशरिक भी ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं तुम्हारे इस तिफ़रक़ों को और इन फ़िरक़े कराने में इसाईयों और यहूदियों का भी हाथ है। इन बदमज़हब फ़िरक़ों में बाज़ लोग इसाईयों और यहूदियों के ऐजेन्ट हैं। क्या इन ऐजेन्टों और बाग़ियों से इत्तेहाद हो सकता है? क्या दुश्मन के जासूस को पहचान लेने के बाद उसे फ़ौज में रखा जाता है या उस ग़द्दार को मौत के घाट उतार दिया जाता है? देखो जो शख़्स तुम्हारी दौलत या माल हथियाने की ख़ातिर तुमसे दोस्ती करता या मसलन डाकूओं का कोई साथी तुम्हारे घर में इस लिए आता जाता है कि तुम्हारे भेद पा ले और मौक़ा पाते ही तुम्हें लूट ले तो क्या तुम उसे घर में आने दोगे और अख़लाक़ से पेश आओगे, क्या तुम्हारी बहन बेटी पर बुरी नज़र रखने वाले को घर में आता रहने दोगे क्या ऐसों से भी इत्तेहाद करोगे। शायद ऐसे से इत्तेहाद से तुम्हें वह नुक़सान न पहुँचे जो दीन के डाकू से पहुँचने वाला है कि वह तुम्हें कभी न कभी यह ज़रूर कहेगा कि यह नाजाइज़ वह नाजाइज़ बल्कि क़ुरआन व हदीस से झूटी तावीलें भी देगा गर्ज़ यह कि वह कभी भी तुम पर हमला करके तुम्हारे ईमान को ख़तरे में डाल देगा और शायद छीन ही लेगा। सोचो ज़रा क्या इस इत्तेहाद से फ़ायदा पहुँचेगा या नुक़सान। तो ऐसे इत्तेहाद से क्या फ़ायदा जिसमें नुक़सान ही नुक़सान है फ़ायदा नहीं पहुँचने वाला बल्कि अगर सारे बदमज़हबों को अलग कर दिया जाए और तुम्हारी जमाअत छोटी भी रह जाए तो वह छोटी जमाअत भी काफ़ी है और सही इत्तेहाद यही है, हाँ इत्तेहाद ज़रूरी वहाँ है और बहुत ज़रूरी है जहाँ दुनियवी इख़्तेलाफ़ात हों या ऐसे इख़्तेलाफ़ात हों [illegible] दीन से ताअल्लुक़ नहीं, हाँ [illegible] सूरत है इत्तेहाद की

वह यह कि ये बदमज़हब फ़िरके इस बात से बाज़ आ जायें जो लड़ाई की अस्ल जड़ है यानी अल्लाह रसूल की तौहीन करना छोड़ दें सच्चे दिल से तौबा करें और उन किताबों को छापना बन्द कर दें जिनमें तौहीन की गई बल्कि सिर्फ़ उन इबारतों और उन नाजाइज़ बातों को अपनी किताबों से निकाल दें और सच्चे दिल से तौबा करें तो इत्तेहाद हो सकता है और इत्तेहाद की सिर्फ़ यही सूरत है।

अब्दुल्लाह : कुछ लोगों को जानकारी नहीं होती और बाद में जानकारी होती है और मुहल्ले, रिश्तेदारी, पुरानी दोस्ती या किसी और बिना पर क़ुरबत होने की वजह से मेल जोल के दौरान उन पर उस बदमज़हब दोस्त के ऐहसान होते हैं और वह इस बिना पर उससे तअल्लुक़ात नहीं ख़त्म कर पाते कि फ़लाँ ने हमारे साथ यह यह ऐहसान किया या हमारे गिरे वक़्त में साथ दिया या पैसे या माल से हमारी मदद की या हमारा कोई काम करवाया या अब भी कभी कभी मदद करता है। ग़र्ज़ बाज़ वक़्त उसके ऐहसानों में दबे हुए होते है और उससे तअल्लुक़ात ख़त्म नहीं कर पाते और कहते यह हैं कि किसी के ऐहसान को भूलना नहीं चाहिए अल्लाह ने भी ऐहसान का बदला देने का हुक्म दिया है। ऐसे में क्या करा जाए?

मुफ़्ती साहब : बात सही मालूम होती है मगर ज़रा सोचो अगर तुम्हें उस ऐहसान करने वाले से इतनी ही महब्बत है कि तुम भी उसकी हर मदद करने को तैयार हो और उसे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहता है तो तुम उसकी हर मदद करने को तैयार हो तो क्या तुमको यह गवारा है कि वह अल्लाह व रसूल की तौहीन करके दोज़ख़ में जाए यह तो एहसान का बदला या महब्बत का तक़ाज़ा नहीं हुआ। उसे महब्बत से समझाओ कि तुम ग़लत राह पर हो सही माअनी में यही ऐहसान का बदला हुआ। वह अगर तुम्हारे समझाने पर न माने और अपनी ही बातों पर अड़ा रहे तो अब ज़रा याद करो अल्लाह के ऐहसानों को क्या उसके ऐहसान ज़्यादा है या अल्लाह व रसूल के। ग़ौर करो एक वक़्त था तुम्हारा वजूद भी न था अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से तुम्हें पैदा फ़रमाया तुम्हें अशरफुल मख़लूकात यानी इन्सान पैदा किया तुम्हें सर से पा तक हज़ारों बल्कि बेगिनती नेअमतों से नवाज़ा ज़रा थोड़ी देर को सोचो इन नअमतों में से वह एक दो नेअमतें वापस ले तो और ग़ौर करो तुम्हें खाना, पानी, कपड़ा, हवा, धूप, रोशनी अंधेरा, इल्म अक़्ल ये सारी नेअमतें और रहमतें कौन दे रहा और किसके सदक़े में मिल रहीं हैं। बिन मांगे तुम्हें हज़ारो नअमतें मिल रही हैं क्या तुम सुबह उठ कर हर नेअमतें मांगते हो? अब ज़रा सोचो किसका

ऐहसान चुकाना ज़्यादा ज़रूरी है और किस तरह चुका सकोगे क्या अल्लाह और उसके हबीब का ऐहसान चुका सकोगे? क्या सच्चे ऐहसान करने वाले के मुक़ाबले तुम उस झूटे और फ़ानी ऐहसान करने वाले को तरजीह दोगे? अल्लाह और रसूल का ऐहसान सच्चा और बिना किसी लालच के है और उसके ऐहसान में उसका यही लालच कि तुम्हारा ईमान छीन ले जाए। अगर न भी ईमान छीन सका फिर भी वह तुम्हारे ऊपर इस लिए ऐहसान करता है कि कल तुम भी उसके साथ कुछ करोगे और अल्लाह व रसूल तुम पर ऐहसान किसी वजह से नहीं करते। दुनिया जानती है और मुसलमान का तो अक़ीदा है कि अल्लाह बेनियाज़ और बेपरवाह है उसे किसी चीज़ की हाजत नहीं, वह जो करता है तुम्हारे भले के लिए ही करता है। बदमज़ब के ऐहसान अगर हैं भी तो वह फ़ानी और ख़त्म होने वाले और झूटे हैं और अल्लाह का ऐहसान हमेशा से हुआ और बदतर से बदतर गुनाह करने पर भी जारी है और हमेशा होता ही रहेगा कभी ख़त्म न होगा तो क्या उस झूटे और ख़त्म होने वाले ऐहसान का लिहाज़ करोगे या जो होता रहा है और हमेशा होता रहेगा उसका लिहाज़ करोगे बेशक अल्लाह का ऐहसान सबसे बड़ा है। देखो तुम अल्लाह के ऐहसान का बदला चुका नहीं पाते न चुका सकोगे फिर भी उसके ऐहसानात जारी रहेंगे मगर ज़रा बदमज़हब के उन झूटे ऐहसानो से मुँह फेर कर तो देखो वह कैसा नाराज़ होता है या अगर नाराज़ न भी हो तो दिल ही दिल में क्या सोचेगा क्यूँकि यह इन्सान की फ़ितरत है कि जो उसके साथ बेरुख़ी करता है तो वह उससे दिल ही दिल में बुरा जानने लगता है। इस पर भी अगर वह तुमसे मुँह फेरे तो समझ लो कि वह अब किसी नई तरकीब से तुम्हारे साथ और ऐहसान करके तुम्हारे ईमान की फ़िक्र में और ज़्यादा लग जाएगा।

लोग तअल्लुक़ात इस लिए बढ़ाते हैं कि वह तअल्लुक़ात काम आयेंगे और होता भी ऐसा है कि तअल्लुक़ात दुनयवी काम भी आते हैं और यह अच्छी बात है लेकिन क्या तअल्लुक़ात हर ऐरे ग़ैरे से बढ़ाए जाते हैं, क्या तअल्लुक़ात इस लिए बढ़ाए जाते हैं कि हमारा दो पैसे बच जायेंगे चाहे उससे बड़ा नुक़सान हो जाए। अगर कोई किसी बुरे आदमी से तअल्लुक़ात बढ़ाना चाहता है तो लोग उसे यही समझाते हैं कि देखो इससे दूर रहो, इस वक़्त तो यह तुम्हारे काम आ रहा है मगर आने वाले वक़्त में यह तुम्हें नुक़सान पहुँचा सकता है और होता भी यही है बल्कि फ़ितरत भी यही है कि तअल्लुक़ात के पीछे हर शख़्स का कोई न कोई मतलब होता

है और यहाँ तअल्लुक़ात बढ़ाने में उसका मक़सद तुम्हारा ईमान छीनना और तुम्हारा मक़सद दुनिया का कोई फ़ानी काम। तो दुनिया के फ़ानी काम की ख़ातिर अपनी आक़बत और अपने ईमान को ख़तरे में न डालो। तअल्लुक़ात बढ़ाओ बेशक बढ़ाओ मगर उससे जिससे तुम्हारा दुनयवी काम भी निकले और दीन का नुक़सान भी न हो और अल्लाह व रसूल भी राज़ी हों। अल्लाह व रसूल को नाराज़ करके तुमने तअल्लुक़ात बढ़ाए और मान लो तुम्हारे दुनयवी काम भी हो गए क्या तुम्हें इससे फ़ायदा हुआ कि तुमने ज़रा से फ़ायदे की ख़ातिर अल्लाह और उसके रसूल से नाराज़गी मोल ले ली। यही तो इम्तहान है कि अल्लाह तआला देखना चाहता है कि तुम हमारी ख़ातिर हमारे दुश्मन को जो आज तुम्हें ज़्यादा अज़ीज़ हो गया है छोड़ते हो या नहीं।

अब्दुल्लाह : बाज़ पीरों के यहाँ तो इतनी सख़्ती नहीं है जितनी आपने बता दी उनके बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

मुफ़्ती साहब : आज कुछ पीर लोग भी ऐसे हैं जो अपनी पीरी मुरीदी चमकाने के लिए यह कहते हैं कि मियाँ इन चक्करों से दूर रहो यह आलिमों मौलवियों की बातें हैं फ़क़ीर के पास तो सब तरह के लोग आते हैं फ़क़ीर से इन बातों का क्या लेना देना। याद रखो अल्लाह व रसूल के दुश्मन को दोस्त समझने वाला पीर झूटा पीर है हाँ अगर वह पीर उसे समझा सकता है या अपनी बातनी ताक़त से उसे राह पर ला सकता है तो ऐसा करना बेहतर है मगर अवाम से यह कहना कि सब से मिलो यह सही नहीं। कुछ पीर या कुछ लोग यह कहते हैं कि इनसे दूर मत रहो बल्कि इन्हें समझाओ इनसे मिल जुल कर इन्हें पास बुला कर समझाओ, उनको महब्बत से अपनाओ। बात सही मालूम होती है मगर यह समझाना उनके लिए है जो वाक़ई समझना चाहते हैं या थोड़े बहुत बहके हुए है यानी सुन्नियों की बदआमालियां को देखकर उनसे बदज़न हो गए है आम सुन्नियों की हरकतें मसलन मुहर्रमदारी या लूट खसोट को देखकर ग़लत अक़ीदा क़ायम कर बैठे हैं कि सुन्नी बुरे है ऐसे लोगों को पास बुलाकर महब्बत से समझाना चाहिए बल्कि ऐसा करना ज़रूरी हैं।

आख़िर में वही बात फिर कहना है कि गुनाहों के अज़ाब से कभी न कभी छुटकारा मिल जाएगा लेकिन अगर ईमान छिन गया तो कभी छुटकारा न मिलेगा। अल्लाह तआला तमाम सुन्नियों को अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदक़े बदमहज़हबों की सोहबत से बचाए और दुनिया से साथ ईमान के उठाए। आमीन।

अब्दुल्लाह : कुछ ऐसी किताबों के नाम बताइये कि हम उन किताबों को पढ़ कर अक़ाइद और फ़ुरूई मसाइल को समझ सकें और फिर कोई सवाल उभरे तो आपके क़ीमती वक़्त से कुछ वक़्त लिया जाए।

मुफ़्ती साहब : इन मसाइल को समझने के लिए इस फ़क़ीर का दर हर वक़्त खुला है फिर भी कुछ किताबों के नाम नोट कर लें :-

1. इल्मे ग़ैब के सुबूत में आलाहज़रत की यह किताबें देखें :- अद्दौलतुल मक्किया (अरबी व उर्दू), इल्मे ग़ैबे रसूल (हिन्दी में भी), इम्बाउल मुस्तफ़ा।

2. वसीले के सुबूत और बुज़ुर्गों से मदद के सुबूत के बारे में जानने के लिए यह किताबें देखें :-

1. इस्लाहे फ़िक्र ओ ऐतक़ाद (अरबी में अल्लामा सय्यद अलवी मालकी) और यही किताब उर्दू में अल्लामा यासीन अख़्तर मिस्बाही साहब की।

2. वसीला दलाइल की रोशनी में (अरबी में मौलाना हकीम शरफ़ क़ादरी)

3. अल इन्तेबा (शाह वली उल्लाह अलैहिर्रहमा)

4. इस्लामी अक़ाइद (अल्लामा सय्यद यूसुफ़ हाशिम रिफ़ाई)

5. अल इस्तिमदाद (आला हज़रत)

6. निदाए या रसूलल्लाह (आला हज़रत)

3. मज़ारात पर हाज़री के सुबूत में आलाहज़रत की फ़तावा रज़विया (चौथी जिल्द) और क़ुबूरे मुसलमान की ताज़ीम -ओ- तौक़ीर देखें।

4. न्याज़ नज़्र व फ़ातहा के सुबूत के लिए 'फ़ातिहा का सुबूत' देखें। मौलाना शाह सलामतुल्लाह रामपुरी की किताब 'ग्यारहवीं शरीफ़' देखें।

5. तीजे और चालीसवें वग़ैरह में राइज हो गई ग़लत रस्मों के सुबूत में आला हजरत की किताब 'दावते मय्यत' देखें जो कि हिन्दी में भी छप चुकी है।

6. मज़ारात पर सजदा व तवाफ़ के रद्द में आलाहज़रत की किताब "हुरमते सजदए ताज़ीमी अहादीस की रोशनी में" देखें (हिन्दी में भी है) और फ़तावा रज़विया की चौथी जिल्द देखें।

7. मीलाद शरीफ़ और खड़े होकर सलाम पढ़ने के सुबूत में आलाहज़रत के वालिदे माजिद मौलाना नक़ी अली ख़ाँ अलैहिर्रहमा की किताब "इस्बातुल मौलिदे वल क़याम" और आलाहज़रत की किताब "इक़ामतुल क़यामा" देखें।

8. बुज़ुर्गों के मज़ार पर उर्स के सुबूत में फ़तावा रज़विया और जाअल हक़ का मुताला करें।

9. आलाहज़रत ने अपनी किताब "रूहों की दुनिया" और फतावा रज़विया की चौथी जिल्द में कुरआन और हदीस से यह साबित किया कि मुर्दे देखते हैं, सुनते हैं और बोलते भी हैं मगर हम उनका सुनना देखना और बोलना देख नहीं पाते। इस किताब में इस बात का सुबूत भी है कि रूहें घरों पर आती हैं।

10. हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर नुबुव्वत ख़त्म हो चुकी यानी अब कोई नबी नहीं आएगा। इस मसअले के सुबूत में आला हज़रत की किताब "ख़त्मे नुबुव्वत" फतावा रज़विया की छटी जिल्द में देखें।

11. हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हाज़िर -ओ- नाज़िर होने के सुबूत में मौलाना मुहम्मद फ़ैज़ अहमद उवैसी की किताब "हाज़िर -ओ- नाज़िर" देखें।

12. क़ब्र पर अज़ान के सुबूत में आलाहज़रत की किताब "अज़ाने क़ब्र" देखें। हिन्दी में भी छप चुकी है।

13. अज़ान के वक़्त अंगूठे चूमने के सुबूत में आलाहज़रत की किताब "अंगूठे चूमिए" देखें। हिन्दी में भी छप चुकी है।

14. रबी उल अव्वल शरीफ़ के मौक़े पर चराग़ाँ करने के सुबूत में आलाहज़रत का रिसाला "बरीक़ुल मनार" फ़तावा रज़विया में देखें।

15. मुहर्रम के दिनों में तख़्त ताज़िया मातम वग़ैरह के रद्द में आलाहज़रत की किताब रिसाला "ताज़ियादारी" देखें। जो हिन्दी में भी शाए हो चुका है।

16. बदमज़हब से निकाह हराम है और इसके अलावा बदमज़हबों के साथ दूसरे अहकामात जानने के लिए फ़तावा रज़विया की छठी जिल्द देखें और मुफ़्ती जलाल उद्दीन साहब की किताब 'बदमज़हबों से रिश्ते' उर्दू व हिन्दी में देखें।

17. मुफ़्ती जलाल उद्दीन साहब की एक किताब "बुज़ुर्गों के अक़ीदे" का मुताला करने के बाद आपको यह पता चलेगा कि हमारे बुज़ुर्गों के निम्न मसाइल के बारे में क्या अक़ीदे हैं :-
1. तसर्रुफ़ व इख़्तियार 2. इल्मे ग़ैब 3. हाज़िर ओ नाज़िर 4. क़ब्रों की ज़िन्दगी 5. ताज़ीम 6. वसीला 7. ज़्यारते क़ुबूर और उनसे मदद मांगना 8. हुज़ूर के जिस्म मुबारक का साया न था ------ यानी इस किताब के ज़रिए आपको यह बात अच्छी तरह मालूम हो जाएगी कि हमारे बुज़ुर्ग सालहा साल से बल्कि शुरू से क्यूँकि इस किताब में नबियों के अक़ीदे भी दिए गए हैं इस इख़्तिलाफ़ी मसाइल के बारे में क्या अक़ीदा रखते आये हैं और यह साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि बुज़ुर्गों के वही अक़ीदे रहे हैं जो आज अहले सुन्नत व जमाअत के हैं।

18. अल्लामा अर्शदुल क़ादरी साहब की एक किताब "ज़लज़ला" है जिसमें देवबन्दियों की किताबों के हवाले से यह सुबूत पेश किया गया है कि जिन अक़ीदों को यह लोग हराम शिर्क व नाजाएज़ मानते हैं उनमें से बहुत से अक़ीदे अपने बुज़ुर्गों के लिए सही जानते हैं --- साथ ही इस किताब में चैलेंज दिया गया है कि जो शख़्स इस किताब में दिए गए हवालों को झूट साबित कर दे उसे इनाम दिया जाएगा। ज़लज़ला हिन्दी और इंगलिश में भी छप चुकी है और इन्हीं की लिखी एक किताब "ज़ेर --ओ-- ज़बर" भी पढ़ने से तअल्लुक़ रखती है
19. हज़रत मौलाना मुश्ताक़ अहमद निज़ामी रहमतुल्लाह तआला अलैह की किताब "ख़ून के आंसू" में वहाबियों के मक्र -ओ- फ़रेब की ऐसी दास्तान है जो वाक़ई ख़ून के आंसू रुला दे यानी इससे साफ़ ज़ाहिर है कि इन बदमज़हबों ने दीन के ढाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। (हिन्दी में भी छप चुकी है)
20. अल्लामा अर्शदुल क़ादरी की किताब "जमाअते इस्लामी" मौदूदी जमाअत के रद्द में है जिसमें मौदूदी जमाअत के बेहूदा अक़ीदों को हवाले के साथ बताया गया है और इसमें साफ़ तौर पर यह साबित किया गया है कि जमाअते इस्लामी एक गुमराह और बददीन फ़िरक़ा है।
21. अल्लामा अर्शदुल क़ादरी ही किताबें "तबलीग़ी जमाअत" --- "तबलीग़ी जमाअत का फ़रेब" --- "तबलीग़ी जमाअत अहादीस की रौशनी में" पढ़ने से तअल्लुक़ रखतीं हैं। इन किताबों से साफ़ ज़ाहिर है कि तबलीग़ी जमाअत तबलीग़ की आड़ में क्या खेल खेल रही है यानी नमाज़ के बहाने बुलाती है और जब आदमी इन पर भरोसा करने लगता है तब धीरे धीरे अपने बातिल अक़ीदों का जाल फैला कर गुमराह करके ईमान पर डाका डालती है। इनमें की दो किताबें हिन्दी में भी छप चुकी हैं।
22. हुज़ूर के इख़्तेयारात के सुबूत में आलाहज़रत की किताब अलअम्नो वल उला देखें।
23. जनाब मौलाना मुहम्मद अहमद मिस्बाही साहब की लिखी किताब "इमाम अहमद रज़ा रद्दे बिदआत व मुनकिरात" में आप आजकल फैल रही बदआमालियाँ और बिदआत को देख सकते है। इस किताब में निम्न बातों का रद्द किया गया है :-

मज़ार का तवाफ़, मज़ार को बोसा देना (उल्मा को इसमें इख़्तिलाफ़ है), मज़ारात पर ऊँचा कुब्बा बनाना, औरतों का मज़ारात पर जाना, उर्स में रक़्स व ग़ैर शरई क़व्वाली, मसनूई (झूटी बनाई हुई) क़ब्र, ताक़ बनाना, ताज़ियादारी, दावते मय्यत, तीजा फ़ातिहा व नियाज़ औलिया के ग़नी के खाने का हुक्म वग़ैरह बहुत सी बुरी रस्में और बिदआत के बारे में आलाहज़रत

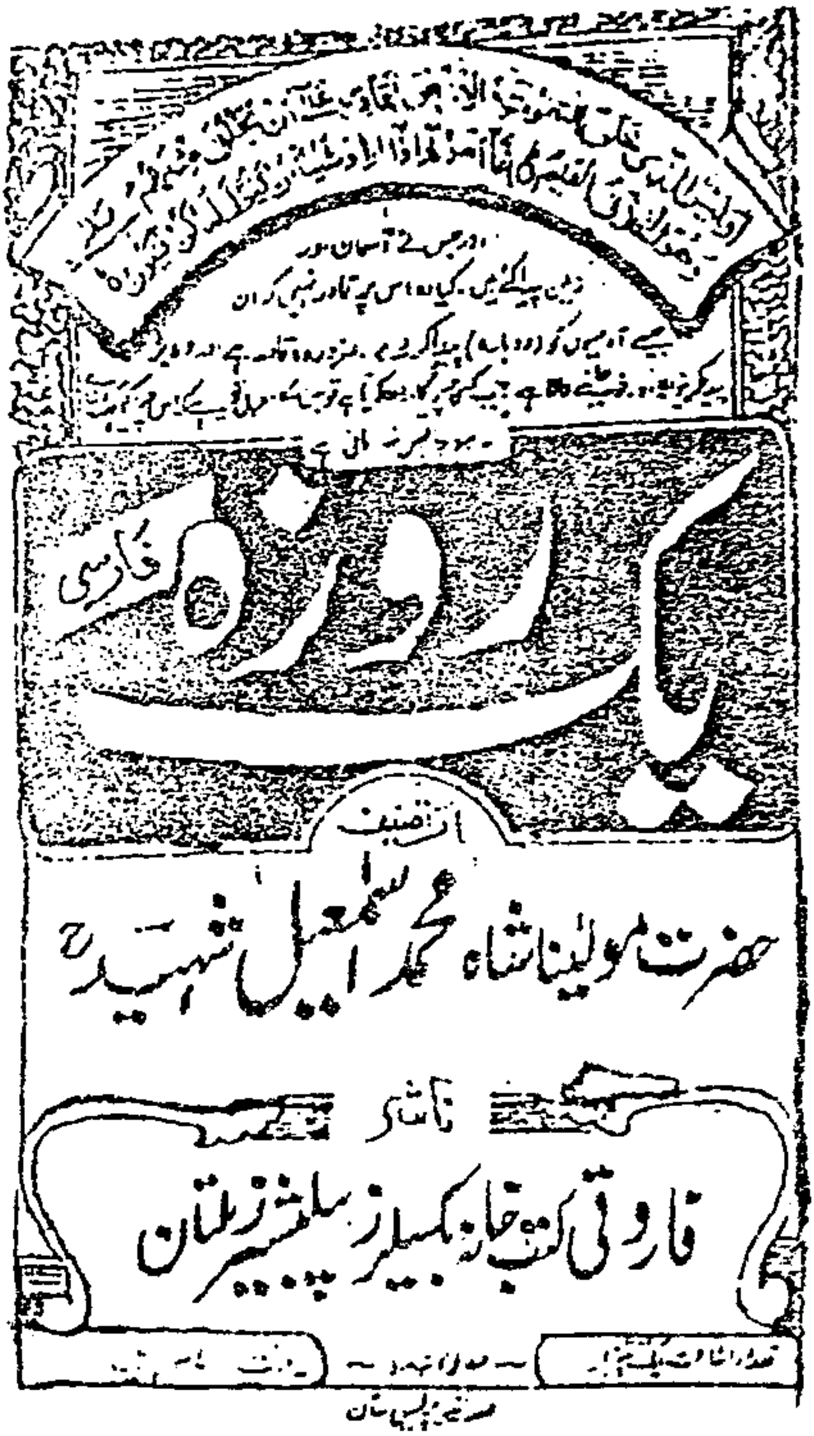
के हवाले से इस किताब में यह बताया गया है कि आलाहज़रत ने इन बातों से मुसलमानों को रोका है जबकि आज यह इल्ज़ाम दिया जाता है कि सुन्नी आलिम इन बातों को रोकते नहीं बल्कि करवाते है।

24. मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ अलैहिर्रहमा की किताब "जाअल हक़" ज़रूर ज़रूर देखें। जाअल हक़ हिन्दी और इंगलिश में भी छपी है। इस किताब में आपको तक़रीबन सारे सवालों के जवाब सुबूत के साथ मिल जायेंगे।

25. और एक किताब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सीरत पर ज़रूर पढ़े चूंकि जब हुज़ूर के बारे में बुनियादी अक़ाइद साफ़ होंगे तो सारे मसाइल ख़ुद ही सुधर जायेंगे। हिन्दी में अल्लामा गुलाम मुस्तफ़ा आज़मी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की "सीरते मुस्तफ़ा" ज़रूर पढ़ें।

26. हमने यहाँ बहुत किताबों के नाम आपको गिनाए मगर समझदार के लिए सिर्फ़ जनाब मुहम्मद अहमद साहब की एक किताब "दावते फ़िक्र" जो कि हिन्दी में और यही किताब उर्दू में "दावते ग़ौर ओ फ़िक्र" के नाम से है। इसमें वहाबियों की चन्द कुफ़्री इबारतों की फ़ोटो कापी भी लगाई गई जो सुबूत के लिए अटम बम से कम नहीं। इसमे साफ़ तौर यह ज़ाहिर हुआ कि अहले सुन्नत के अलावा तमाम फ़िरक़े बदमज़हब हैं और इनसे बचना बहुत ज़ुरूरी है। अब जो समझना ही न चाहे या सब कुछ समझ कर नादान बने उसका कोई इलाज नहीं। सुन्नियों की तक़रीबन हर किताब में उनके अक़ीदे साफ़ तौर पर लिखे होते हैं, हाँ अवाम की बदआमालियों से लोग ग़लत अक़ीदा क़ाएम कर लेते हैं, अल्लाह तआला हमें आपको और सभी को इन बदआमालियों से बचाए रखे ताकि दुश्मन को मौक़ा न मिले गुमराही फैलाने का।

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "यक रोज़ा" के कवर की फ़ोटो कापी



मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "यक रोज़ा" के सफ़ा 17 की फोटो कापी

١٧

اقول: اگر قول بوقوع مثل مذکور تجویز کذب مسطور است معاذ الله ...

اقول: امکان مثل مذکور مستلزم امکان کذب مسطور ...

... امکان مثل مذکور ... [illegible]

... [illegible] ... وقوع مثل مذکور ... [illegible] ... بقرآن ...

ممکن است داخل تحت قدرت الٰہیہ کما قال الله تعالی عز وجل قُل لَّوْ شَاءَ اللَّهُ ...

... [illegible] ...

... ممکن وجود مثل ... [illegible] ... قرآن مجید ...

... ممکن است داخل قدرت ... کما قال الله تعالی وَلَئِن شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا

إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا۔

قوله: وهو محال لانه نقص والنقص عليه تعالى محال۔

اقول: اگر مراد از محال ممتنع لذاته است که تحت قدرت الٰہیہ داخل نیست

پس لا نسلم که کذب مذکور بمعنی مسطور محال باشد چه عقد قضیه غیر مطابقه للواقع والقاء

آن بر ملائکه وانبیاء خارج از قدرت الٰہیہ نیست والا لازم آید که قدرت انسانی ازید

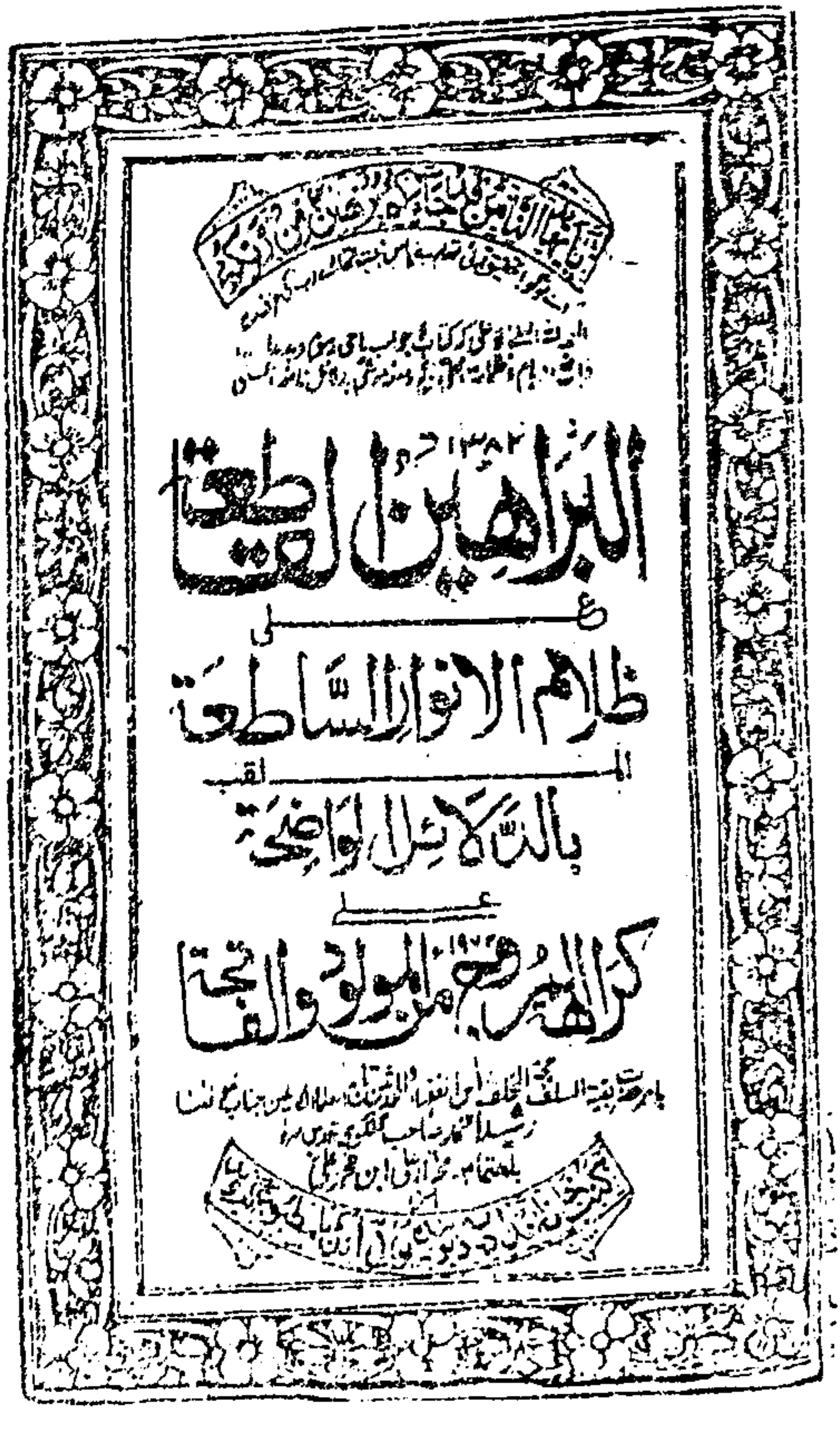
از قدرت ربانی باشد چه عقد قضیه غیر مطابقه للواقع والقاء آن بر مخاطبین در قدرت

اکثر افراد انسان است، کذب مذکور منافی حکمت او تعالی است پس ممتنع بالغیر است۔

... الکذب از کمالات حضرت حق سبحانه می شمارند و او را جل شانه بآن مدح می

... بخلاف اخرس و جماد که ایشان را کسی بعدم کذب مدح نمی کند، ونیز ...

मौ. ख़लील अहमद अम्बेठी की किताब "बरहाने क़ातेअ" के कवर की फ़ोटो कापी


البراهين القاطعة
على
ظلام الانوار الساطعة
الملقب
بالدلائل الواضحة
على
كراهة المروج من المولد والفاتحة

गो

ख़लील अहमद अम्बेठी की किताब "बराहीने क़ातेअ" के सफ़ा 6 की फ़ोटो कापी

۹

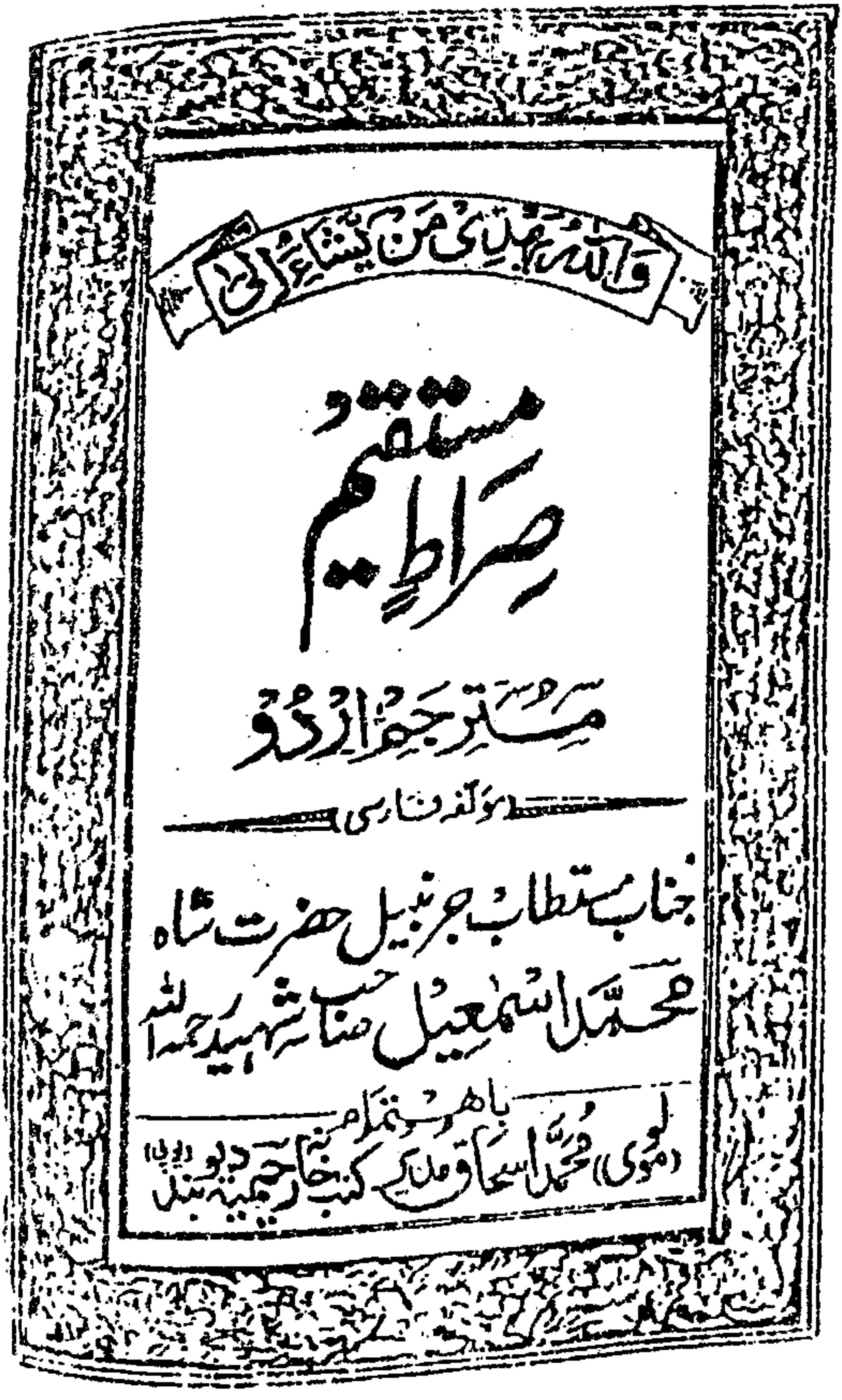
[illegible]

मौ. ख़लील अहमद अम्बेठी की किताब "बरहाने क़ातेअ" के सफ़ा 55 की फ़ोटो कापी

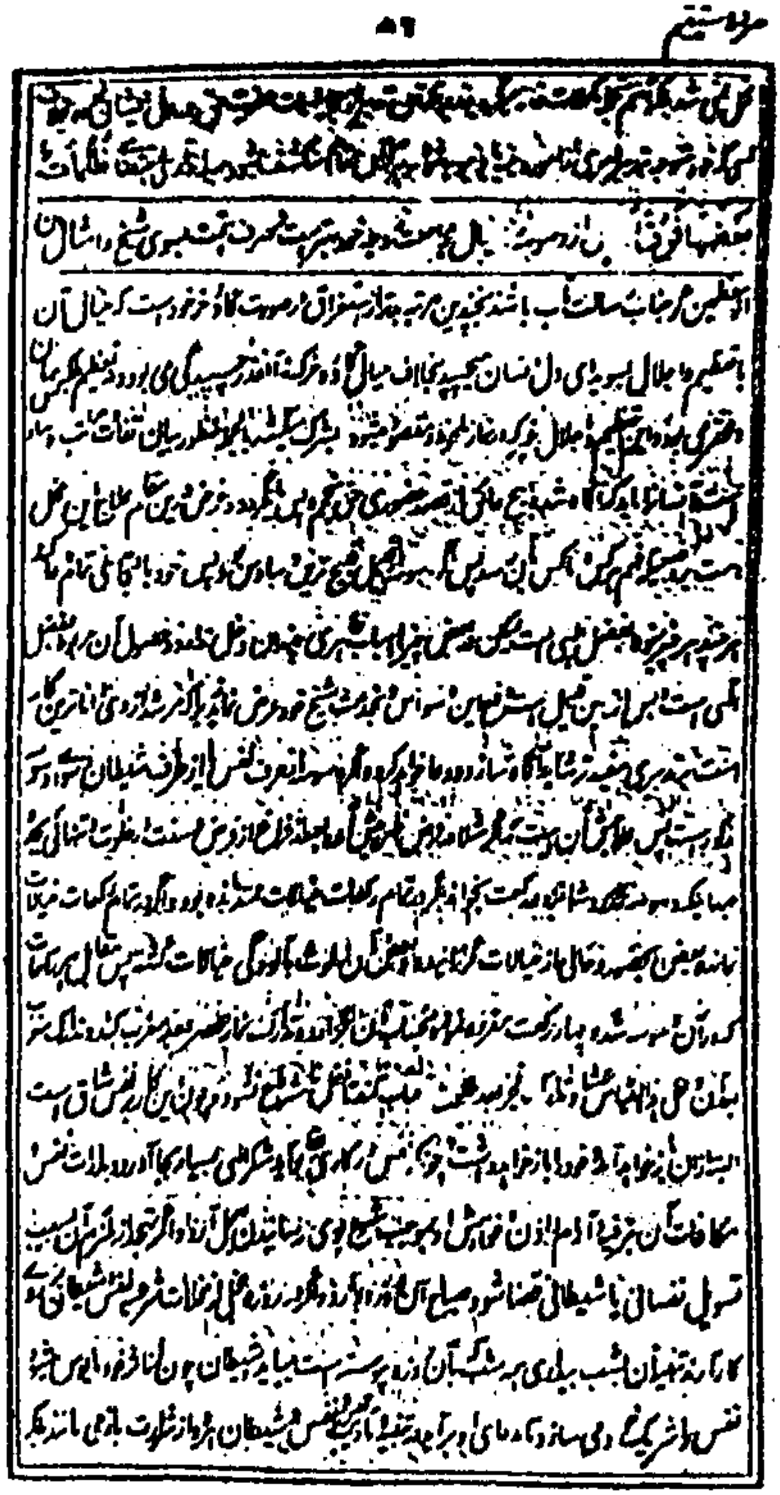
[illegible]

[illegible]

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "सिराते. मुस्तक़ीम" के कवर की फ़ोटो कापी



मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "सिराते मुस्तकीम" के फारसी एडीशन के सफ़ा 86 की फोटो कापी

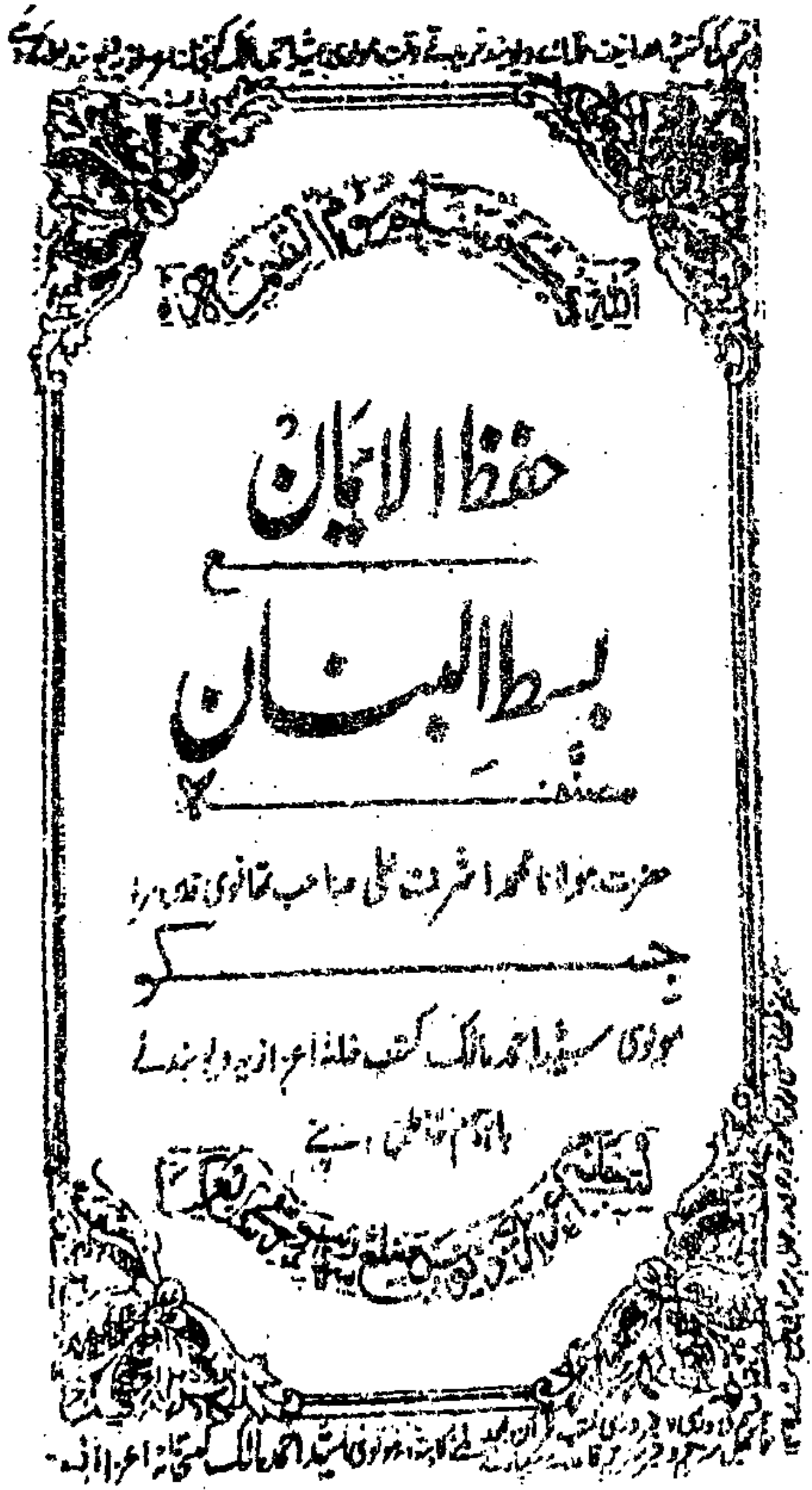

صراط مستقیم ۸۶

صرف همت بسوی شیخ و امثال آن
از معظمین گو جناب رسالت مآب باشند بچندین مرتبه بدتر از استغراق در صورت گاو و خر خود است که خیال آن
با تعظیم و اجلال بسویدای دل انسان میچسپد بخلاف خیال گاو و خر

(2) इस्लामिक वेबसाइटों की फेहरिस्त पैग़ामे मुसलमान के
... एडीशन के सफ़ा 120 की फोटो कापी

[illegible]

मौ. अशरफ़ अली थानवी की किताब "हिफ़ज़ुल ईमान" के कवर की फ़ोटो कापी


حفظ الایمان
مع
بسط البنان
مصنفہ
حضرت مولانا محمد اشرف علی صاحب تھانوی
جسکو
مولوی سید احمد مالک کتب خانہ اعزازیہ دیوبند نے

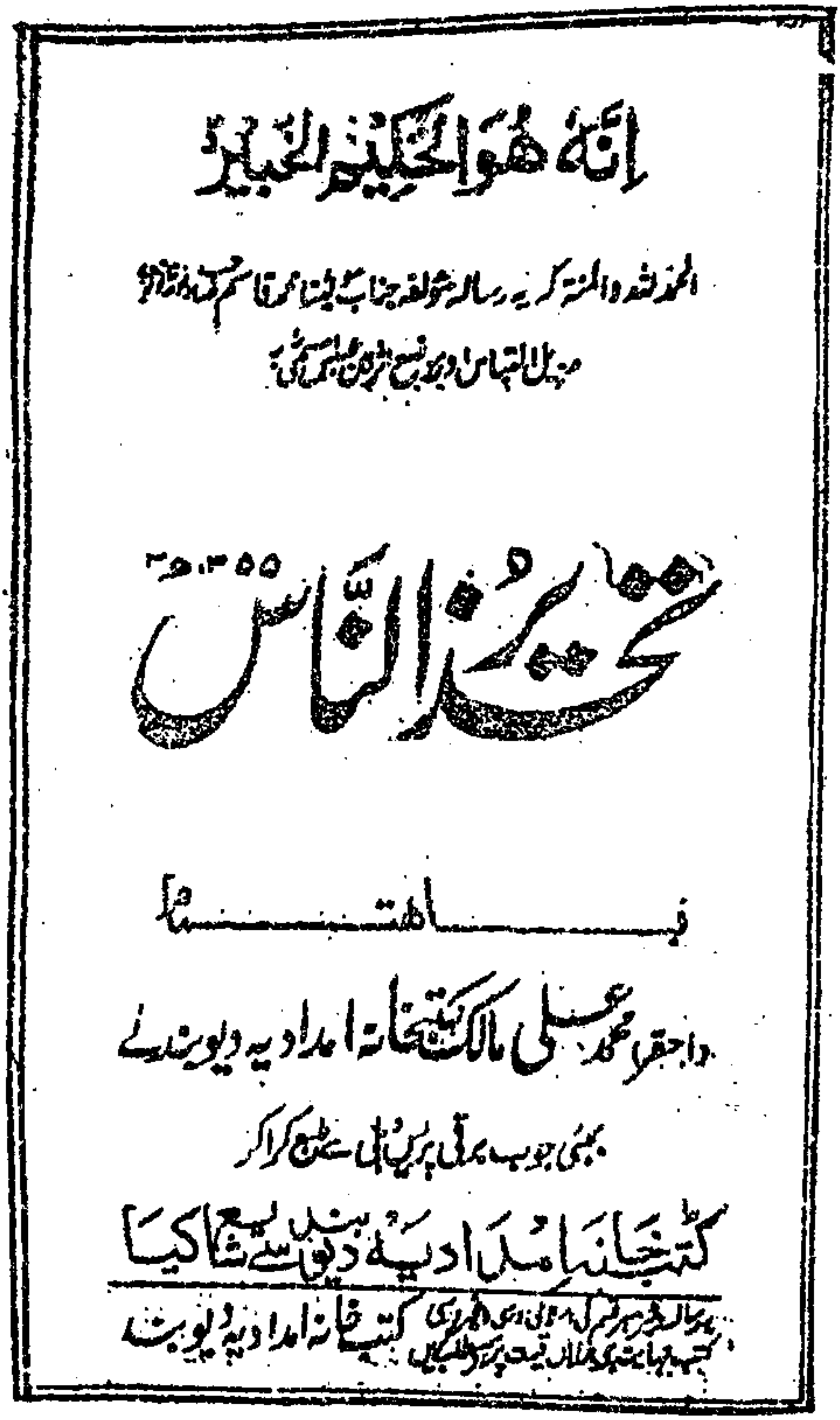
मौ. अशरफ़ अली थानवी की किताब "हिफ़ज़ुल ईमान" के सफ़ा 8 की फोटो कापी

۸

[illegible] ثابت [illegible] دلیل [illegible] نہیں۔ فقط [illegible]

جواب سوال سوم۔ مطلق غیب سے مراد وہ غیب ہے جو بدون واسطہ ہو یعنی جس پر کوئی دلیل
قائم نہ ہو اور اس کے ادراک کے لئے کوئی واسطہ وسیلہ نہ ہو اسی بنا پر لا یعلم من فی السموٰت
والارض الغیب الا اللہ اور لو کنت اعلم الغیب وغیرہ فرمایا گیا ہے اور جو بواسطہ
ہو اس پر غیب کا اطلاق محتاج قرینہ ہے تو بلا قرینہ مخلوق پر عالم الغیب کا اطلاق موہم شرک ہونے
کی وجہ سے ممنوع و ناجائز ہوگا قرآن مجید میں لفظ راعنا کی ممانعت اور حدیث مسلم میں عبدی
وامتی و ربی کہنے سے نہی۔ اسی وجہ سے وارد ہے اس لئے حضور سرور عالم صلی اللہ علیہ وسلم پر عالم
الغیب کا اطلاق جائز نہ ہوگا اور اگر التباس کی دلیل سے ان الفاظ کا اطلاق جائز ہو تو خالق رازق
وغیرہا بتاویل اسناد الی السبب کے بھی اطلاق کرنا جائز ہوگا کیونکہ آپ ایجاد اور بقائے عالم کے
سبب ہیں بلکہ خدا بمعنی مالک اور معبود بمعنی مطاع کہنا بھی درست ہوگا اور جس طرح آپ پر عالم
الغیب کا اطلاق اس تاویل خاص سے جائز ہوگا اسی طرح دوسری تاویل سے اس صفت کی نفی
حق جل وعلا شانہ سے بھی جائز ہوگی یعنی عالم الغیب بمعنی عالم بالغیب بلا واسطہ اللہ تعالیٰ کے لئے ثابت نہیں
مگر اپنے ذہن میں معنی ثانی کو حاضر کر کے کوئی کہتا پھرے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عالم الغیب
ہیں اور حق تعالیٰ شانہ عالم الغیب نہیں نعوذ باللہ منہ تو کیا اس کلام کو منہ سے نکالنے کی کوئی عاقل
متدین اجازت دینا گوارا کر سکتا ہے اس بنا پر تو بہت سے تعبیروں کی تاویل [illegible]
شرعاً [illegible] ہوں گی [illegible] پھر یہ کہ آپ
کی ذات مقدسہ پر علم غیب کا حکم کیا جانا اگر بقول زید صحیح ہو تو دریافت طلب یہ امر ہے کہ اس
غیب سے مراد بعض غیب ہے یا کل غیب اگر بعض علوم غیبیہ مراد ہیں تو اس میں حضور کی ہی کیا
تخصیص ہے ایسا علم غیب تو زید و عمرو بلکہ ہر صبی و مجنون بلکہ جمیع حیوانات و بہائم کے لئے بھی
حاصل ہے کیونکہ ہر شخص کو کسی نہ کسی ایسی بات کا علم ہوتا ہے جو دوسرے شخص سے مخفی ہے تو
چاہئے کہ سب کو عالم الغیب کہا جاوے پھر اگر زید اس کا التزام کر لے کہ ہاں میں سب کو عالم الغیب
کہوں گا تو پھر غیب کو منجملہ کمالات نبویہ کیوں شمار کیا جاتا ہے جس امر میں مومن بلکہ انسان کی بھی
خصوصیت نہ ہو وہ کمالات نبوت سے کب ہو سکتا ہے اور اگر التزام نہ کیا جاوے تو نبی غیر نبی میں وجہ
فرق بیان کرنا ضروری ہے اور اگر تمام علوم غیبیہ مراد ہیں اس طرح کہ اس کی ایک فرد بھی خارج
نہ رہے تو اس کا بطلان دلیل نقلی و عقلی سے ثابت ہے۔ اول نقلیہ [illegible] قرآن مجید میں

मौ. क़ासिम नानूतवी की किताब "तहज़ीरुन्नास" के कवर की फ़ोटो .कापी



إنه هو الحكيم الخبير

الحمد للہ والمنۃ کہ یہ رسالہ مؤلفہ جناب مولانا محمد قاسم صاحب قدس سرہ

تحذیر الناس ۱۳۵۵ھ

باہتمام

راقم محمد علی مالک کتبخانہ امدادیہ دیوبند نے

بمبئی ... پریس ... سے طبع کراکر

کتبخانہ امدادیہ دیوبند سے شائع کیا

کتبخانہ امدادیہ دیوبند

क़ासिम नानूतवी की किताब "तहज़ीरुन्नास" के सफ़ा 2 की फ़ोटो कापी

تحذیر الناس ۲

بسم اللہ الرحمن الرحیم

کیا فرماتے ہیں علماء دین اس باب میں کہ زید نے بہ تبعیت ایک عالم کے جس کی تصدیق ایک مفتی محقق
نے بھی کی تھی درباره قول ابن عباس جو درمنثور وغیرہ میں ہے ان اللہ خلق سبع ارضین
فی کل ارض آدم کآدمکم ونوح کنوحکم وابراہیم کابراہیمکم وعیسیٰ کعیساکم ونبی کنبیکم
کے یہ عبارت تحریر کی کہ میرا یہ عقیدہ ہے کہ حدیث مذکور صحیح اور معتبر ہے اور زمین کے طبقات
جدا جدا ہیں اور ہر طبقے میں مخلوق الٰہی ہے اور حدیث مذکور سے ہر طبقے میں انبیاء کا ہونا معلوم
ہوتا ہے لیکن اگرچہ ایک ایک خاتم کا ہونا طبقات باقیہ میں ثابت ہوتا ہے مگر اس کا مثل ہونا ہمارے
خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وسلم کے ثابت نہیں اور نہ یہ میرا عقیدہ ہے کہ وہ خاتم مماثل آنحضرت صلعم کے ہوں
کہ اولاد آدم جس کا ذکر لقد کرمنا بنی آدم میں ہے اور سب مخلوقات سے افضل ہے وہ اسی طبقے
کے آدم کی اولاد ہے بالاجماع اور ہمارے حضرت صلعم سب اولاد آدم سے افضل ہیں تو بلا شبہ
آپ تمام مخلوقات سے افضل ہوئے پس دوسرے طبقات کے خاتم جو مخلوقات ہیں وہ آپ کے
مماثل کسی طرح نہیں ہو سکتے انتہی اور عمرو اس تحریر کے رد میں یہ کہتا ہے کہ اگر شرع سے اس کے
خلاف ثابت ہوگا تو میں اسی کو مان لوں گا میرا اصرار اس تحریر پر نہیں بس علماء شرع سے استفسار
ہے کہ الفاظ حدیث ان معنوں کو محتمل ہیں یا نہیں اور زید بوجہ اس تحریر کے کافر یا فاسق یا خارج
اہلسنت و جماعت سے ہوگا یا نہیں بینوا توجروا

الحمد للہ رب العالمین والصلوٰۃ والسلام علی رسولہ خاتم النبیین سید المرسلین وعلیٰ آلہ
واصحابہ اجمعین بعد حمد و صلوٰۃ کے قبل عرض جواب یہ گذارش ہے کہ اول معنی خاتم النبیین معلوم
کرنے چاہئیں تاکہ فہم جواب میں کچھ دقت نہ ہو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو خاتم النبیین فرمایا گیا ہے اصل اس کے معنی کیا ہیں

मौ. क़ासिम नानूतवी की किताब "तहज़ीरुन्नास" के सफ़ा 3 की फ़ोटो कापी

کرنے چاہئیں تاکہ فہم جواب میں کچھ دقت نہ ہو سو عوام کے خیال میں تو رسول اللہ صلعم کا خاتم ہونا
بایں معنی ہے کہ آپ کا زمانہ انبیاء سابق کے زمانے کے بعد اور آپ سب میں آخر نبی ہیں مگر اہل فہم پر روشن
ہوگا کہ تقدم یا تاخر زمانی میں بالذات کچھ فضیلت نہیں پھر مقام مدح میں ولکن رسول اللہ و خاتم النبیین فرمانا
اس صورت میں کیونکر صحیح ہو سکتا ہے ہاں اگر اس وصف کو اوصاف مدح میں سے
نہ کہیے اور اس مقام کو مقام مدح قرار نہ دیجئے تو البتہ خاتمیت باعتبار تاخر زمانی صحیح
ہو سکتی ہے مگر میں جانتا ہوں کہ اہل اسلام میں سے کسی کو یہ بات گوارا نہ ہوگی کہ اس میں ایک تو خدا
کی جانب نعوذ باللہ زیادہ گوئی کا وہم ہے آخر اس وصف میں اور قد و قامت و شکل و رنگ و حسب و
نسب و سکونت وغیرہ اوصاف میں جن کو نبوت یا اور فضائل میں کچھ دخل نہیں کیا فرق ہے جو اس کو
ذکر کیا اوروں کو ذکر نہ کیا دوسرے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی جانب نقصان قدر کا احتمال کیونکہ
اہل کمال کے کمالات ذکر کیا کرتے ہیں اور ایسے ویسے لوگوں کے اس قسم کے احوال بیان کیا کرتے
ہیں اعتبار نہ ہو تو تاریخوں کو دیکھ لیجئے باقی یہ احتمال کہ یہ دین آخری دین تھا اس لئے سد باب اتباع
مدعیان نبوت کیا ہے جو کل جھوٹے دعوے کر کے خلائق کو گمراہ کریں گے البتہ فی حد ذاتہ قابل لحاظ ہے پر
جملہ ما کان محمد ابا احد من رجالکم اور جملہ ولکن رسول اللہ و خاتم النبیین میں کیا تناسب
تھا جو ایک کو دوسرے پر عطف کیا اور ایک کو مستدرک منہ اور دوسرے کو استدراک قرار دیا اور
ظاہر ہے کہ اس قسم کی بے ربطی اور بے ارتباطی خدا کے کلام معجز نظام میں متصور نہیں اگر سد باب مذکور منظور
ہی تھا تو اس کے لئے اور بیسیوں موقع تھے بلکہ بنائے خاتمیت اور بات پر ہے جس سے تاخر زمانی اور
سد باب مذکور خود بخود لازم آ جاتا ہے اور فضیلت نبوی دوبالا ہو جاتی ہے تفصیل اس اجمال کی یہ ہے
کہ موصوف بالعرض کا قصہ موصوف بالذات پر ختم ہو جاتا ہے جیسے موصوف بالعرض کا وصف موصوف
بالذات سے مکتسب ہوتا ہے موصوف بالذات کا وصف جس کا ذاتی ہونا اور غیر مکتسب من الغیر ہونا
لفظ بالذات ہی سے مفہوم ہے کسی غیر سے مکتسب اور مستعار نہیں ہوتا مثال درکار ہو تو لیجئے زمین و
کہسار اور در و دیوار کا نور اگر آفتاب کا فیض ہے تو آفتاب کا نور کسی اور کا فیض نہیں اور ہماری
غرض وصف ذاتی ہونے سے اتنی ہی تھی بایں ہمہ یہ وصف اگر آفتاب کا ذاتی نہیں تو جس کا تم کہو
وہی موصوف بالذات ہوگا اس کا نور ذاتی ہوگا کسی اور سے مکتسب اور کسی اور کا فیض نہ ہوگا
الغرض یہ بات بدیہی ہے کہ موصوف بالذات سے آگے سلسلہ ختم ہو جاتا ہے چنانچہ خدا کے لئے کسی اور
خدا کے نہ ہونے کی یہی وجہ ہے یعنی ممکنات کا وجود اور کمالات وجود سب عرضی یعنی بالعرض

سلہ عوام کے خیال [illegible]

मौ. क़ासिम नानूतवी की किताब "तहज़ीरुन्नास" के सफ़ा 13 की फ़ोटो कापी

ہوا ثابت ہوگیا کہ موصوف بالذات اس وصف میں کسی کی طرف محتاج نہ ہوگا اس میں انبیائے گذشتہ ہوں یا
کوئی اور ملا بالفرض اگر آپ کے زمانہ میں بھی اس زمین میں یا کسی اور زمین میں یا آسمان میں
کوئی نبی ہو تو وہ بھی اس وصف نبوت میں آپ ہی کا محتاج ہوگا اور اس کا سلسلۂ نبوت بہرطور
آپ پر مختتم ہوگا اور کیوں نہ ہو عمل کا سلسلہ علم پر ختم ہوتا ہے جب علم ممکن للبشر ہی ختم ہو لیا تو پھر سلسلہ
علم و عمل کیا چلے غرض اختتام اگر بایں معنی تجویز کیا جاوے جو میں نے عرض کیا تو آپ کا خاتم ہونا انبیاء گذشتہ
ہی کی نسبت خاص نہ ہوگا بلکہ اگر بالفرض آپ کے زمانے میں بھی کہیں اور کوئی نبی ہو جب بھی آپ کا
خاتم ہونا بدستور باقی رہتا ہے مگر جیسے اطلاق خاتم النبیین اس بات کو مقتضی ہے کہ اس لفظ میں کچھ تاویل
نہ کیجئے اور علی العموم تمام انبیاء کا خاتم کہئے اسی طرح اطلاق لفظ مثلہن جو آیہ اللہ الذی خلق سبع
سمٰوات ومن الارض مثلہن یتنزل الامر بینہن ...... میں واقع ہے اس بات کو
مقتضی ہے کہ سوا تباین ذاتی ارض وسما جو لفظ سمٰوات اور لفظ ارض سے مفہوم ہے اور ان
دونوں لفظوں کا ذکر کرنا اس باب میں بمنزلۂ استثناء ہے اور نیز علاوہ اس تباین کے جو لوازم
لوازم ذاتی یا عرضی میں مناسبات ذاتی تو ان کے لوازم وجود ہوں یا متفارق بین السماء والارض متحقق
اور بالاتفاق [illegible] بین السماء والارض مماثلت ہونی چاہئے سو اس میں سے مماثلت
فی العدد اور مماثلت فی البعد اور فوق و تحت ہونے میں مماثلت تو اسی حدیث مرفوع سے معلوم
ہوتی ہے جس سے تحقیق سبع ارضین معلوم ہوا ہے اور صاحب مشکوٰۃ نے بحوالہ امام ترمذی و امام
احمد باب بدء الخلق میں اس کو روایت کیا ہے اور ترمذی میں کتاب التفسیر میں سورۂ حدید کی
تفسیر میں روایت کیا ہے وہ حدیث یہ ہے۔ وعن ابی ہریرۃ قال بینما نبی اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
جالس واصحابہ اذ اتی علیہم سحاب فقال نبی اللہ صلی اللہ علیہ وسلم هل تدرون ما هذا قالوا اللہ ورسولہ اعلم قال
هذہ العنان هذہ روایا الارض یسوقہا اللہ الی قوم لا یشکرونہ ولا یدعونہ ثم قال هل تدرون
ما فوقکم قالوا اللہ ورسولہ اعلم قال فانها الرقیع سقف محفوظ وموج مکفوف ثم
قال هل تدرون ما بینکم وبینها قالوا اللہ ورسولہ اعلم قال بینکم وبینها خمس مائة عام ثم
قال هل تدرون ما فوق ذلک قالوا اللہ ورسولہ اعلم قال سماءان بعد ما بینهما خمس مائة سنة
ثم قال کذلک حتی عد سبع سموات ما بین کل سماءین ما بین السماء والارض ثم قال هل تدرون ما فوق
ذلک قالوا اللہ ورسولہ اعلم قال ان فوق ذلک العرش وبینہ وبین السماء بعد ما بین السماءین ثم قال هل

मौ. क़ासिम नानूतवी की किताब "तहज़ीरुन्नास" के सफ़ा 24 की फ़ोटो कापी

وجہ تمام اقرار کریں بلکہ اس سے بھی پوچھئے انکار میں تکذیب ہے جن نہ مسلم کہ تنسیخ ایسی بیان تردید
میں تو کچھ اندیشہ ہی نہیں بلکہ سات زمینوں کی جگہ اگر ہزار دو ہزار ہوں اور ہر ایک میں اسی طرح اور منشیت ہو تو
تو بھی ذرہ بھر شبہ ہوں کہ انکار سے زیادہ اس اقرار میں کچھ وقعت نہیں گی نہ کسی آیۃ کا تعارض نہ کسی
حدیث سے معارضہ رہا۔ اگر معلوم اسی چنین ثبات شے زیادہ کی نفی نہیں سو جب انکار اثر مذکور بایں
باوجود تصحیح اہل حدیث بے جرأت ہے تو اقرار میں زائد از تسلیم میں ترکہ ذرہ ہی نسبت علاوہ برین
بر تقدیر خاتمیت زمانی انکار اثر مذکور میں قدر نبوی صلی اللہ علیہ وسلم کچھ افزائش نہیں ظاہر ہے کہ اگر ایک شہر
آباد ہو اور اس کا ایک شخص حاکم ہو یا سب میں افضل تو پیدا ہو کہ اس شہر کی برابر دوسرا دنیا
کوئی شہر آباد کیا جائے اور اس میں بھی ایسا ہی ایک حاکم ہو سب میں افضل تو اس شہر کی آبادی
ہو یا اس کے حاکم کی حکومت یا اس کے فرد افضل کی افضلیت سے حاکم یا افضل شہر اول کی
حکومت یا افضلیت میں کچھ کمی نہ آجائیگی اور اگر بصورت تسلیم اور چھ زمینوں کے
وہاں کے آدم و نوح وغیرہم علیہم السلام یہاں کے آدم و نوح علیہم السلام وغیرہم سے زمانہ
سابق میں ہوں تو باوجود مماثلت کلی بھی آپ کی خاتمیت زمانی سے انکار نہ ہوسکے گا جو ان
کے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے مساوات میں کچھ حجت کیجئے ہاں اگر خاتمیت بمعنے اتصاف ذاتی بوصف نبوت
لیجئے جیسا اس ہیچمدان نے عرض کیا ہے تو پھر سوا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور کسی کو افراد مقصود بالخلق میں
سے مماثل نبوی صلی اللہ علیہ وسلم نہیں کہہ سکتے بلکہ اس صورت میں فقط انبیاء کی افراد خارجی ہی پر آپ کی
افضلیت ثابت نہ ہوگی افراد مقدرہ پر بھی آپ کی افضلیت ثابت ہو جائیگی بلکہ اگر بالفرض بعد
زمانہ نبوی صلی اللہ علیہ وسلم بھی کوئی نبی پیدا ہو تو پھر بھی خاتمیت محمدی میں کچھ فرق نہ آئے گا چہ جائیکہ
آپ کے معاصر کسی اور زمین میں یا فرض کیجئے اسی زمین میں کوئی اور نبی تجویز کیا جائے بالجملہ
ثبوت اثر مذکور دونا ثبت خاتمیت سے معارض و منافی خاتم النبیین نہیں جو یوں کہا جائے کہ
یہ اثر شاذ بمعنی مخالف روایۃ ثقات ہے اور اس سے یہ بھی واضح ہو گیا ہوگا کہ حسب وہم منکران
اثر اس اثر میں کوئی علت قادحہ بھی نہیں جو اسی راہ سے انکار ثبوت کیجئے کیونکہ اول تو امام
بیہقی کا اس اثر کی نسبت صحیح لکھنا ہی اس بات کی دلیل ہے کہ اس میں کوئی علت قادحہ نہیں
کا دوسری وجہ نہیں دوسرے شذوذ تھا تو یہی تھا کہ مخالف خاتم النبیین ہے اور علت تھی
تب بھی یہی تھی اور کوئی آیت یا حدیث ایسی ہی ہوتی جس سے سات کم زیادہ زمینوں
کا ہونا یا انبیاء کا کم و بیش ہونا یا نہ ہونا ثابت ہوتا تو کہہ سکتے تھے کہ وجہ شذوذ یہ ہے کہ اگر ایک

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "तकवीयतुल ईमान" के कवर की फोटो कापी

لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم

تقویۃ الایمان

مصنفہ

حضرت مولانا شاہ اسمٰعیل صاحب شہیدؒ

(۱) — تذکیر الاخوان

(۲) — خط مولوی محمد اسمٰعیل شہیدؒ

(۳) — فتویٰ درباره تقویۃ الایمان و تذکیر الاخوان

(۴) — ترجمہ عقائد نامہ شیخ عبدالحق محدث دہلوی

(۵) — فتویٰ درباره علم غیب

(۶) — رسالہ بوارق الاشرار

(۷) — رسالہ ہدایت الایمان منظوم (۸) — تبصرہ کافیہ

ناشر

راشد کمپنی دیوبند یوپی

मो. इस्माईल देहलवी की किताब "तक्वीयतुल ईमान" के सफ़ा 13 की फ़ोटो कापी

۳

[illegible]

اس کی سزا نہ دیگا۔ اللہ سب مسلمانوں پر رحمت کرے اور ان کو شرک کی آفت سے بچاوے آمین

وقال اللہ تعالیٰ وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ۔ — اور فرمایا اللہ تعالیٰ نے سورۂ لقمان میں کہ جب کہا لقمان نے اپنے بیٹے کو اور وہ نصیحت کرتا تھا اس کو کہ اے بیٹے مت شریک ٹھہرا اللہ کا بے شک شرک بڑی بے انصافی ہے۔

ف۔ یعنی اللہ صاحب نے لقمان کو عقلمندی دی تھی سو انہوں نے اس سے سمجھا کہ بے انصافی یہی ہے کہ کسی کا حق اور کسی کو پکڑا دینا اور جس نے اللہ کا حق اس کی مخلوق کو دیا تو بڑے سے بڑے کا حق لے کر ذلیل سے ذلیل کو دے دیا جیسے بادشاہ کا تاج ایک چمار کے سر پر رکھ دیجئے اس سے بڑی بے انصافی کیا ہوگی اور یہ یقین جان لینا چاہئے کہ ہر مخلوق بڑا ہو یا چھوٹا وہ اللہ کی شان کے آگے چمار سے بھی ذلیل ہے۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ جیسے شرع کی راہ سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ شرک سب سے بڑا گناہ ہے ایسے ہی عقل کی راہ سے بھی یہی معلوم ہوتا ہے کہ شرک سب عیبوں سے بڑا عیب ہے اور یہی حق ہے کیونکہ آدمی میں بڑے سے بڑا عیب یہی ہے کہ اپنے بڑوں کی بے ادبی کرے سو اللہ سے بڑا کوئی نہیں اور شرک اسی کی بے ادبی ہے۔

وقال اللہ تعالیٰ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ۔ — فرمایا اللہ تعالیٰ نے سورۂ انبیاء میں اور نہیں بھیجا ہم نے تجھ سے پہلے کوئی رسول مگر اس کی طرف یہی حکم بھیجا کہ بیشک بات یوں ہے کہ کوئی بندگی کے لائق نہیں سوائے میرے سو میری ہی بندگی کرو۔

ف۔ یعنی جتنے پیغمبر آئے سو وہ اللہ کی طرف سے یہی حکم لائے ہیں کہ اللہ کو مانئے اور اس کے سوا کسی کو نہ مانئے۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ شرک سے منع اور توحید کا حکم سب شریعتوں میں ہے سو یہی راہ نجات کی ہے اس کے سوا اور سب راہیں غلط ہیں۔

اخرج مسلم عن ابی ہریرۃ رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم — مشکوٰۃ کے باب الریا میں لکھا ہے کہ مسلم نے ذکر کیا کہ نقل کیا ابوہریرہ نے کہ فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کہ فرمایا

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "तक़वीयतुल ईमान" के सफ़ा 28 की फोटो कापी

[illegible]

یا صاحبی السجن ءارباب متفرقون خیر ام اللہ الواحد القہار ما تعبدون من دونہ الا اسماء سمیتموہا انتم وآباؤکم ما انزل اللہ بہا من سلطان ان الحکم الا للہ امر الا تعبدوا الا ایاہ ذلک الدین القیم ولکن اکثر الناس لا یعلمون

[illegible]

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "तक़्वीयतुल ईमान" के सफ़ा 39 की फ़ोटो कापी

جیسا اپنا ہی اور ہم ہی زور چلتے ہیں پھر کسی کام میں دخل کرنے کی اور اسکی صفت میں . خدا اللہ کی ذکر کس
کو قدرت ہے وہ جو مالک الملک بیچ بچاؤ کر دو روح کے اور پیغمبری وزیری وغیرہ کے . بس ان میں کی اپنی
کیا بکر رہا ہے وہ کچھ کسی کے شفاعت اور سفارش کرے اور بس اپنی قدر کو اس کے سامنے کسی کام کا نہ جان کر چپکے
بیٹھ رہو . . . پیغمبر خدا صلی اللہ علیہ وسلم تو اس کے دربار میں یہ حالت ہے کہ ایک گنوار کے
منہ سے اتنی بات سنتے ہی مارے دہشت کے بے حواس ہو گئے اور عرش سے زمین تک سب اللہ کی عظمت بہولی
بہولی ہے بیان کرنے لگے پھر کیا غضب ہے کہ ان لوگوں کو اس مالک الملک سے ایک بھائی بندی کا رشتہ یا
دوستی آشنائی کا سا علاقہ سمجھ کر کیا کیا بڑھ بڑھ کر باتیں کہتے ہیں کوئی کہتا ہے کہ میں نے اپنے رب کو
ایک کوڑی کو مول لیا اور کوئی کہتا ہے کہ میں اپنے رب سے دو برس بڑا ہوں کوئی کہتا ہے کہ اگر میرا رب
میرے پیر کے سوا کسی اور صورت میں ظاہر ہو تو ہرگز اس کو نہ دیکھوں . اور کسی نے یہ بیت کہی ہے بیت دل از
محمد عربی دارم و رقابت با خدائے خویش دارم . اور کسی نے یوں کہا ع با خدا دیوانہ باش و با محمد ہوشیار
اور کوئی حقیقت محمدی کو حقیقت الوہیت سے افضل بتاتا ہے . اللہ بچاوے ایسی ایسی باتوں سے
لیکن بھی بیت کہی ہے کسی شاعر نے بیت از خدا خواہیم توفیق ادب . بے ادب محروم گشت از فضل رب .
حدیث سے معلوم ہوا کہ یہ جو لوگوں میں ایک ختم مشہور ہے کہ اس میں یوں پڑھتے ہیں یا شیخ عبد القادر جیلانی
شیئاً للہ یعنی اے شیخ عبد القادر دو ہم کو اللہ کے واسطے یہ لفظ نہ کہا چاہیے ان آدمیوں کو یا اللہ کہو
نہ شیخ عبد القادر کے واسطے تو بجا ہے غرض کہ ایسا لفظ منہ سے نہ بولے کہ جس سے کچھ کفر نکلے
یا بے ادبی کی آوے کہ اس کی بہت بڑی شان ہے اور بڑا بے پرواہ بادشاہ ہے ایک نکتہ میں پکڑ لینا اور
ایک نکتہ میں نواز دینا اسی کا کام ہے اور یہ بات عقل کی ہے کہ ظاہر میں لفظ بے ادبی کا بولے اور
اس سے کچھ اور معنی مراد لے کہ معما اور پہیلی بولنے کی اور بہت جگہ ہیں کچھ اللہ کی جناب میں درور
نہیں کوئی شخص اپنے بادشاہ سے یا اپنے باپ سے ٹھٹھا نہیں کرتا اور پہیلی نہیں بولتا اس کام کے
واسطے دوست آشنا ہیں نہ باپ اور نہ بادشاہ . اَخرَجَ مُسلِمٌ عَنِ ابنِ عُمَرَ رَضِیَ اللہُ عَنہُ قَالَ
قَالَ رَسُولُ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیہِ وَسَلَّمَ اِنَّ اَحَبَّ اَسمَائِکُم اِلَی اللہِ عَبدُ اللہِ وَعَبدُ الرَّحمٰنِ .
ترجمہ مشکوٰۃ کے باب الاسامی میں لکھا ہے کہ مسلم نے ذکر کیا کہ نقل کیا ابن عمر نے کہ پیغمبر خدا نے
فرمایا کہ تمہارے ناموں میں اچھا نام عبد اللہ و عبد الرحمن ہے ف یعنی عبد اللہ کے معنے بندہ اللہ
کا اور عبد الرحمن کے معنے بندہ رحمن کا سو اسی میں داخل ہے عبد الخالق عبد الرب اللہ دیا اللہ داد
غرض جس نام میں اللہ کی طرف نسبت نکلے مثلاً اللہ دیے ویسے نام کا ذکر ہو کر اور کسی کا نہیں
اَخرَجَ اَبُو دَاؤُدَ وَالنَّسَائِیُّ عَن شُرَیحِ بنِ ہَانِیٍٔ عَن اَبِیہِ اَنَّہُ لَمَّا وَفَدَ اِلَی رَسُولِ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیہِ وَسَلَّمَ
مَعَ قَومِہٖ سَمِعَہُم یُکَنُّونَہُ بِاَبِی الحَکَمِ فَدَعَاہُ رَسُولُ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیہِ وَسَلَّمَ فَقَالَ اِنَّ اللہَ

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "तक्वीयतुल ईमान" के सफ़ा 42 की फ़ोटो कापी

نہ ہو چاہیے کہ تم کو سجدہ کریں سو فرمایا کہ بندگی کرو اپنے رب کی اور تعظیم کرو اپنے بھائی کی ف
یعنی انسان آپس میں سب بھائی ہیں جو بڑا بزرگ ہو وہ بڑا بھائی ہے سو اسکی بڑے بھائی کی سی
تعظیم کیجئے اور مالک سب کا اللہ ہے بندگی اسی کو چاہیے۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ اولیاء و انبیاء
امام و امام زادے پیر و شہید یعنی جتنے اللہ کے مقرب بندے ہیں وہ سب انسان ہی ہیں اور بندے عاجز
اور ہمارے بھائی مگر ان کو اللہ نے بڑائی دی وہ بڑے بھائی ہوئے ہم کو ان کی فرمانبرداری کا حکم ہے ہم
ان کے چھوٹے ہیں سو ان کی تعظیم انسانوں کی سی کرنی چاہیے نہ خدا کی سی اور یہ بھی معلوم ہوا کہ جیسے بزرگوں
کو بعضے درخت اور بعضے جانور راستے ہیں چنانچہ بعضے درگاہوں پر شیر حاضر رہتے ہیں اور بعضے جگہ ہاتھی یا بعضے
پر بھیڑیے گزرتے ہیں تو اس کی کچھ سند نہ کرنی چاہیے کہ آدمی اس کی تعظیم کرنے کو اللہ نے بتلائی ہو اور فرشتے بھی
جائز ہو مثلاً قبروں پر جو کچھ منا شرع میں نہیں بتایا سو ہرگز نہ کیجئے۔ اور کسی کی قبر پر کوئی تیر یا شمع جلاوے
ہو تو اس کی سند نہ کیجئے کہ آدمی کو جانور کی رسم نہ کرنی چاہیے اَخْرَجَ اَبُوْدَاوٗدَ عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدٍ
قَالَ اَتَيْتُ الْحِيْرَةَ فَرَاَيْتُهُمْ يَسْجُدُوْنَ لِمَرْزُبَانٍ لَهُمْ فَقُلْتُ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
اَحَقُّ اَنْ يُّسْجَدَ لَهٗ فَاَتَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ اِنِّيْ اَتَيْتُ الْحِيْرَةَ فَرَاَيْتُهُمْ
يَسْجُدُوْنَ لِمَرْزُبَانٍ لَهُمْ فَاَنْتَ اَحَقُّ اَنْ نَّسْجُدَ لَكَ فَقَالَ لِيْ اَرَاَيْتَ لَوْ مَرَرْتَ بِقَبْرِيْ
اَكُنْتَ تَسْجُدُ لَهٗ فَقُلْتُ لَا فَقَالَ لَا تَفْعَلُوْا۔ ترجمہ مشکوٰۃ کے باب عشرۃ النساء میں لکھا ہے کہ ابوداؤد
نے ذکر کیا کہ قیس بن سعد نے نقل کیا کہ گیا میں ایک شہر میں جس کا نام حیرہ ہے سو دیکھا میں نے وہاں
کے لوگوں کو کہ سجدہ کرتے تھے اپنے راجہ کو سو کہا میں نے البتہ پیغمبر خدا زیادہ لائق ہیں کہ سجدہ کیجئے
ان کو پھر آیا میں پیغمبر خدا کے پاس پھر کہا میں نے گیا تھا میں حیرہ میں سو دیکھا میں نے وہاں لوگوں
کو کہ سجدہ کرتے ہیں اپنے راجہ کو سو آپ بہت لائق ہیں کہ سجدہ کریں ہم تم کو تو فرمایا مجھ کو بھلا خیال
تو کرو جو تو گذرے میری قبر پر کیا سجدہ کرے تو اس کو کہا میں نے نہیں فرمایا کہ مت کرو ف یعنی
میں بھی ایک دن مر کر مٹی میں ملنے والا ہوں تو کب سجدے کے لائق ہوں سجدہ تو اسی
پاک ذات کو ہے کہ نہ مرے کبھی اس حدیث سے معلوم ہوا کہ سجدہ نہ کسی زندہ کو کیجئے نہ
کسی مردہ کو نہ کسی قبر کو کیجئے نہ کسی تھان کو کیونکہ جو زندہ ہے ایک دن مرنے والا ہے اور جو مر گیا سو
کبھی زندہ تھا اور بشریت کی قید میں گرفتار پھر مر کر خدا نہیں بن گیا ہے بندہ ہی بندہ ہے اَخْرَجَ
مُسْلِمٌ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَقُوْلَنَّ اَحَدُكُمْ
عَبْدِيْ وَاَمَتِيْ كُلُّكُمْ عَبِيْدُ اللّٰهِ وَكُلُّ نِسَائِكُمْ اِمَاءُ اللّٰهِ وَلٰكِنْ لِّيَقُلْ غُلَامِيْ
وَجَارِيَتِيْ وَفَتَايَ وَفَتَاتِيْ ترجمہ
مشکوٰۃ کے باب ... میں لکھا ہے کہ مسلم نے ذکر کیا کہ ابوہریرہ نے نقل کیا کہ پیغمبر خدا نے فرمایا کہ کوئی

मौ. रशीद अहमद गंगोही की किताब "फ़तावा रशीदया" के सफ़ा 148 की फ़ोटो कापी

[illegible]

سوال: [illegible] درست ہے یا نہیں۔

جواب: یہ سب امور بدعت اور نادرست ہیں البتہ صرف تعزیت کے لئے جانا درست ہے مگر ان مجلس میں شریک نہ ہونا ہو فقط

سوال: صلوٰۃ غوثیہ جو اکثر عوام پڑھتے ہیں جائز ہے یا نہیں اور صلوٰۃ معکوس وصلوٰۃ جہلی بھی جائز ہے یا نہیں۔ (از مولانا عبد الرحیم صاحب)

جواب: صلوٰۃ غوثیہ کی حقیقت ہم کو معلوم نہیں اور صلوٰۃ معکوس کی حقیقت مجاز نہیں ہے [illegible] اور صلوٰۃ جہلی کا ثبوت صحاح حدیث سے نہیں فقط رشید احمد عفی عنہ

سوال: محفل میلاد شریف میں روایات صحیحہ کی پڑھیں اور لاف وگزاف اور روایات موضوعہ اور کاذبہ نہ پڑھیں تو شریک ہونا کیسا ہے۔

جواب: ناجائز ہے بسبب اور وجوہ کے فقط

سوال: میت کو ثواب پہنچانا بغیر تعیین تاریخ کے [illegible] نہ ہو درست ہے یا نہیں۔

جواب: ثواب میت کو پہنچانا بلا قید تاریخ وغیرہ اگر ہو تو عین ثواب ہے اور جب تخصیص و التزامات مروجہ ہوں تو نادرست اور باعث مواخذہ ہو جاتا ہے فقط

سوال: مرنے کے بعد چالیس روز تک روٹی دینا درست ہے یا نہیں۔

جواب: چالیس روز تک روٹی کی رسم کر لینا بدعت ہے [illegible] ہے پابندی رسم ورنہ ایصال ثواب مستحسن ہے فقط

[illegible]

मौ. रशीद अहमद गंगोही की किताब "फतावा रशीदया" के सफा 147 की फोटो कापी

ہوگی یا نہیں۔

جواب۔ ماتم شرعاً حرام ہے کسی کی خاطرداری سے گناہ حرام جائز نہیں فسق اور حرام ہے بجز صبر جائز مصیبت میں کسی کی رضا درست نہیں۔ فقط

رشید احمد

بعد دفن میت پر فاتحہ کا حکم

سوال۔ بعض لوگوں میں دستور ہے کہ جس وقت میت کو دفن کر کے آتے ہیں تو گھر والے اس وقت فاتحہ پڑھتے ہیں یہ فعل فاتحہ پڑھنا درست ہے یا نہیں۔

جواب۔ اس فاتحہ کا ثبوت کچھ نہیں فقط کتبہ الاحقر رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

مجلس میلاد مروجہ کا حکم

سوال۔ زید نے بکر سے دریافت کیا کہ مجلس میلاد مروجہ حال جائز ہے یا نہیں اور اس میں شریک ہونا کیسا ہے بکر خود بھی مجلس میلاد کرتا تھا اور آئندہ سال کو ارادہ بکر کا بھی ترک مجلس کا تھا بخیال اسکے کہ فروغ ہوتا تھا اور اپنے اعتقاد میں ناجائز جانتا تھا مگر منع کرنا مجلس کا ہو سکتا تھا اس وجہ سے کوئی بھی طعنہ نہ دیویگا جگہ میں اس مجلس کو ذکر دلگا یا نہ شہرہ کا ہو جاویگا اور دو زیڈ کم ہوتا مجلس کا اس وجہ سے ترک کیا کہ لوگ معترض ہونگے اور ان خیالات سے منع ہوا بعدہ بہ نیت خالصاً للہ مانع ہوا انہیں اسباب سے بکر کو ترک بدعت و حق دخل و انکار بدعت سے ثواب ہوگا یا نہیں اور باعث ریا تو نہیں ہے۔

جواب۔ بہر حال گناہ سے محفوظ رہا جب سے قصد ترک کیا بہتر ہوا اگر بعزم ترک گناہ کا ہوا فقط واللہ تعالی اعلم بندہ رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

رشید احمد

کسی عرس پر شرکت جائز نہیں

سوال۔ جس عرس میں صرف قرآن شریف پڑھا جاوے اور تقسیم شیرینی ہو شریک ہونا جائز ہے یا نہیں۔ (از رسالہ [illegible])

جواب۔ کسی عرس اور مولود میں شریک ہونا درست نہیں اور کوئی سا عرس اور مولود درست نہیں ہے۔

محرم میں تعزیہ وغیرہ بدعت ہے

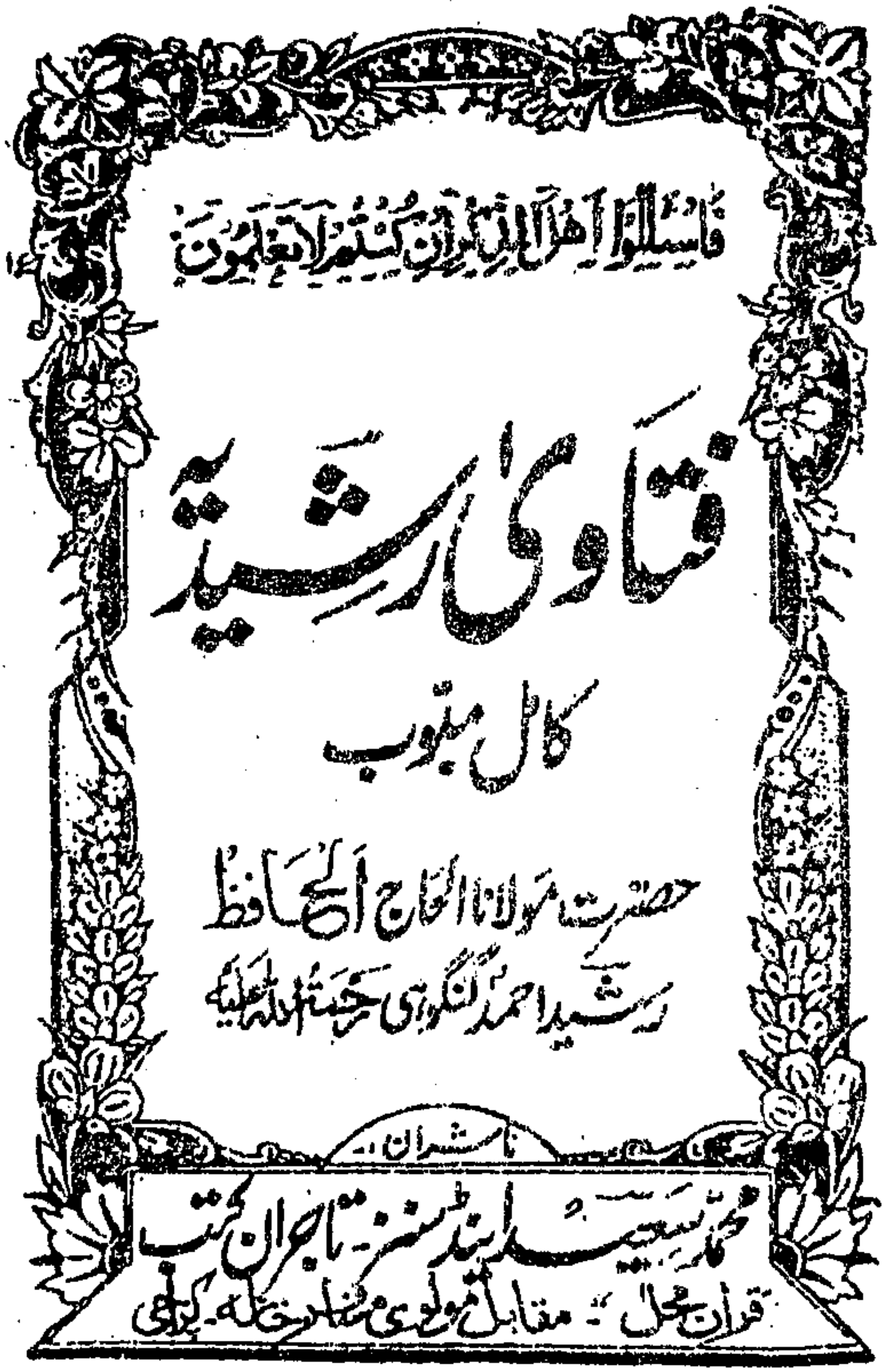
سوال۔ محرم میں عشرہ وغیرہ کے روز شہادت کا بیان کرنا مع اشعار روایت صحیح و ضعیف بھی اور سبیل لگانا اور چندہ دینا اور شربت دودھ بچوں کو پلانا درست ہے یا نہیں۔

جواب۔ محرم میں ذکر شہادت حسنین علیہما السلام کرنا اگرچہ بروایات صحیح ہو یا سبیل لگانا شربت

[illegible]

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

मौ. रशीद अहमद गंगोही की किताब "फतावा रशीदया" के कवर की फ़ोटो कापी



मौ. रशीद अहमद गंगोही की किताब "फ़तावा रशीदया" के सफ़ा 488 की फ़ोटो कापी

فتاویٰ رشیدیہ کامل ۴۸۸

جواب - [illegible]
کرے اور [illegible] لکھنا مکروہ ہے فقط۔

سوال - [illegible]

جواب - [illegible] لیکن کسی کو سوال نہ دے فقط واللہ تعالیٰ اعلم رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

حقہ تمباکو کا مسئلہ | سوال - حقہ پینا یا تمباکو کھانا یا سونگھنا کیسا ہے حرام ہے یا مکروہ تحریمہ یا مکروہ تنزیہہ اور تمباکو فروش اور نیچے بند کے گھر کا کھانا کیسا ہے۔

(مرسلہ میاں جی عبد الرحمن صاحب سیوہارہ ضلع بجنور)

جواب - حقہ پینا تمباکو کھانا مکروہ تنزیہی ہے اگر بو آوے ورنہ کچھ حرج نہیں اور حقہ تمباکو فروش کا مال حلال ہے ضیافت بھی اس کے گھر کھانا درست ہے فقط رشید احمد

ہندو کے تہوار ان کے ہدیہ کا حکم | سوال - ہندو تہوار ہولی یا دیوالی میں اپنے استاذ یا حاکم یا نوکر کو کھیلیں یا پوری یا اور کچھ کھانا بطور تحفہ بھیجتے ہیں ان چیزوں کا لینا اور کھانا استاد و حاکم و نوکر مسلمان کو درست ہے یا نہیں

(مرسلہ میاں جی عبد الرحمن صاحب سیوہارہ ضلع بجنور)

جواب - درست ہے فقط۔ رشید احمد عفی عنہ

گیروا رنگ کا مسئلہ | سوال - کپڑے گیروے میں رنگنا جیسے جوگی لوگ رنگتے ہیں کیسا ہے۔

(مرسلہ میاں جی عبد الرحمن صاحب سیوہارہ ضلع بجنور)

جواب - گیروے میں کپڑے رنگنا درست ہے بشرطیکہ بیاض نہ ہو فقط واللہ تعالیٰ اعلم رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

الجواب صحیح - محمد عبد اللطیف عفی عنہ

ہندوؤں کے تہوار پر [illegible] | سوال - ہندوؤں کے لڑکوں کو ان کے تہوار ہولی یا دیوالی میں [illegible] ان کے تہوار کی تعریف میں کچھ اشعار بنا کر جس طور کہ میاں جی لوگ پڑھایا کرتے ہیں پڑھانا درست ہے یا نہیں

(مرسلہ میاں جی عبد الرحمن صاحب سیوہارہ ضلع بجنور)

جواب - یہ درست نہیں فقط رشید احمد عفی عنہ

[illegible] | سوال - مسلمانوں کے میلوں میں جیسے پیران کلیر وغیرہ میں [illegible]

[illegible] عبد الرحمن صاحب

मौ. रशीद अहमद गंगोही की किताब "फतावा रशीदिया" के सफा 498 की फोटो कापी

فتاوی رشیدیہ کامل ۴۹۸

تبدیل کر کے دوکان ... کہ اس سے قرض لیکر وہ مال ملا لیا گیا ہو اور پھر وہ شخص اپنے سب اہل سے وہ قرض ادا کرے تو ضرور زاد ہی کہ دم شدی وغیرہ کا مال لیکر اپنے قرض داروں کو دیتا ہے اس شخص کو روپیہ ... اور پھر وہ مال اس سے لینا جائز ہے یا نہیں۔

(مرسلہ مولوی ... صاحب ... مدرسہ ...)

جواب۔ اگر کوئی شخص قرض لیکر کسی کا روزگار میں لگا دے یا کسی کو صدقہ وہ روپیہ دے تو وہ کام میں ہو جاوے اور اس روپیہ لینے کو یہ صدقہ اور ویسے بھی لینا درست ہے گو جب وہ صاحب مدیون اپنا قرض حرام مال سے ادا کریگا تو سخت گنہگار رہیگا اور اصل مالک کا دیندار رہیگا ایسے ہی یہ حرام مال کا قرض میں لینے والا بھی اگر مسلمان ہے تو سخت گنہگار رہیگا فقط واللہ تعالیٰ اعلم بندہ رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

دوالی کی تقسیم | سوال۔ دوالی کی کھیل و مٹھائی وغیرہ کھانا درست ہے یا نہیں۔

جواب۔ جس کی نجاست یا حرمت تحقیق ہو یا غالب گمان ہو وہ نہ کھاوے اور جس کا حال معلوم نہ ہو اس کا کھانا لینا درست ہے فقط۔

رافضی کے یہاں کھانا | سوال۔ رافضی کا جو دعوت ولیمہ اور جنازہ میں نماز کی شرکت جائز ہے یا نہیں۔

جواب۔ رافضی کا جو دعوت کھانا اگرچہ درست ہے مگر حضور نماز جنازہ وان سے محبت نادرست ہے اسلئے دعوت وغیرہ بھی نہ کھانی چاہئے کہ اس سے محبت بڑھتی ہے فقط واللہ تعالیٰ اعلم بندہ رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

ہندوؤں کی سبیل سے پانی پینا درست ہے | سوال۔ ہندو جو پیاؤ پانی کی لگاتے ہیں سودی روپیہ صرف کر کے مسلمانوں کو اس کا پانی پینا درست ہے یا نہیں۔

جواب۔ اس پیاؤ سے پانی پینا مضائقہ نہیں ہے فقط۔

استقاط حمل کا حکم | سوال۔ ایک بے بیاہی عورت کو حمل رہ گیا اب وہ بوجہ بے عزتی کے خفیہ کرنا اور ضائع کرنا چاہتی ہے ایسی صورت میں علاج استقاط کرنا اور کرانا گناہ ہوگا یا نہیں۔

جواب۔ اگر اس میں جان پڑ گئی ہے تو پھر استقاط میں سعی کرنا بیشک سخت گناہ اور بحکم قتل ہے ہرگز ایسی دوا دینی درست نہیں ہے فقط۔

قبلہ کی طرف لکھنے کا حکم | سوال۔ خط میں القاب قبلہ و کعبہ لکھنا درست ہے یا نہیں
جواب۔ قبلہ و کعبہ کسی کو لکھنا درست نہیں ہے فقط۔

لہ قلمی مولوی ... صاحب ... فتاوی رشیدیہ ...

मौ. अशरफ़ अली थानवी के मलफूज़ात "अल इमदाद" के कवर की फ़ोटो कापी



मौ. अशरफ अली थानवी के मलफूज़ात "अल इमदाद" के सफ़ा 34 की फोटो कापी

ماہ ذی الحجہ جس حالت میں ہوتا ہے ... احقر نے یہ خیال کیا کہ جیسے یہ حضرت صاحب کی ... حل کی ... حضرت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی نصرت فرماتے تھے ... بیعت ... شریعت ... یہ اور ادوں کی حقیقت ... اس لئے ... حضور کے ... حضور ... بیان ... ایک ...

حسب طول ...

سوال: اب دوبارہ کچھ عرض کرتا ہوں کہ بندہ کو پہلے یہ خیال تھا کہ پہلے کیوں میرا دل حضور کی طرف کیوں رجوع کیا جب کہ شوق صرف مطالعہ کتب تصوف سے اور حضور کی جانب رجوع کا کیا کہ بہت سے صاحبان مولانا مولوی محمد قاسم صاحب مرحوم و مولانا مولوی رشید احمد صاحب مرحوم و مولانا مولوی عبد العزیز صاحب مرحوم لودیانہ والے سے حضور کے اخلاقات سے پہلے ان سے بیعت ... کی بابت ... اور ان کے ... کے اعتقادات کو جناب ہی کی ... بیعت ... کی ... پہلے حضور کی ... سے ... بالکل ایک ... مولوی صاحبان لودیانوی اور حضور کے درمیان کسی امر میں اختلاف بھی ہو ... جناب کی طرف رجوع کرتا ہوں (۲) اور حضور کی تصنیف چند کتابیں زیر مطالعہ ... بہشتی زیور ... مثنوی مولانا رومی رحمۃ اللہ علیہ کے علاوہ ... تصنیف نظر سے گذریں (۳) ایک دفعہ رامپور ریاست میں جانے کا اتفاق ہوا وہاں ایک مسجد میں ایک مولوی صاحب طالب علم تھے ان کے پاس ٹھہرنے کا اتفاق ہو گیا اور یہ بھی معلوم ہوا کہ وہ مولوی صاحب حضور سے بیعت بھی ہیں اس لئے ان سے اور بھی محبت ہو گئی اثنائے گفتگو میں معلوم ہوا کہ ان کے پاس تھانہ بھون سے دو رسالے الامداد اور حسن العزیز بھی ماہواری آتے ہیں بندہ نے ان کے دیکھنے کے واسطے درخواست کی تو ان مولوی صاحب طالب علم نے چند رسالے مجھکو دیکھنے کے واسطے دئے اور شرم للغیب ان سے اٹھایا یہاں سے باہر ہے ایک رات کا ذکر ہے کہ حسن العزیز دیکھ رہا تھا اور دوپہر کا وقت تھا کہ نیند نے غلبہ کیا اور سو جانے کا ارادہ کیا رسالہ حسن العزیز کو ایک طرف رکھ دیا لیکن جب بندہ نے دوسری طرف کروٹ بدلی تو دل میں خیال آیا کہ کتب پر کو پشت ہو گئی اس لئے رسالہ حسن العزیز کو اٹھا کر اپنے سر کی جانب کو رکھ لیا

मौ. अशरफ़ अली थानवी के मलफ़ूज़ात "अल इमदाद" के सफ़ा 35 की फ़ोटो कापी

اور سوگیا کچھ عرصہ کے بعد خواب دیکھتا ہوں کہ کلمہ شریف لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ پڑھتا ہوں لیکن محمد رسول اللہ کی جگہ حضور کا نام لیتا ہوں اتنے میں دل کے اندر خیال پیدا ہوا کہ تجھ سے غلطی ہوئی کلمہ شریف کے پڑھنے میں اس کو صحیح پڑھنا چاہئے اس خیال سے دوبارہ کلمہ شریف پڑھتا ہوں دل پر یہ ہے کہ صحیح پڑھا جاوے لیکن زبان سے بے ساختہ بجائے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے نام کے اشرف علی نکل جاتا ہے حالانکہ مجھ کو اس بات کا علم ہے کہ اس طرح درست نہیں لیکن بے اختیار زبان سے یہی کلمہ نکلتا ہے دو تین بار جب یہی صورت ہوئی تو حضور کو اپنے سامنے دیکھتا ہوں اور بھی چند شخص حضور کے پاس تھے لیکن اتنے میں میری یہ حالت ہو گئی کہ میں کھڑا کھڑا بوجہ اس کے کہ رقت طاری ہو گئی زمین پر گر گیا اور نہایت زور کے ساتھ ایک چیخ ماری اور مجھ کو معلوم ہوتا تھا کہ میرے اندر کوئی طاقت باقی نہیں رہی اتنے میں بندہ خواب سے بیدار ہو گیا لیکن بدن میں بدستور بے حسی تھی اور وہ اثر ناطاقتی بدستور تھا لیکن حالت خواب اور بیداری میں حضور کا ہی خیال تھا لیکن حالت بیداری میں کلمہ شریف کی غلطی پر جب خیال آیا تو اس بات کا ارادہ ہوا کہ اس خیال کو دل سے دور کیا جاوے اس واسطے کہ پھر کوئی ایسی غلطی نہ ہو جاوے باین خیال بندہ بیٹھ گیا اور پھر دوسری کروٹ لیٹ کر کلمہ شریف کی غلطی کے تدارک میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پر درود شریف پڑھتا ہوں لیکن پھر بھی یہ کہتا ہوں اللہم صل علی سیدنا ونبینا ومولانا اشرف علی حالانکہ اب بیدار ہوں خواب نہیں لیکن بے اختیار ہوں مجبور ہوں زبان اپنے قابو میں نہیں اس روز ایسا ہی کچھ خیال رہا تو دوسرے روز بیداری میں رقت رہی خوب رویا اور بھی بہت سے وجوہات ہیں جو حضور کے ساتھ باعث محبت ہیں کہاں تک عرض کروں

جواب اس واقعہ میں تسلی تھی کہ جس کی طرف تم رجوع کرتے ہو وہ بعونہ تعالیٰ متبع سنت ہے

۲۲ شوال ۱۳۳۵ھ

سوال جناب مخدوم و مطاع [illegible] دام فیضہم السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ۔ مکرمت نامہ صادر ہو کر باعث افتخار ہوا اینجانب حضرت [illegible] دام ظلہ العالی کا [illegible] مولوی صاحب مرحوم کا [illegible] جناب کے [illegible] دینی خدمت [illegible] بہت سے رسائل [illegible] استفیض فرمایا [illegible] ہے

नाते पाक

अर्शे हक़ है मस्नदे रिफ़अत रसूलुल्लाह की
देखनी है हश्र में इज़्ज़त रसूलुल्लाह की
क़ब्र में लराएंगे ता हश्र चश्मे नूर के
जलवा फ़रमा होगी जब तलअत रसूलुल्लाह की
काफ़िरों पर तेग़े वाला से गिरी बर्के ग़ज़ब
अब्र आ सा छा गई हैबत रसूलुल्लाह की
ला व रब्बुल अर्श जिसको जो मिला उनसे मिला
बटती है कौनैन में नेअमत रसूलुल्लाह की
वह जहन्नम में गया उनसे जो मुस्तग़नी हुआ
है ख़लीलुल्लाह को हाजत रसूलुल्लाह की
सूरज उल्टे पांव पलटे चाँद इशारे से हो चाक
अंधे नजदी देख ले क़ुदरत रसूलुल्लाह की
तुझसे और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की
ज़िक्र रोके फ़ज़्ल काटे नक़्स का जोयाँ रहे
फिर कहे मरदक कि हूँ उम्मत रसूलुल्लाह की
नजदी उसने तुझको मोहलत दी कि उस आलम में है
काफ़िर ओ मरतद पे भी रहमत रसूलुल्लाह की
हम भिकारी वह करीम उनका ख़ुदा उनसे फ़ज़ूँ
और न कहना नहीं आदत रसूलुल्लाह की
ख़ाक हो कर इश्क़ में आराम से सोना मिला
जान की अकसीर है उलफ़त रसूलुल्लाह की
टूट पायेंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैद -ओ- बन्द
हश्र को खुल जाएगी ताक़त रसूलुल्लाह की
या रब एक साअत में धुल जायेंगे सियाहकारों के जुर्म
जोश पे आ जाए अब रहमत रसूलुल्लाह की
ऐ 'रज़ा' ख़ुद साहिबे क़ुरआं है मद्दाहे हुज़ूर
तुझसे कब मुमकिन है फिर मिदहत रसूलुल्लाह की



नमाज़
सच्ची नमाज़
बहारे शरीअत
परेशान मुसलमान
इरशादाते आला हज़रत
इस्लामी अख़लाक़-ओ-आदाब
बच्चों के हुकूक़
दावते फ़िक्र
सवानेहे आला हज़रत
जीलानी बुक डिपो